॥ श्रीः ॥

सिंहासनबत्तीसी.

बत्तीस पुतलियों द्वारा महाराजा विक्रमका
यश राजा भोजप्रति सुमधुर
वार्तिकमें वर्णित है.

वही
अत्यंत शुद्धतापूर्वक

हरिप्रसाद भगीरथजी

इन्होंने
बंबईमें
'जगदीश्वर' छापाखानेमें छपवाया.

आवृत्ति ४ थी.

संवत् १९६५, शके १८३०.

अथ सिंहासनबत्तीसीकी अनुक्रमणिका ।

इत्यनुक्रमणिका संपूर्णा ।



॥ श्रीः ॥

अथ

सिंहासनबत्तीसी.

एक राजा भोज उज्जैन नगरीका राजा महाबली और बड़ा धनी यशस्वी और धर्मात्मा था. जितने लोग उसके राज्यमें बस्ते थे सो सब चैन करतेथे. राजा राज प्रजा सुखी. किसीको कोई किसीतरहका दुःख नहीं दे सक्ता था. यह न्याय उसके यहां था, जो बाघ, बकरी, एक घाटपर पानी पीते थे और सब उसके आसरेसे जीते. परमेश्वरने जबसे उसे दुनियाँके परदेपर उतारा तबसे बेसहारोंका किया सहारा. और रूप उसका देखकर चौदशकी रातके चांदको चकाचौंधी पड़ी. वह अतिबड़ा चतुर सुघर और गुणी था. अति अच्छी अच्छी जितनी बातें थीं सो सब उसमें समाई थीं. भलाई उसकी जगत्में मशहूर थी. और नगरी उसकी इस तरह बसती थी कि, जो चिप्पा रखनेको जगह नहीं मिलती थी. वह हरा भरा नगर, शादियाँ घर घर, नये तौरके अच्छे अच्छे मकान बनेहुये, चौपड़का बाजार दरमियान, नहर बहतीहुई, उत्तम दूकानोंमें एक एक दूकानदार सराफ, बजाज, सौदागर,

कारीगर, सुनार, लोहार, सावकार, कसेरा, पटुआ, किनारी, बाफ, कौफुतरार, जिलाकार, आईनासाज अपने अपने काममें सरगर्म थे. जौहरीबाजारमें जवाहिरोंसे थैलियां भरी हुई मोती, मूँगा, जमरूद, लाल, याकूत, नीलम, पुखराज, जौंहरी देखते भालतेथे और खरीददारोंसे बाजारका बाजार भराहुआ और उसके बराबर दूकानोंमें मेवाफरोश बिलायती अनार, सेव, बिही, नाशपाती, अँगूरसे पिटारे पिटारियां भरकर लगाए हुए और ढेर, छुहारे, पिस्ते, बादामोंके किये हुए बेच रहे. फूलवाले फूल गूँथ रहे. तँबोली बीड़े बाँधरहे. गंधियोंकी दूकानें तेल, फुलेल, इत्र, अरगजेकी लपटोंसे महक रहीं. और सुपारीवाले दूकानोंमें पूड़ें सुपारीके बांधकर लगाए हुए डब्बे माजूमोंके आगे धरे सुपारियां कतर रहे. बिसांती हर रंगकी चीजें दूकानोंमें चुने हुये मोल ग्राहकोंसे कर रहे. चौक चौकोर बनाहुआ मीना बाजार लगा हुआ. तीसरे पहरको गुदरी लगी हुई असबाब तहर तरहका नया पुराना बेंचनेवाले बेंचरहे और मोल लेनेवाले मोल ले रहे. गर्म बाजारी हरएक चीजकी होरही. कटीर हर तरफ बाजरहे. कहीं नाच कहीं राग कहीं गम्मत कहीं नवल कहीं किस्सा होरहा. मअशूक बाजारमें सैर करते हुए आशिक पीछे पीछे फिरते हुए दिन रात यह सामान वहां रहताथा. बाग बगीचे सैर और

तमाशेके बने हुए, दरख्त मेओंसे झूमते हुए. और फूल क्यारियोंमें खिले हुए. तालावोंमें कमल फूले हुए. बावलियोंमें पानी झलकता हुआ, हर एक कुएँपर रेहट परोहा चलता हुआ, पनघट लगा हुआ और राजाके चौरासी खास महल ऊँचे ऊँचे दरवाजे खुशकितअ चार दीवारियां सीधी खींची हुईं, चारोंतरफ उनके बाहर अंदर मकान अनूठे अनूठे बने हुए. कोठरियां दालान दर दालान बारहदरियां बालाखाने चौमहिले पंचमहिले रंगमहल ऐशमहल अटारियां बँगले तयार चिलमने परदे हर एक दरवाजेपर लगे हुए, फर्श चांदनी सोजनी कालीनोंका जावजा बिछा हुआ, मसनद तकिये लगे हुए, शहनशीनोंमें दंगल और कुर्सियां सोने रूदेकी जड़ाऊ बिछी हुईं. ताखोंपर शिसे बेदमुश्क गुलाबके चुनेहुए सायबान ताशबादलेके खिंचे हुए, नमगीरे बाजी जगह अपने अपने नौकेपर खड़े हुए, सहनमें क्यारियां बनीहुईं, चौपड़की नहरें पानीसे भरीहुईं लहरें लेरहीं, हौज बेदमुश्क गुलाबसे भरे हुए, फुहारे छूटते हुए चादरोंसे पानी बहता हुआ, आबजोंए चारोंतरफ जारी सुर्ख खडे हुए और छोटे छोटे दरख्त लगे हुए, राबिश पट्टियां सब दुरुस्त फूल हजारों रंगके क्यारियोंमें फूले हुए हर एक महलमें एक एक २ ऐश और कामरानी राजाका दिल हाथोमें लिये रहतीथीं. नाच, राग, रंग, रातदिन होताथा और वह

आप ऐसा सुघर था जो बात बातमें मोती पिरोजा और नौ क़िस्मके साहिब कमाल जैसे नौरत्न उसकी मजलिसमें हाजिर रहतेथे. राजा इंद्र उसकी सभाको देखकर रश्ककी आगसे जलताथा. और उसका अखाडा हसरतके मारे हाथ मलताथा. रंडी मर्द उसकी सूरतपर दिवानेथे, जिसने एकबार उसे देखा वो आपेमें न रहा, जिसने उसकी खूबसूरतीका बयान सुना बे चैन हुआ. जोबनके मदमें सरशार मोहनका अवतार नौजवान चातुर साहिबी तदबीर था. उसकी शैर और तमाशेको शहरके किनारे बागखानोंमें कोसों तक क्यारियां बनाईथीं और हर रंगके फूलोंकी बहारें दिखाईथीं और इनके बराबर एक खेतमें किसी मुराईने खीरे बोएथे जब वे उगे बेलें तमाम खेतमें फैलगई और खूब हरियाली हुई, जर्द जर्द फूला और तैयारीपर आया तब उस खेतवालेने रखवालीको एक मकान तजबीज किया. देखा दरमियान उस खेतके एक चौका जमीनका खाली रहगयाहै कि, न कुछ उसमें जामा है. न उपजा है. मुराईने रखवाली करनेको इर्द गिर्द इस्तादे लगाकर ऊपर एक मंचानसा बांधा उसपर चढकर चारोंतरफ निगाह करतेही कहने लगा कि कोई है? इसी वख्त राजा भोजको गढसे पकड लावे और सजाको पहुँचावे. राजाके नौकरोंमेंसे एकने इस बातको सुनतेही टांग पकडकर उसे नीचे गिरादिया और मुँहही मुँह थपेटोंसे मार मार सारा मुँह सुझादिया, कान

पकड़कर उठाया और बिठाया, गरूरका नशा जितना उसे चढ़ाथा सो सब उतर गया. तब तोबा करके पांओं पड़ा और कहने लगा क्या मैंने ऐसी तकसीरकी जो मुझपर यह मार पीट हुई ? इधर उधरकी राह बाटके लोग जो वहां इकठे हुएथे उन्होंने कहा तूने ऐसी बात मुँहसे निकाली और राजा सुनेगा तो अभी तुझे तोपके मुँहपर रखकर उड़ा देवेगा. यह सुनतेही वह गिड़-गिड़ाने लगा. रहे सहे उसके होश और हवास औरभी जातेरहे. जानके डरसे घबरा, दम उसका होठोंपर आरहा. मिन्नत और जारीसे बारे छूटगये. राजाके उस फिदबीनें वहांसे घरकी राहली. पर वह जब उस मंचानपर चढ़ता तो ऐसा बकबाद किये बिना न उतरता. एक दिन चार हरकारे राजाने एक कामको किसी-तरफ भेजेथे, वे रातको उधरसे फिरते हुए चले आतेथे और वह मंचानपर चढ़ा हुआ बक रहाथा, कि बुलाओ हमारे दीवान और अहलकारोंको कि इस जगह खासे महल और एक गढ़ बनावें. सब सरंजाम लड़ाईका उसमें जमा करें कि, मैं राजा भोजसे लडूं और मारूं. जो मेरी सात पुश्तिका राज यह राज करता है. यह सुनतेही उन चारों हरकारोंको अचंभा हुआ, और एकको उनमेंसे गुस्सा आया. एकने गजबसे कहा इसे तंबीह करके मुश्कें बांध राजाहीके पास लेचलो. वे इसके हक़में जो चाहें सो करें. तीसरेंने कहा. इसने शराब पी है, मतवाला है, जो

मुँहमें आताहै सो बकताहै. चौथेने कहा फिर समझा जायगा. अब जानेदो. आपको देर होगी. आपसमें यह बात कहकर राजाके पास गये. और पहले मुजरा किया. और जहां भेजाथा वहांका अहवाल अर्ज किया. राजाने सुनकर पूंछा कि, हमारे राज्यमें सब लोग खुश रहतेहैं ? और अपने अपने घरमें बैठकर हमारे हक़में क्या क्या कहतेहैं ? तब उन्होंने हर एकका अह-वाल कहकर वह क़िस्सा राहका जो सुनाथा वह सब बयान किया. और कहा कि, अजब असर उस मंचानका है कि, जब वह उस मंचानपर चढ़कर बैठताहै तब एक रऊनत उसपर चढ़जातीहै और जब वह वहांसे नीचे उतरताहै तब नशा उतर जाताहै. फिर अपनी हालत असलीमें आताहै. तब राजाने कहा तुम मुझे वहां ले चलो. और उसे दिखाओ, कि वह जगह कौनसी है ? ऐसा कह राजा खुशी खुशीसे उठ हरकारोंको साथ लेकर उस मुकामपर गया. वहां छिपकर चुपके कहीं बैठ रहा. इतनेमें क्या सुनताहै कि, वह मंचानपर पांव रखतेही कहने लगा कि लोग जल्दी जावें और राजा भोजको गढ़से पकड़-लावें. उसे जल्दी मार मेरा राज ले लें. इसमें यश और धर्म दोनों उन्हें होंगे. सुनतेही राजाको कोप हुआ और हरकारोंको साथ लेकर घरको फिर आया. रातको फ़िक्रके मारे नींद न आई. सात पांच करके ज्योंत्यों वह रात गँवाई, सबेरा होते ही

स्नान करके दरबार किया. पंडितोंको और नजूमियोंको बुलाया और रातका सब अफसान जबानपर लाया. नजूमियोंने घडी साध और वह दिन बिचारके कहा राजा ! हमारे विचारमें कुछ वहां लक्ष्मीका लक्षण नजर आताहै. और पंडितोंने कहा इस मकानमें बहुत दौलत है. सुनतेही राजानें तमाम शहरोंके बेलदारोंको हुक्म किया कि, लाख बेलदार वहां जावो और उस मकानकी तमाम जमीन खोदो. वे बमूजिब हुक्मके रवाने हुए, साथ उनके सब अपने मुसाहिबोंको भेजा ओर आपभी सवार होकर वहां आया. बेलदारोंने जब चारों ओरसे खोदा और वहाँकी मिट्टी दूर की तो एक पाया नजर आया. तब राजाने फरमाया अब खबरदारीसे खोदो. टूट न जाय. जब खोदते २ चारों पाए सिंहासनके नजर आए तब राजाने कहा अब इसे बाहर निकालो. लाख मजूदर उठातेथे. और जोर करतेथे. पर जराभी वह जगहसे नहीं हिलताथा. तब उनमेंसे एक पंडितने अर्ज की कि, महाराज ! यह सिंहासन देवताओंका या दानवोंका बनाया हुआ है. इस जगहसे नहीं हिलेगा और न उठेगा. बलि लेगा. इसको बलि दीजिये. तब राजाने करोड भैंसे और बकरे वहीं बलि दीये. चारों तरफ बाजे बजनें लगे. और जयजयकार होने लगा. तब बलि लेकर हाथ लगातेही वह सिंहासन ऊपरको उठ आया. झाड बुहारकर एक जमीन पाकिजःपर रखदिया.

तब राजा सिंहासन देखकर बहुत खुश हुआ. और जब उसकी मट्टी छुडाकर गर्द वा गुब्बाकर दूरकर धोया और पोंछा तब ऐसा चमकने लगा कि आंख किसीकी उसपर न ठहरतीथी. जिसने उस जडाऊ सिंहासनको देखा उसे खुदाकी कुदरतका तमाशा नजर आया. कारीगरोंने ऐसा बनायाथा कि, किसीने न देखा न सुना. आठ आठ पुतलियां चारों तर्फ बनी हुईथीं. और एक एक फूल कमलका हर एकके हाथमें दियाथा. अगर सुरभामिनी उसे देखें तो भौचक होजावें. राजानें तमाम कारीगरोंको बुलाकर फरमाया कि, जितने रुपये खर्चहों सो खजानेसे लेलो. और जहांजहांका जवाहिर जाता रहा है, वहां नया जडकर जल्दी तय्यार करो. यह कहकर राजा महलमें दाखिल हुआ. सिंहासन बनने लगा. पांच महीनेमें सब तय्यार हुआ और पुतलियां ऐसी बनकर खडी हुईं गोया अभी बोलती हैं और चलतीहैं. गरज शिरसे पांव तक खूबियोंमें भरी हुईं आँखे हिरन कीसी, कमर चित्तेकीसी पांवका यह अंदाज जैसी हंसकी चाल जिन्होंने, सूरत उनकी देखी अपनी आँखोंकी पुतलियोंमें जगह दी, उसे देखकर पंडित राजासे सिंहासनकी हक़ीक़त कहने लगे–हे राजा ! सुनो मरना जीना ये इख्तियार सब भगवान्‌के हैं. पर मनुष्यको चाहिये कि जीते जी सब जीनेका सुख करले. यह बात राजा सुनकर बहुत खुश हुआ और कहने लगा कि, शायद पुत-

लियां भगवान्ने अपने हाथसे बनाई हैं ? या इंद्रके यहांकी अप्सरा हैं ? यह कहकर पंडितोंको हुक्म किया कि, नीकी सायत अच्छी लगन बिचारो जो मैं उस सायत सिंहासनपर जाकर बैठूं. यह बात सुनतेही पंडितोंने बिचार करके कार्तिक महीनेमें एक दिन शुभ लगन ठहराई. सब भांति वह भली थी. कहा कि उस सायत तुम उस सिंहासनपर बैठो तब राजाने बैठनेकी बिरियां जितने राजा उसके राज्यमें थे और पंडित, करावती दूर और नजदीक थे उन्हें न्योता भेजकर बुलाया और आप स्नान करके अच्छे कपडे पहने. पंडित वेद पढने लगे और गंधर्व गीत गाने लगे, भाट यश बयान करने लगे और तरह तरहके बाजे बजने लगे. हर एक महलमें शादियां नाच, राग रंग, मचे. जितने लोग आये उन सबकी जियाफत की, ब्राह्मणोंको वृत्ति गांव दिये. भूखोंको खाना और मुँहमांगे रुपये बखशे. नंगोंको कपडा और माल असबाब इनायत किया. रैयतको बखसीस और इनाम दिया. तमाम शहरमें खैर खैरात बांटदी. फौजको खिलत और इजाफे कर दिये, हमनसीनोंपर तरह तरहकी मिहरबा-नियां नवाजिशें फरमाईं, गरज जितनेलोग उस सभामें इकठे हुएथे सो सब जयजयकार करतेथे और रामका नाम लेतेथे. बीचमें सिंहासन धरा था. राजा खुशी २ श्रीगणेशको मनाता हुआ सिंहासनके पास जाकर खडाहुआ और दाहिना पाँव बढाकर

उसने चाहा कि उसपर रक्खें, इतनेमें वे पुतलियां खिलाखिलाकर हँसी और सबने यह देखा. राजा अपने मनमें जरा रुककर निहायत शरमिंदा हो कुछ दहशत खाई. कुछ उसे अचंभा हुआ कि ये बेजान पुतलियां जानदार क्योंकर हुईं? गश खाकर गजबमें आकर पांव उधरसे खैंचलिया. और पुतलियोंसे कहने लगा कि, तुमने क्या देखा? और क्यों हँसी? ये सब बात मुझसे बयान करो? क्या मैं बली राजाका बेटा यशस्वी नहीं? या क्षत्रियोंमें कायर हूं? या नामर्द हूं? या बेरहम हूं? या और राजा मेरे हुक्ममें नहीं? या मै पंडित नहीं? या मेरे यहां पद्मिनी नारी नहीं? या मैं राजनीति नहीं जानता? या मैं किसीकी मजलिसमें नीचे होकर बैठा? फिर किस बातमें मैं नालायक हूं? मेरे दिलमें शक पडा है सो मुझे तुम बताओ? ये बातें राजाके मुखसे सुनकर उनमेंसे रत्नमंजरी नामक.

पहली पुतली

बोली:-हे राजा! दिल लगाकर मेरी बात सुनो और यह किस्सा मैं तुमसे बयान करती हूं. तुम गुणग्राहक और कदरदान हो. जो तुमने बातें कही सो सब दुरुस्तहैं. सूर्यसेभी तुम्हारे तेजके आगकी ज्वाला अधिक है. पर इतना गर्व मत करो. पुरानी कथा सुनो इस संसारका अंत नहीं, भगवान्‌ने इसमें

किस्म किस्म और रंग रंगके जवाहिर पैदा किये हैं. एक एक कदमपर दौलतका गंज है. और एक एक कोसपर आबहयातका चश्म है, पर तुम कमबख्तहो इससे नहीं पहँचाना. अपने दिलमें क्या समझेहो? तुम जैसे इस दुनियांमें करोडों पडें हैं. तुमने इतनेहीमें मगरूर होकर अपने ताईं भुला दिया. और यह जिसका सिंहासन है उस राजाके यहां तुमसा एक एक अंदना नौकर था. यह सुनकर राजाको गुस्सा आया. और कहने लगा कि, इस सिंहासनको अभी मैं तोडे डालताहूं, इतनेमें वररुचि पुरोहित बोला राजा! यह इनसाफसे दूर है. इसवास्ते पुतलीकी बात कान देकर सुन लो. और जो कुछ करनाहो सो फिर करलो. राजाने कहा तू इसका अहवाल कह? तब पुतली बोली-मैं क्या कहूं? राजा! इतनाही सुन तुम जलकर खाक होगये. और जब तमाम हक़ीक़त उस राजाकी सनोगे तब औरभी शरमिंदा होगे. और अपने दिनोंको रोओ-गे. लोगोंके आगेभी हलके होओगे. इसके कहवानेसे न कहवा-ना भला है. हमतो उसी रोज मरचुकी थीं और सिंहासन फुट चुका था. जिस रोजसे राजा विक्रमादित्यसे बिछुडीं. अब हमें क्यां डर है? इतनेमें दीवान राजाका पुतलीसे कहने लगा--किसलिये तू अपने राजाको बयान नहीं करती? गुस्सा छोडदे. और अ-ब बात कर. क्यों वह भेद छिपा रखती है? तब पुतली बोली कि ऐ शकबंधी राजा बडा बली था. और नगर अंबावतीमें रा-

ज करताथा. बडा उसका दबदबा था, देवताओंका पूजनेवाला और तमाम दुनियाका दान देनेवाला आगे मैं उसकी कथा तेरेवास्ते कहतीहूं, राजा ! कान देके सुनो. श्यामस्वयंवर उस नगरीका राजा था जातका ब्राह्मण पर बडा राजा हुआ. तब गंधर्वसेन उसका नाम हर तरफ़ बजने लगा और उसके घरमें चार वर्णकी रानियां थीं--ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या, शूद्रा, उसमें जो ब्राह्मणी थी सो बहुत अच्छी सूरत और नाज़ुक थी. उसके एक बेटा हुआ सो बडा पंडित हुआ. ब्राह्मणीत उसका नाम रक्खा. ऐसा ऐ राजा ! कोई दुनियामें पंडित न था. जितने इल्म थे सो सब उसने पढेथे. यहां तक कि मौतकाभी अहवाल कहदेता. और क्षत्रियासे तीन बेटे हुए. उन्होंने क्षत्रियोंका धर्म अख्तियार किया. एकका नाम शंख, दूसरेका नाम विक्रम, तीसरेका नाम भर्तृहरि, एकसे एक बली सब जगमें उनका नाम मशहूर था और उन्हे कल्पवृक्ष दुनियाके लोग कहतेथे और वेश्यासे बेटा जो हुआ उसका नाम चंद्र रक्खा, वह बडा सुखी और रहमदिल था. शूद्रासे जो बेटा हुआ उसका नाम धन्वंतरि रक्खा था. वैद्योंमें वह बडा वैद्य था. छह बेटे राजाके हुए. एकसे एक अच्छे गरज अमरसिंहके घरानेमें सबके सब खूब हुए. और वह जो ब्राह्मणीसे हुआथा वही राजाकी दीवानी करताथा. उससे जब कोई तकसीर हुई तब राजाने

खिदमत लेली. वह लड़का वहांसे निकलकर धारापुरमें आया. अयराजा ! वहां सब तुम्हारे बुजुर्ग थे. उसे उन सबोंने माना. बड़ी आव भगत की. वहांका राजा तुम्हारा बाप था. कितनी मुद्दतके बाद उसने दगा करके उस राजाको मारडाला और आप वहांका राज लेकर उज्जैन नगरीमें आया और यहां आकर मरगया. शंख जो बड़ा बेटा क्षत्रियके पेटका था सो वहां आकर वहांका राजा हुआ. राज करने लगा. और आगे यह अहवाल है कि, एकरोज पंडितोंने आकर राजा शंखसे कहा कि, तेरा दुश्मन दुनियामें पैदाहुआ यह बात पंडितोंके मुँहसे सुनकर वह भौचक रहगया, ब्राह्मण कहने लगे--हम सबने शास्त्र देखा है. उससे यही अहवाल निकलता है कि जो हमने तुमसे कहा. मगर एक बात और है कि हम उसे मुँहसे निकाल नहीं सक्ते. तब राजाने कहा, खैर! जो तुमने यह बात कही तो वहभी कहो ? तब उन्होंने कहा हमारे विचारमें यह आता है कि, शंखको मार राजा विक्रम यह राज करे. यह बात सुनकर राजा हँसा और कहने लगा, ये पंडित बावले हैं. इन्हें कुछ ज्ञान नहीं. इसलिये ऐसी बात कहते हैं. यह बात अनसुनी कर राजा चुप रहा. पण्डित अपने दिलमें शरमिंदा हुए कि, हमारे शास्त्रको इसने झूंठ जाना और हमको दिवाना ठहराया. जब कितने एक दिन इस बातपर गुजरे तब पण्डित अपने मका-

नोंमें बैठकर नज़ूम देखने लगे. उनमेंसे एक पंडित बोला—मेरे विचारमें यह आता है कि, राजा विक्रम कहीं नजदीक आन पहुँचा है. तब दूसरा उनमेंसे बोला यहांके किसी जंगलमें है और एक उनमेंसे कहने लगा उस जंगलमें एक तालाबभी है. वहीं अखाड़ा करके रहा है, तब एक ब्राह्मण उनमेंसे उठ खडा हुआ और जंगलको चला वहां जाकर क्या देखता है कि, एक तालाब-पर राजा विक्रम तपस्या करता है. मट्टीका एक महादेव बनाकर उसकी पूजा करताहै. और दंडवत् कर रहा है यह देखकर पंडित उलटा आया और सब पंडितोंको साथ लेकर राजाके पास गया और राजासे कहने लगा कि, तुम हमारे शास्त्रको झूंठ मानतेथे और अब हम देखके आये हैं फलाने जंगलमें राजा विक्रमादित्य आन पहुँचा. राजा शंख उसरोज सुनकर चुपरहा सुबहको उठा और उस बनमें जातेही छिपकर देखने लगा कि, वह क्या करताहै? जहां राजा वीर विक्रमादित्य बैठा था वहांसे वह उठा और तालाबमें न्हाकर फिर अपने आसनपर आकर बैठा और उसी तरहसे महादेवकी पूजा करने लगा. और यह राजाभी निकलकर वहां जाकर खडा हुआ. जब वह विक्रम महादेवकी पूजा कर चुका तब उसी महादेवकी पिण्डीपर उसने पेशाब किया. जितने लोग राजाके साथ आयेथे. वे सब कहने लगे कि, इसकी बुद्धि मारी गई है. कि पूजे हुये देवपर इसने

मूता. तब एक पंडित उनमेंसे बोला कि, उठो महाराज! यह तुमने क्या किया? तब वह बोला, कि हम जातके ब्राह्मण हैं देवताको पूजें या मिट्टीको? तब ब्राह्मणोंने कहा राजा, कुछ हम अच्छा नहीं देखते क्योंकि तुम्हारी मत कुमत होगई. जब मरनेका दिन आदमीका नजदीक आताहै तो उसकी मति मारी जातीहै. तब राजा बोला, तुम दिवाने होगये हो और मुझेभी बावला बनाते हो, जो भगवान्‌ने लिखा है वही होवेगा उसको कोईभी मिटा नहीं सक्ता. तब पंडित आपसमें कहने लगे इस राजानें क्या अपना अकाज कियाहै? तब राजा शंखनें विक्रमको मारनेकी यह फिकिर की कि सात लकीर कोयलेसे जादूकी काढी और उनपर भुस फैला दिया जो उसे मालूम न हो. और उन लकीरोंका यह गुण था कि, जो उनके ऊपर पांव धरे सो बावला होजाय. और एक खीरा मँगाकर जादू किया और एक छूरी पढकर हाथमें रक्खा. उस छूरी खीरेका यह असर था कि जो उस छूरीसे खीरा काटे उसका शिर कट जाय. पंडितोंने कहा आप उसे बुलाओ. उन लकीरोंपर पांव धरके जो आवेगा तो वह दिवाना हो जावेगा. बावला होकर यह खीरा जो अपने हाथसे लेकर काटेगा तो शिर उसका कट जायगा. जितने क्षत्रिय राजाके साथ आयेथे वे सब अपने दिलमें फिक्रमंद हुए कि इस राजानें दगा किया है यह क्षत्रियोंका धर्म नहीं.

राजानें विक्रमादित्यको बुलाके कहा हम तुम बैठकर एकजगे खीरा खावें. वह राजा योगी था. और इस इल्मको जानता-था. उन लकीरोंसे बचकर सिंहासनके पास जाकर खडा रहा. खीरा और छूरी उसके हाथमेंसे लेली. दाहिने हाथमें छूरी रक्खी और बांये हाथमें खीरा लिया. राजा शंख गाफिल था. फुरती करके उसे छूरी मारी और राजाका काम तमाम किया. यह बात रत्नमं-जरीनें जाहिर की और कहा कि हेराजा ! तू इस बातको सुन, खुदा जो रहम करे तो तिनकेसे पहाड़ करे और गजब करे तो पहाड़से ति-नका. किताबमें जो लिखा है वह कभी झूंठ नहीं होता. जब माके पेटमें इन्सान आताहै चार बातें साथ लाता है. नफा और नुकसान, दु.ख और सुख तीनलोक और चौदह भुवन फिरे लेकिन किस्मतका लिखा नहीं मिटता. भाईको मारा, दिलमें खुश हुआ उसके लोहूका माथेपर टीका लगा लिया. उठकर सिंहासनपर बैठा और चँवर डुलवाया उस राजाकी रानी उसके साथ सतीहुई. तब यह राजनीतिसे न्याय करने लगा. और जितने राजा उसके राजमेंथे सब सुनकर खुश हुए. मुजरेको आये और दोनों वख्त दरबारमें हाजिर रहने लगे. इसी तरहसे राजा राज करने लगा. कितने एक दिनोंके बाद एक दिन राजा शिकारको चला. तब कुत्ते, बाज, बहरी और जितने शिकारी जानवर थे सो सब साथ लिये. और जितने अच्छे

अच्छे गुलचले और तीरंदाज थे साथ लिये. जाकर एक जंगलमें पहुँचे. वहां हिरनके पीछे राजाने अपना घोड़ा डाला. तब राजा आगे बढ़गया. और उसके साथ कोईभी न पहुँचा. एक बड़े जंगलमें राजा जानिकला और वहां जाकर सोच करने लगा कि, मैं कहां आया ? राहभी भूला और साथभी गवाँया. इतनेमें जो निगाह की तो एक बड़ा दरख्त देखा. और उस दरख्तकी फुनगीपर चढ़गया. वहांसे देखने लगा, जंगलही जंगल नजर आताथा. मगर एक तरफ जो देखा तो एक शहर नजर आया. उसको देखकर राजाको एक ढाढससी बँधी. वह नगर जो देखा तो निहायत आबाद है. कबूतर वहां उड रहे हैं. चील्हें मड़रा रही हैं. सूर्यकी झलकसे हवेलियोंके कलश चमक रहे हैं. यह देख अपने जीमें कहने लगा कि, यह नया शहर मैंने देखा. कल इसे छीनलूंगा. और इस नगरके राजाका दीवान जिसका नाम लूतबरन था वह कौवेके भेससे रहताथा. उस तरफसे खड़ा हुआ आताथा. उसने यह राजाके मुँहसे बात सुनी और बहुत दिलमें खफा हुवा. गुस्सेसे उसके मुँहमें बीट करदी. राजा गजबमें आया. इतनेमें लोग कुछ उसके वहां आँन पहुँचे, उनके साथ होकर अपने शहरमें दाखिल होगया. और दीवानको हुक्म किया कि जहानमें जहांतक कौवे हैं. वे सब पकड़ लावो. यह सुनतेही चारों तरफ बहेलिये

दौड़े और कौवे पकड़ पकड़ लाये. और पींजरेमें बंद किये. राजाने जाकर उन कौवोंसे कहा अरे चांडालो ! वह कौनसा कौवा था कि जिसने हमारे मुँहपर बीट की ? तुम सच कहोगे तो हम सबको छोड़देंगे. नहीं कहोगे तो सबको मार डालेंगे. यह राजाकी बात सुनके सब कौवे बोले महाराज ! हममें कोई कौवा नहीं रहा जो पकड़ा नहीं आया. और वह काम हमसे नहीं हुआ. तब राजा जियादः खफा हुआ. और बोला कि तुम सबके सिवाय वह कौन कौवा है ? कि जिसने यह काम किया. तब उन्होंने कहा—महाराज ! सच पूंछते हो तो हम कहते हैं. बाहुबल एक राजा है. उदय अस्तमें उसका राज है. और उसका दीवान लूतबरन बड़ा दानी बहुत होशियार पंडित है. वह कौवेके भेसमें रहता है. यह काम उसका हो तो हो; क्योंकि कौवेकी सूरत एक वह बच रहा है. तब राजाने कहा वह किस तरहसे हमारे पास आवै ? उसका बयान कुछ समझ कर मुझे इलाज बताओ ? कोई तुम्हारे यहांसे वकील जाय और उसको ले आवे. तुम अपने यहांसे दो कौवोंको भेजदो और वे जाकर उसको यहां ले आवें. तब उन्हींमेंसे दो कौवे वहीं गये. उनकी लूतबरननें बहुतसी आव भगत की और पूंछा कि, तुम यहां किसलिये आयेहो ? तब वे बोले महाराज ! तुम्हारे बगर हम सब कौवे मारे जातेहैं. इसवास्ते जो तुम राजा

विक्रमादित्यके पास चलो तो हम सबोंका जान बचे. तब लूतबरन बोला—धन्य भाग जो तुम मेरे पास अपना मतलब समझकर आयेहो. जो कुछ काम मुझसे होगा उसके लिये मैं कभी ना न करूंगा. यह कहकर अपने राजाके पास आया और राजासे हुक्म लेकर उनके साथ गया. जब सब कौवोंने उस दीवानको देखा तब वे राजासे कहने लगे कि महाराज ! आप जिसका नाम लेतेथे वह यही आया है. राजाने देखकर उसे आदर करके आधी गद्दीपर बिठाया और क्षेम कुशल पूंछी. वो आसीस देकर बोला राजा ! किसलिये तुमने मुझे याद किया ? और किसवास्ते इन सबको बंद किया ? जब लूतबरनने यह बात पूंछी तब राजा विक्रम कहने लगा—मैं एकदिन शिकारको गयाथा. इत्तिफाकन जंगलमें राह भूलगया तब एक बरगदपर चढकर चारों तरफ देखने लगा. कि एक कौवेने मुझपर बीट करदी. इसलिये मैंने सब कौवोंको बंद किया. जब तक इनमेंसे कोई सच न कहेगा तब तक एक कौवा इनमेंसे न छोडूंगा. बल्कि जानसे इन सबको मारूंगा. फिर लूतबरन बोला महाराज ! यह काम सब मेरा है. जब तुम्हें मैंने मगरूर देखा तब मेरे मनमें गुस्सा आया और अकल मेरी उसवख्त जाती रही. यह सुनकर राजा हँसा. और बिगडकर कहने लगा. मुझे मगरूर क्यों न हो? राजा मैं हूं, दाता मैं हूं, सिपाही

मै हूं. और कौनसी बात मुझमें नहीं है ? सो तुम कहो ? तब वह बोला, वह जो नगर तुमने नजर भरके देखा है उसका मैं सब बयान करताहूं. राजा बाहुबल नाम वहांका कदीम राजा है. और गंधर्वसेन बाप तुम्हारा उसका दीवान था. राजाको उसकी तरफसे कुछ बेइतबारी हुई तब उसे छुडादिया. वह नगर अंबावतीमें आया और उस जगहका राजा हुआ. उसका बेटा तू विक्रम है. तुझे जगमें कौन नहीं जानता. पर जबतक राजा बाहुबल तुझे राजतिलक न देगा तबतक तेरा राज अचल न होगा. और वह जो यह तेरी खबर पावेगा सब वही तेरेपर चढकर दौडेगा और तुझे आकर एक घडीमें खाखके बराबर करदेगा. इस वास्ते तुझे जो मैं सलाह् दूंगा उसे मान और किसी तरहसे उस राजाके पास जाकर राजाको मोहब्बत दिलाकर तिलक उससे ले. जिससे यहांका अचल राज तू करे. राजा विक्रम बड़ा अकलमंद था, इसवास्ते इस बातपर कायम रहा. ऐसी बातें लूतबरनसे सुनकर कुछ दिलमें न लाया और हँसकर कानदे सब सुनी. फिर लूतबरननें कहा जो तुम्हें चलना हो तो हमारे साथ चलो और पंडितोंसे अच्छी साअत दिखाकर चलनेकी तैय्यारी करो. दूसरे दिन सुबहके वख्त राजा लूतबरन मंत्रीके साथ होकर चला. और राजा बाहुबलके नगरमें जाकर पहुँचा. तब उस दीवानने राजा विक्रमसे

कहा यहां तुम बैठो और मैं अपने राजाको तुम्हारे आनेकी खबरदूं. यह बात राजासे कहकर लूतबरन अपने राजाके मंदिरमें गया उसको सलाम किया. और सब समाचार और अपनी हकीकतसमेत राजाका अहवाल कहने लगा–महाराज ! गंधर्व-सेनका बेटा विक्रम आपके दर्शनके लिये आया है. यह बात बाहुबल राजाने सुनकर उसको तुरंत अंदर बुलाया. तब लूतब-रन राजा विक्रमको लेगया. और अपने राजासे मिलाया. राजा उससे उठकर मिला और आदर करके आधे आसनपर बिठाया और क्षेम कुशल पूंछी. बाद उसके रहनेके लिये मकान बताया. राजा उठकर उस मकानमें आया. वहां रहने लगा. जब दस पांचदिन बीतगये तब दीवानसे राजा विक्रमने कहा हमें तुम बिदा करवादो, तो हम अपने स्थानको जावें. तब मंत्री कहने लगा–हमारे राजाका यह स्वभाव है कि, जो उनसे मिलनेको आताहै उसे अपना रुखसत नहीं करते, तुम रुखसत मांगो. और जिस बातकी ख्वाहिश हो सो कहो. अपने जीमें कुछ शर्म न करो. तब राजा बोला मुझे कुछ नहीं चाहिये. जो कोई जो बर चाहे सो मुझसे ले. तब दीवान बोला–राजा ! यह हमारी बात सुनो. इस राजाके घरमें एक सिंहासन है सो वह सिंहासन पहले महादेवजीने राजा इंद्रको दियाथा और इंद्र राजाने इसको दिया. उस सिंहासनमें ऐसा गुण है कि, जो उसपर बैठे

सो सात द्वीप और नौ खंड पृथ्वीका अजीत होकर राज करे. और बहुतसा जवाहिर उसमें जडा है. और उस सिंहासनमें बत्तीस पुतलियांभी बनी हैं. अमृत देकर उनको सांचेमें ढाला है. तुम रुखसत होते हुए वह सिंहासन राजाजीसे माँगो कि उसपर बैठकर आनंदसे राज करोगे. यह रातको दीवानने सलाह दी. और सुबहको राजाके दरबारमें दीवानने जाकर खबर दी कि महाराज! विक्रम रुखसत होताहै और आपके पास आनेको बाहर खडा है. यह सुनकर राजा फिर फौरन दरवाजेपर आया. और विक्रमने देखकर अपना माथा नवाया. राजाने विक्रमसे कहा जो तुम्हारे जीमें आवे सो मांगो. मैं खुश होकर तुमको वही दूंगा. तब विक्रम बोला–महाराज ! जो आपने मुझपर दया की है, तो वह सिंहासन मुझे बकसो; जो इंद्रने आपको दिया है. यह बात सुनकर राजा बोला अच्छा. सिंहासन तो हमने तुम्हें दिया; पर यह काम मंत्रीका है. इसे तुम नहीं जानतेथे. यह कहकर सिंहासन मँगाया. और पान तिलक देकर उस सिंहासनपर बिठाया. और कहा कि तुम अजीत हुए. अब किसी बातकी चिंता मनमें न करना. गंधर्वसेन मेरा बडा दोस्त था और तू उसके खान-दानमें बडा नामवर हुवा. इस तरहसे राजा विक्रमको आसीस देकर रुखसत किया. राजा वहांसे अपने घरमें आया.

और अपने जीमें बहुतसा खुश हुआ. और जितने उस राजाके दुश्मन थे उनके जीमें रंज हुआ. राजाके देशके लोगोंने बहुत खुशी की और सब द्वीपद्वीपके राजा खिदमतके वास्ते आये. और जो राजा गरूर करताथा उसका वहां जाकर राज छीन लेलिया. और अपना राज करता. गरज उदयसे अस्ततक खूब उसने अपना राज किया. सब रैय्यत आनंदसे उस राजमें बसती थी. और जो क्षत्रिय थे सो सब उसको डरतेथे और जो कोई देश विदेश जाताथा सो वहां विक्रमका धर्म सुनता था. और सब मुल्क आबाद देखता था. कहीं दुःखी उसे नजर न आता था. डांड और बांध उसके राजभरमें किसीने कानसे न सुना. बल्कि घर घर आवाज वेद और पुराणकी आती थी. और जितने लोग थे वे सब स्नान ध्यान करके तीनों वख्त अपने भगवान्की यादमें रहतेथे. अपने घरमें सब राजा कीसी सभा करके खुश रहतेथे राजा राज प्रजा सुखी. इसमें एकदिन राजा मिक्रमादित्यने सभा की और सब पंडितोंको बुलाया. और पंडितोंसे राजाने पूंछा कि मेरे जीमें है, कि अब मैं संवत् बांधूं. सो तुमसे पूंछताहूं कि, मैं इसबातके लायक हूं कि नहीं हूं ? सो तुम शास्त्र देखकर मुझसे विचारके कहो ? सब पंडितोंने विचार करके राजासे कहा महाराज ! अब जो तुम्हारा प्रताप है सो तीनो भुवनोंमें छाय रहाहै. इस वास्ते जो

कुछ तुम्हें करनाहै सो कीजिये. दुश्मन तुम्हारा कोई नहीं. राजाने यह सुनकर पंडितोंसे कहा कि, अब तुम बताओ कि किस बुद्धिसे संवत् बांधूं ? जो कुछ शास्त्रकी रीतिसे मुनासिबहो तिस तरहसे हमें कहो ? तब पंडितोंने कहा पहले तो तुम अजीतमाल पहनो. फिर उसके बाद देश देशके ब्राह्मण और जमीनदार, राजा और अपने सब कुटुंबके लोग बुलावो. सवालाख कन्यादान सवालाख ब्राह्मणोंको करो. और जितने ब्राह्मण तुम्हारे मुल्कके हैं उनकी वृत्ति करदो. एक बरसका खजाना जमीदारोंको माफ करो. और जो भूंखा, कंगाल इस बरसमें आवे उसको वृत्तिका हुक्म करो. इसी तौरसे राजाने सब काम किया. और सिवा इसके, जो जो दान पुण्य किया उनका बयान किससे हो? एक बरस तक राजा अपने घरमें बैठे पुराण सुनता रहा और इस तरहसे संवत् बांधा, कि तमाम दुनियाके लोग धन्य धन्य करतेथे. यह सब अहवाल राजाको रत्नमंजरीने सुनाया और राजा विक्रमादित्यका यश गाया. और कहा—राजा भोज ! जो तुम इतने हो तो इस सिंहासनपर बैठो.सुनके राजाने कहा सच है जो कुछ तूने कहा यह बात मुझेभी पसंद आई, इतना कहकर राजा अपनी सभामें जाकर बैठा. और दीवान मुत्सद्दियोंको बुलाया कि तुम सब तैयारी संवत् बांधने की करो, इस दिनकी हव

सांझत यों टलगई, दूसरे दिन फिर राजाने सिंहासन पर बैठनेकी तय्यारी फरमाई और दीवानको बुलाकर कहा कि, तुम सब तुरंतही इसकी तैयारी करो. देर नहीं लगाना. यह बात सुनकर बररुचि पुरोहित बोला, राजा! अभी क्यों घबराते हो? इस सिंहासनकी एक एक पुतली तुमसे बात करेगी. उन सबकी बातें सुनकर पीछे जो कुछ आपको करना होगा सो कीजिये. यह पुरोहितका बचन सुनकर राजाने उस सिंहासनके पास जाकर उसपर पांव बढ़ाकर रक्खा कि, चित्ररेखा नामक.

दूसरी पुतली २.

बोली राजा! तेरेयोग्य यह आसन नहीं, और ऐसी अनीति कोई करता नहीं जो तू करनेपर तैय्यार हुआ है. इस सिंहासनपर बैठे वह जो विक्रमादित्यसा राजा हो. तब राजा बोला विक्रममें क्या क्या गुण थे? सो मुझसे कहो? तब वह बोली, एक दिन राजा विक्रम कैलासको गया, और वहां एक यतीसे मुलाकात हुई तब उसने राजाको योगकी रीत सब बताई राजाने अपने मनमें इरादः किया कि, अब योग कमावें ऐसा बिचारकर योग करनेको तैयार हुआ और राजतिलक भर्तृह-रिको दिया. और राज पाटपर उसे बिठा आप राजकाज सब धन दौलत छोड़ कंथा पहन भस्म लगा संन्यासी बनकर जंग-

लको निकल गया और उत्तरखंडमें जाकर योग साधने लगा. उस शहरके जंगलमें एक ब्राह्मण तपस्या करताथा. धुवां पीके रहता था. और भूंख प्यासके दुःख सहताथा. ब्राह्मणकी तपस्या देखके देवता खुश हुए. और उसको बर देने लगे. और उसने न लिया तब आकाशवाणी हुई कि, हम अमृत भेजतेहैं सो तू ले. एक देवता आदमीकी सूरतमें आकर उसे फलदे यह कहगया कि जो इसको तू खावेगा, तो चिरंजीव होवेगा. फल लेकर वह तुरंत चला. खुशी खुशीसे अपने घरको आया. और ब्राह्मणीके हाथमें वह फल दिया. और कहा कि, आज देवताओंने अमृतफल देकर कहा जो इसे खावेगा सो अमर हो जावेगा. यह बात सुनकर ब्राह्मणी व्याकुल हो रोने लगी. फिर बोली यह अब दुःख आया पाप हम किस तरहसे काटेंगे? और हमेशह भिख क्यों कर माँगें? खाल मांस सब हाडमें मिल जायगा. ऐसे जीनेसे मरजाना बेहतर है. मरजानेवालेको इतना दुःख नहीं होता. इस फलको वह खावेगा जो हमेशः उठावेगा इससे योग्य. यह है कि, तुम इस फलको ले जाकर राजाको दो. और उनसे कुछ धन लो. यह सुनकर ब्राह्मण अपने जीमें समझा, यह सच है. इस संसारमें इतना जंजाल कौन है? इसी तरह आपसमें बातें सलाहकी करके ब्राह्मण वहांसे उठ राजाके पास चलागया, जब राजाके द्वारपर पहुँचा तब द्वार-

पालसे कहा कि, राजाको खबर दो कि ब्राह्मण आपके लिये एक फल लाया है. दरवाननें राजासे जाकर अर्ज की, कि महाराज! एक ब्राह्मग फल आपके वास्ते लाया है और दरवाजेपर हाजिर है. जो कुछ हुक्म हो. राजाने उसीवख्त हुक्म किया कि उसे अभी लाओ. तब हरकारेने वहीं हाजिर किया. ब्राह्मणनें राजाको आकर असीस दी कि, धर्मलाभ हो. और यह फल राजाके हाथ दिया. राजाने उसको हाथमें लेकर पूँछा इसका सब वृत्तांत कहो? तब ब्राह्मण कहने लगा. स्वामी! मैंने जो तपस्या की थी सो देखकर देवताओंने उसका बर अमरफल मुझको दिया. अब मैं अमर होकर क्या करूंगा? इसवास्ते इस फलको तुम खाओ और अमर हो. क्योंकि तुमसे लाखों जी जीते हैं. यह सुनकर राजा हँसा. और उसे लाख रुपये दिये. और गांव वृत्ति करके बिदा कर दिया. फिर अपने जीमें विचार करने लगा कि मैं तो पुरुष हूं कमजोर न हूंगा. इसवास्ते यह फल रानीको दिया चाहिये, कारण वह मेरे प्राणका आधार है. वह जीती रहेगी तो मै सुखभोग करूंगा. यह दिलमें ठानकर राजा महलमें दाखिल हुआ. फल रानीको दिखाया. रानी हँसकर पूंछने लगी. महाराज! यह क्यौ चीज है? जिसे बड़े यत्नसे लिये हुये तुम यहां आये हो. इसका ब्योरा कहो? तब राजाने कहा सन सुंदरी! तू जो इस फलको खायगी तो

सदा यौवनवती रहेगी. दिनदिन रूप बढेगा. और अमर होगी. यह अहवाल रानीने सुनकर फल राजाके हाथसे लेलिया. और कहा महाराज! मैं इसे खाऊंगी. राजा फल देकर बाहर गया. और रानीका जो एक मित्र कोतवाल था. रानीने उसे बुलाकर इसके हाथमें वह फल दिया. और उसे कहा यह हमें राजाने देकर कहा है, जो इसे खावेगा सो अमर होगा. इसवास्ते तुम मेरे दोस्त प्यारे हो, इसे खाओ और अमर हो; तो मुझे बड़ी खुशी हो. यह सुनतेही कोतवालने खुश होकर फल हाथमें लेलिया और अपने मकानको गया. एक कसबी उसकी आश्ना थी उसे वह फल देकर कहा यह अमरफल मैं तेरे वास्ते लायाहूं. तू इसे खा. यह सुनकर उसने हाथसे लेलिया, और उसे बिदा किया. फिर अपने जीमें बिचारा कि, एक तो मैं कसबी हूं. और अमर हूंगी तो कितना पाप मैं कमाऊंगी. इससे बेहतर है कि, यह फल राजाको जाकर दीजिये. जो राजा जियेगा तो मुझे याद करेगा. और पुण्य होवेगा. पाप सभी कटेंगे. यह मनमें सोचकर राजाके दरबारमें गई और वह फल राजाके हाथमें दिया. राजा फलको देखकर बेसुध हुआ. और अपने जीमें कहने लगा कि यह फल तो मैंने रानीको दियाथा जीमें यह विचार अचंभा होरहा. और हँसकर उसे पूंछेने लगा कि यह फल तुझे किसने दियाथा. वह वे सब बातें जानतीथी. पर राजासे फकत यह

कहा कि, मुझे कोतवालने दिया है. यह सुनकर उसने समझा कि रानीने बुरा काम किया. उसे कुछ रुपये देकर बिदा किया, और आप भौचक रहगया. फिर समझकर कहने लगा मैंने तो मन अपना रानीको दिया. और उसने अपना दिल कोतवालको, मनका भेदी कोई न मिला ऐसे जीनेको और मेरी बुद्धिको धिक्कार है, जो मैं फिर राज करूं. फिर उस रानीके ताईं और लअनत उस कोतवालको और उस वेश्याको और कामदेवको धिक्कार है जो यह मति संसारकी करता है कि, जिससे संसार अहमक हो जाता है. बाद उस फलको लिये हुये महलमें गया और अपने चित्तमें कहने लगा--यह तन, मन, धन, जी सब चंचल है. और यह संसार जानहार है. इसमें कोई कायम न होगा जबहीं पैदा हुआ तबहीं कालने खाया. और जब मरता है तो कुछ साथ नहीं लेजाता. और मेरा मेरा करके जन्म गँवाता है. सुखके सब साथी हैं. और दुःख कोई नहीं बांटता. यह संसार जो है सो समुद्र है. और माया उसका जल है. ममता मछली है. ऐसा बधिक कोई न मिला कि जो इसको मारके खाय, यह विचार करता हुवा रानीके पास गया. और उसे पूंछा तूने वह फल क्या किया ? तब वह बोली महाराज, मैंने खाया. सुनकर राजाने वही फल रानीको दिखाया. तब वह देखकर जड हो-गई. तब राजा उस फलको लेकर बाहर आया और धोकर

खाया. तिस पिछे सोच उसको हुआ. निदान बनके जानेका सामान किया. राज, पाट, धन, दौलत और रानीकी मोहब्बत तजकर चला. न किसीसे पूंछा. न किसीको साथ लिया. ऐसा निर्मोही होकर निकला कि; किसिका ध्यान न किया. देश देश और नगर नगरमें चर्चा हुई कि राजा भर्तृहरि राज तजकर योगी हुआ. और वह बात उडती उडती राजा इंद्रके अखाडेमें पहुँची कि, राजा तो देश छोडके चला गया. और उसके देशमें बडा हुल्लड हुआ. तब यह बात सुनकर सब देवताओंने मिल-कर विचार किया कि, एक देवको रखवालीके वास्ते राजा भर्तृहरिके देशमें भेजदो. कि कोई बिदअत रैयतपर न करे. ऐसा ठहराय देवको बुलाकर वहां भेजदिया. और कहा वहांकी निगाहबानी कर. वहां तो वह रखवाली करताथा. और यहां राजा विक्रमका योग पूरा हुआ. वह अपने मनमें मनसूबा करता था कि, मैं छोटे भाईको राज देकर आयाहूं इस वास्ते अब चलकर देखूं कि वह किसतरह राज करता है. यह अपने दिलमें कहके चला. और रातको अपने नरके पास आन पहुँचा. देवने उसे आते देखा तब वह पुकारा तू कौन है ? जो इस वख्त शहरमें जाता है ? यातो अपना नाम बता नहीं तो मैं तुझे मार डालताहूं. तब उसने कहा मैं राजा विक्रम हूं. तू कौन है ? जो मुझे रोकता है ? तब देव बोला मेरे तईं देवताओंने भर्तृहरिके

राज्यकी रखवाली करनेके वास्ते भेजा है. राजाने पूँछा भर्तृहरिको क्या हुआ ? उसने जबाब दिया भर्तृहरिको कोई इहांसे छलकर लेगया. यह बात सुनकर राजा हँसा. और उसे कहा वह तो मेरा छोटा भाई है. फिर देव बोला मैं नहीं जानताहूं कि तुम कौन हो ? और जो तुम विक्रम इस देशके राजा हो तो मुझसे लड़ो और मुझे मारकर जाओ. बिना लड़े मैं तुम्हे शहरमें पैठने न दूंगा. यह सुन राजा बिगड़के बोला तू मेरे तईं क्या डराता है ? और जो लड़ा चाहे तो मैं तय्यार हूं. इस तरह दोनों बातें कर तैयारहो लड़ने लगे. और राजा उस देवको पछाड़कर छातीपर चढ़ बैठा. तब वह बोला राजा ! तू मुझसे वर माँग मैं तुझे दूंगा. यह बात उसकी सुनकर राजा हँसकर बोला. मैंने तुझे पछाड़ा है. और चाहे तो तुझे मार डालूं तू मुझे दान क्या देगा ? तब वह बोला राजा ! तू मुझे छोंड़दे मैं तेरे आगे इसका सब ब्यौरा कहताहूं. तेरे राज्यकी धूम सब देशमें है. और सब राजा तुझसे डरतेहैं. पर मैं जो बात कहूं सो तू कान देकर सुन. तेरे शहरमें एक तेली है और एक कुम्हार, सो तुझको मारनेकी फिक्रमें है. पर तुम तीनोंमेंसे जो दोनोंको मारेगा वही अचल राज करेगा. तेली तो पातालका राज करताहै और वह कुम्हार योगी बना हुआ जंगलमें तपस्या अपने जीमें लाकर करताहै. दिलमें कहताहै कि, राजाको मारके तेलीको तेलके जलते कडाहीमें

डालूं. और देवीको बलि देकर मैं निश्चिंत राज्य करूं. और तेली कहता है कि, राजा और योगीको मारके त्रिलोकीका राज्य मैं करूं और तू इस बातको न जानता था, मैंने इसवास्ते तुझे खबदरास किया. तुम इनसे बचे रहना. और आगे जो मैं कहताहूं सो तुम ध्यान लगाकर सुनो. योगीने उस तेलीको मारकर अपने बश कियाहै. सो तेली एक सिरीसके वृक्षपर रहा है. अब वह योगी तुमको न्योता देनेको आवेगा. छल करके तुझे ले जायगा. तू न्योता लेकर वहां जाइयो. जब वह कहे कि, तू दंडवत् कर तब तू कहियो मैं दंडवत करना नहीं जानता. मेरेतईं एक जहान दंडवत् करताहै. जो तुम गुरुहो और मैं चेला तो मुझे दंडवत् करना बताओ. और उसी तरहसे मै दंडवत् करूं. जब वह शिर निहुरावे तब तू खांडा मार कि, उसका शिर जुदा हो जावे. और वहां कड़ाह जो देवीके आगे तेलका खौलता होगा. उसमें उसको और वृक्षसे तेलीको उतारके दोनोंको उसी कड़ाहमें डाल देना, यह मेरी बात तू गांठ बांध. इसे हरगिज़ कभी न भूलना, यह बात कहकर वह देव चलागया. और राजा अपने महलमें आया. भोर हुए सारे नगरमें खबर हुई कि, राजा विक्रमादित्य आए. दीवान मुत्सद्दी और सब अहलकार नजर लाए. तमाम शहरमें आनंद होगया. घर घर मंगलाचार होने लगे. यहां तो खुशीके नगारे बज रहेथे. इतनेमें

एक योगी आया. और राजाको आदेश सुनाया. एक फल उसके हाथ दिया. उसने हँकर वह फल हाथमें लिया. योगीने कहा राजा ! हमारे यहां यज्ञ होता है. एक दिनका तुम्हारा न्योता है. तब राजाने कहा हम आवैंगे. तुम अपने मनमें चिंता मत करो. सांझ हुए पहुँचेंगे. योगी यह सुनतेही ठिकाना बताकर अपनी मठीको गया. जब सांझ हुई राजाभी खांड़ा फरसी ले तयार हुआ. और किसीसे न कहा. अकेला चलागया. तुर्त योगीके पास पहुँचा. और आदेश कहा. योगी बोला कि, देवीके आगे जाकर दंडवत् कर. तो देवी तुझपर दया करे. राजा बोला स्वामी ! मैं तो दंडवत् करना नहीं जानता कि, किस तरह करते हैं ? इसवास्ते आप मुझे बताओ तो मै करूं. योगी बताने लगा. ज्योंही शिर झुकाया, राजाने देवकी नसीहत याद करके एक खांड़ा ऐसा मारा कि, शिर धड़से जुदा होगया. और उसे मारके खतरान किया. और उस वृक्षसे तेलीको भी उतार दोनोंको तेलके कड़ाहेमें डालदिया. तब देवी बोली– धन्य है विक्रम तेरे साहसको. मै तुझसे प्रसन्न हूं, तू मुझसे चाहे सो वर मांग. और धन्य है तेरे माता पिताको जिनके घरमें तूने अवतार लिया. देवी जब यह कह चुकी तब वे बीर आकर हाजिर हुए और राजासे कहने लगे कि, हम आगिया और कोयला दो बीर तुम्हारी सेवाको आये हैं. जो तुम्हारी कामना हो सो हमसे कहो. हम

तुरंत पूरी करदें, सब जगहके जानेकी हम सामर्थ्य रखते हैं. जल, थल, मही, आकाशमें पवनके रूप होकर जहां कहोगे वहां हम चले जावें. जैसे हनुमान् तुर्त लंका पहुँचा वैसे हमभी जा सक्ते हैं. यह सून खुश हो राजाने कहा मुझे तो कुछ काम नहीं है. अगर मेरे ताईं बचन दो तो मैं देवीसे तुम्हें मांगलूं. लेकिन् ऐ वीरो ! जो तुमसे बचन देकर निर्वाह किया जाय तो बचन दो. तब उन बैतालोंने कहा कि, अच्छा. तब राजाने उनको बचनबद्ध कर माँगलिया. और कहा जिस जगह मैं याद करूं तुम उस जगह मेरेपास पहुँचना. तब बीर बोले कि, राजा ! जिस जगहमें हमें याद करोगे, वहां हम पवनरूप होकर पहुँचें. यह बात उनसे कहके राजा घरको गया. ये बातें चित्ररेखा पुतलीने राजासे कहीं कि, राजा ! विक्रममें ये काम थे. इतने योग्य तू नहीं है. फिर वे वीर राजाके ताबे हुए. और आगे बहुतसे काम किये. जहां विक्रमके गाढ़ पड़ा तहां वे दोनों आकर हाजिर हुए. जो कोई ऐसा काम करे तो सिद्ध हो. राजा ! तू अपने जोरपर गरूर मत कर. तुझ जैसे पृथिवीमें करोड़ों होगये हैं. इतनी बात जब पुतलीने कही तब राजाकी वहभी साअत टलगई. तब दूसरे दिन सुबहको राजाने फिर पाट बैठनेकी तैयारी की. और चाहा कि, सिंहासनपर पाँव धरें, कि **सत्यभामा**–

तीसरी पुतली–

बोली–यह काम नहीं जो इसपर बैठो. पहिले मुझसे एक नई कथा सुनलो. एक दिन राजा बीर विक्रमादित्य दरिया किनारेपर महलमें खिलबत करते बैठेथे. राग हो रहाथा. और हरएक रंगकी चुहल मच रहीथी कि, दिल फरेफ्ता होजावे. और एकसे एक सहेली खूबसूरत पास बैठी थीं. राजाका दिल वहां बेइख्तियार लग रहाथा कि, एक पंथी त्रिया संग लिये हुए और उस त्रियाकी गोदमें एक बालक. घरसे खफा होकर निकले थे. दरियाके पास आकर गुस्सेके मारे कूदपड़े, मर्दके एक हाथमें रंडी और एक हाथमें वह लड़केका हाथ यह तीनों डूबने लगे. तब पुकारकर बोले कि, ऐसा धर्मात्मा कौन है ? जो इन तीनों आदमियोंकी जान बचावे. उनमेंसे वह मर्द हाय करके पुकारा जो कोई गुस्सा मार न सके तो इसी तरह हो बेअजल मर जाता है. और गिरके बहुत पछताता है. उसकी आवाज राजा विक्रमादित्यने सुनतेही पासके लोगोंसे कहा कि, यह कौन दुःखी पुकारता है ? तब हरकारोंने खबर दी कि, महाराज ! एक मर्द और रंडी लड़केके समेत पानीमें डूबते हैं. उनमेंसे वह मर्द चिल्ला रहा है. कोई ऐसा उपकारी हो कि, हम डूबतोंको निकाले. यह हरकारा कहताही था कि, वह फिर पुकारा–हम तीन जीव डूबते हैं. कोई हमें भगवान्‌का

बंदा पार लगावे. यह सुनकर राजा वहांसे धाया और आकर उस दरियामें कूद पड़ा. जाकर एक हाथमें रंडी और दूसरे हाथमें लड़केको पकड़लिया. वह मर्दभी राजासे लिपटगया. तब राजा घबराया और आपभी डूबने लगा. इतनेमें ईश्वरको याद किया और कहा कि हे नाथ ! मैं धर्मके वास्ते आया था और इसमें मेरा जीवभी जाता है, धर्म कर्ते अधर्म होवेगा. राजा यह कहकर बहुत जोर करने लगा. और उस वख्त जोर उसका कुछ काम न आया. तब उसने आगिया और कोयला दोनों बीरोंको याद किया. याद करतेही दोनों बीर आकर हाजिर हुए और चारोंको उठा किनारेपर रख दिया. तब वह विदेशी राजाके पांवोंपर गिरपड़ा और कहा कि, महाराज ! तुमने हम तीनोंको जीवदान दिया. तुमही हमारे भगवान् हो. क्योंकि जीवदान इस वख्त तुमसे पाया. राजा हाथ पकड़कर उन तीनोंको रंगमहलमें ले आया. और बिठाकर कहा जो तुम्हें चाहिये सो माँगो. तब वह बोला महाराज ! हमको हुक्म करो तो हम घरको जावें. और जब तलक जियेंगे तबतलक आपको आशिष दिया करेंगे. ऐसाही कुछ तुमने हमें दिया है. तब राजाने अपनी तरफसे लाख रुपये देकर उनको घर भिजवा दिया. इतनी बात कहकर पुतली फिर बोली– राजा, इतने लायक जो तुमहो तो इस सिंहासनपर बैठो नहीं

तो तमाम लोग हँसेंगे. यह अहवाल सुनतेही वहभी मुहूर्त राजाका टलगया. दूसरे दिन फिर राजा दिलमें सोच करता हुआ सिंहासनपर बैठनेको आया. तब चंद्रकला नामवाली--

चौथी पुतली-

बोलीः- सुनो राजा ! तुम मन मलीन क्यों बैठे हो ? और सुनो जो मैं कथा कहूं.एकरोज एक पंडित कहींसे फिरते फिरते राजा बीर विक्रमादित्यके पास आया. और उसने आकर बयान किया कि जो कोई एक महल मेरे कहे मुआफिक बनाके धरे चैन उठावे. और बड़ा नाम पावे. तब राजाने कहा अच्छा जाहिर करो. ब्राह्मण कहने लगा--तुला लग्न जब आवे तो उसमें मंदिर उठावे. जब तलक वह लग्न रहे तब तलक काम जारी रक्खे. और जब तुला लग्न होचुके तब उसका काम मौकूफ करे. इसी तरह तुला लग्नहीमें वह सारा मकान तैयार कर लावे तो उसका अटूट भंडार होजावे. और लक्ष्मी उसके यहांसे कभी न जाय. यह सुनकर राजा मनमें खुश हुवा. और दीवानको बुलाकर मन्दिर उठानेकी इजाजत दी, कि--तुम अच्छी जगह ढूँढ़कर महल बनाओ. इतनेमें तुला लग्नभी आन पहुँचा. उस मंदिरके नीवकी देश देशमें यह हवाई हुई कि, राजा विक्रम तुला लग्न साधकर महल बनाता है. जितने कारीगर उसमें काम करतेथे वे उठकर तुला लग्न मनातेथे. जब लग्न

आती थी, खुश हो हो बनातेथे. कहीं उसमें काम सोनेका और कहीं रूपेका और कहीं लोहेका और कहीं काठका, नई नई तरहसे बनताथा. चुनांचे दरयावके किनारेपर वह हवेली बनाई. चार दरवाजे और सात खण्ड उसमें रक्खे. और जगह जगह जवाहिर अनमोलके उसमें जड़े और दरवाजेपर दो नीलमके बड़े नगीने लगाये कि, किसीकी नजर न लगे. वह जड़ाऊ महल कितनेक बरसोंमें ऐसा तैयार हुआ कि, दुनियाँके परदेपर किसीने दूसरा न आँखोंसे देखा और न कानोंसे सुना. तब दीवानने जाकर राजाको खबर दी कि, महाराज! आपके हुक्म मुआफिक मंदिर तैयार होगया है. आप चलकर उसे देखिये. जो कोई उस महलको देखताथा सो मोहित हो रहताथा. ऐसा सुन राजा वहांसे मकान देखनेको गया. एकबार राजाके साथ एक ब्राह्मणभी गया. महलको जब राजाने मुलाहजः किया, तब ब्राह्मण देखकर और हँसकर कहने लगा ऐराजा ? ऐसा घर जो मैं पाऊं तो बैठ यहां सुखसे समय बिताऊं. यह बात सुनकर राजाने कुछ मनमें सोच न किया. गंगाजल और तुलसीदल लेकर वह घर उस ब्राह्मणको संकल्प कर दिया. वह घर पाकर ब्राह्मणको ऐसा आनंद हुआ कि, जैसे चकोर रातको चन्द पाता है. तुर्त वह अपने कुटुंबको ले आया. और वहां आकर आनंदसे रहा. और रातको खुशीसे पलँगपर सोताथा कि, पहर रात गये लक्ष्मी वहां आई और कहने लगी–

बेटा ? हुक्म दे तो मैं गिरूं और घर बाहर संपूर्ण भरूं. खौ-फसे उसने कुछ जवाब न दिया. तब वह दोपहर रातको फिर गई और कहा कि, ऐ ब्राह्मण ! अज्ञानी मुझे आज्ञा दे. उन्होंने चिंता करके रात गँवाई और सुबह हुए राजा वीर विक्रमादित्यके पास आया, मन मलीन और रातके अहवालसे डरा हुवा रंग जर्द चिहरेका और डरसे कुम्हलाया हुआ इस शक्लसे देख राजा उसे हँसने लगा. फिर कहने लगा कि, कलकीसी खुशी हमने आज न देखी, ऐ ब्राह्मण ! यह अचंभेकी बात है. तब ब्राह्मण बोला कि, सुन स्वामी ! मेरे दुःखके तुम दाता हो, प्रजाके सुख देनेवाले और तुम शकबंधी नरेशहो. जैसे राजा कर्ण और इंद्र अपने समयमें दानी थे वैसेही इस समयमें तुम हो. आपने जो मंदिर मेरे तईं दिया है उसकी हक़ीक़त मैं कहताहूं. मालूम नहीं कि इस मंदिरमें भूत है ? या पिशाच ? मेरे तईं उसने सारी रात सोने नहीं दिया. आपकी कृपासे और इन लड़कोंके भाग्यसे जीता बचा. इसवास्ते अब मैं यहां आया हूं. इससे भीख मांगना मुझे बेहतर है. पर उस महलमें न रहूंगा. यह बात सुन राजाने प्रधानको बुलाया और ऐसा कहा कि, जो उस मकानमें लगा है, सो हिसाब करके इस ब्राह्मणको दो. राजाकी आज्ञा पाय दीवा-नने हिसाब कर तोड़े रुपयों के लदवाकर ब्राह्मणके साथ कर दिये और वह अपने घरको गया. एक दिन साअत देख उस

हवेलीमें राजा जाकर रहा और बैठकर कुछ बिचार करने लगा. इतनेमें हाथ बाँधकर लक्ष्मी आन खड़ी हुई और बोली कि, धन्य राजा विक्रम ! तेरे धर्मको, इतना कहकर लक्ष्मी उस वख्त तो चली गई और राजाने तो वहां आराम किया. जब पहर रात रही तब लक्ष्मी फिर आई और कहने लगी कि, राजा ! अब मैं कहा गिरूं ? राजाने कहा जो तू पड़ा चाहती हो तो पलँग छोंड़के जहां तेरी इच्छा हो तहां गिर. इतनेमें खूब तरहसे सोनेका मेह तमाम नगरमें बरसा. सुबह हुवा तब राजा उठा और देख कर कहने लगा हमारी रैयतपर बहुत सीखथी, लेकिन् अब कोई दिन निचिंतहो आरामसे रहेगी. इतनेमें दीवान आया. और खबर दी कि, महाराज ! तमाम नगरमें कंचनकी वृष्टि हो गई है. इसवास्ते अब जो हुक्म आप करोगे वैसा हम करें. तब राजाने कहा कि, तमाम नगरमें ढोल बजवादो कि, जिसकी हदमें जितनी दौलत है सो उसे ले. और कोई किसीको मना न करे. यह राजाका हुक्म पाकर सब दौलत रय्यतने अपने घरमें भरी- ये बातें कहकर चंद्रकला पुतली बोली कि, राजा भोज ! सुन राजाविक्रमके गुण. वह ऐसा राजाथा और प्रजाका हितकारी. इससे तू किस तरह उसके सिंहासनपर बैठता है ? तेरी क्या जान है? यह पुतलीकी बात सुनकर राजा भोज अज्ञान होगया. और बररुचि पुरोहितभी शरमिंदा हुआ.

वह साअत भी गुजरगई. दूसरे दिन राजा फिर सिंहासनपर बैठने चला. और मनमें चाहा कि, पांव सिंहासनपर धरें. तब लीलावती नामक–

पाँचवीं पुतली–

बोली–सुन राजा विक्रमके गुण. एक दिन दो पुरुष आपसमें झगड़ने लगे. एकने कहा कर्म बड़ा और दूसरेने कहा बल बड़ा. क़िसमतका तरफ़दार बोला नशीब बड़ा है कि अदनाको आला कर देता है. और जोरका जानिबदार कहने लगा. जोर बड़ा है. जोरावर होवे तो तमाम जहानको जेर कर दे. इस तरह दोनों झगड़ते २ राजा इंद्रके पास गये. और हाथ जोड़कर कहने लगे स्वामी! आप हमारा न्याय कर जो दोनोंमें सच हो उसे फरमाइये. और झगड़ा निबेड़िये. तब राजा इंद्र बोला--इसका न्याय हमसे न होगा. इस इन्साफको वह करेगा, जिसने योग किया होगा. इससे बेहतर यह है कि, तुम मर्त्यलोकमें राजा विक्रमादित्यके पास जाओ. इस न्यायको वह चुकावेगा. उन्होंने राजा इंद्रकी आज्ञा पाय राजा विक्रमादित्यके पास जाकर अपना अरज किया और कहा कि, हम तीनों भुवनमें फिर आये और किसीने हमारा न्याय नहीं चुकाया. इसका धर्म अधर्म विचारके आप हमारा न्याय करो. यह बात सुन राजाने कहा कि, आज तुम अपने अपने घरको जाओ. और छै

महीनेके बाद हमारे पास आओ. तब हम तुमको इसका जवाब देंगे. यह सुनकर वे दोनों अपने घर गये. राजा अपने मनमें चिंता कर बख्तर पहन काछा चढ़ा खांडा फरी ले विदेश चला. और अपनें दिलमें यह आहद किया कि, जब तलक इसका भेद न पावेंगे, तब तलक देशमें फिर न आवेंगे. तब फिरते फिरते समुद्रके किनारे जा पहुँचा. तब वहां एक नगर उसने बहुत बड़ा निपट सुहावना खूब आबाद पाया. और उसमें तरह तरहकी हवेलियां जिनमें करोड़ों रुपये लगे थे. और उनमें सिवाय जवाहिरके कुछ नजर न आताथा. वह देखकर राजा कहने लगा कि, जिसका यह नगर है, वह राजा कैसा होगा ? शहरमें फिरते फिरते शाम होगई और शहर अखीर न हुआ. इतनेमें क्या देखता है कि, एक दूकानमें महाजन शिर निहुड़ाये हुए बैठा है. तब राजा उसीके सामने जा खड़ा हुआ. तब सेठने राजासे कहा तू किस देशसे आया है ? और तेरा मन मलीन क्यों हो गया है ? किसे ढूँढ़ता है ? और क्या तेरा काम है ? यह सब अपना अर्थ मुझसे कह ? किसका बेटा है तू ? और क्या तेरा नाम है ? तब वह बोला सेठजी ! मेरा नाम विक्रम है. मैं आज तुम्हारे पास आयाहूं. मेरे दिलका मकसद यह है कि, मैं राजासे मुलाकात करूं सो आज मुलाकात न हुई कल मैं राजासे मिलूंगा और उनकी सेवा करूंगा. जो वो मुझे नौकर रक्खेंगे और

मेरा महीना कर देंगे तो मैं रहूंगा. यह बात सुनकर वह महाजन बोला, तुम क्या रोज लोगे? तब राजा कहने लगा. जोकोई लाख रुपये रोज देगा तो हम उसके यहां नौकर रहेंगे. तब वह बोला भाई! तुम क्या काम करतेहो? जो तुम्हें लाख रुपये रोजको कोई देवे वह काम मुझे बताओ? तब उसने कहा जिस राजाके पास मैं रहताहूं उसकी गाढ़ी मुश्किलमें काम आताहूं. सेठ हँसकर बोला, लाख रुपये रोज हमसे लो और कठिनतामें हमारे सहाय हो. सुबह हुए नौकर रक्खा. और दूसरे दिन लाख रुपये दिये. उसने उनमेंसे आधे रुपये भगवान्के नाम संकल्पकर ब्राह्मणोंको दिये, आधेके आधे कंगालोंको दिये. और जो बाकी रहें उनका खाना पकवाकर भूखोंको खिला दिया. रातहुए पर फिर जो एक फकीरने सवाल किया उसेभी खड्ग रेहन रखकर और भोजन पेटभर करवाया. और आप चने चबाकर गुजरानकी. कितने एक दिन उस साहूकारके पास रहकर रुपये हररोज योंहीं खर्च करते रहे. गरज क़िस्मतने तो यारी की. तब जोर बोला अब मेरी बारी है कि, एकाएक सेठके दिलको कुछ उचाटी हुई और एक जहाज तैयार कर किसी देशमें जानेका उसने इरादा किया और विक्रमसे कहा मैं किसी देश जाताहूं. वह बोला स्वामी! मैंने यह वचन दियाथा कि, गाढ़ी भीड़में तुम्हारे काम आऊंगा, अब मैं तुम्हारे

साथहूं क्योंकि तुमने मेरा प्रतिपाल किया है. तब उसेभी सेठने जहाजपर चढ़ालिया. और रवाना हुआ. कितनेक दिनोंके बाद जहाज मँझधारमें तूफानसे तवाह होने लगा. तब वहां लंगर डालकर उसी जगह चंदरोज रहा. उससे आगे टापू था. उसमें सिंहावती नाम राजकन्या रहतीथी. हजार कन्या उसके साथथीं इसमें जब वह तुफान थयगया तब सेठने कहा कि, अब लंगर उठाओ और चलो. लंगर जलके बीच कहीं अटक रहाथा. मुकसीसे उठ नसकताथा. जोर कर रहेथे. निदान निराश होकर सब परमेश्वरका स्मरण करने लगे. और कहने लगे कि इस मझधारसे पार करनेवाला तेरे सिवाय कोई नहीं. जहां जहां जिस जिसके तईं मुश्किल पड़ी है. तहां तहां सहाय हुआ. है. दीनदयालु तेरा नाम है. इस वास्ते तुझको हम शरण है और हमपर भी दयाकर. इतनेमें बनियां घबरा विक्रमसे यह कहने लगा. अब अथाहमें पड़े हुए हैं. किनारा हमें नजर नहीं आता. और एक बात तेरीही इस वख्त याद आई है. जब तू हमारे पास नौकर रहाथा तब तूने इकरार किया था कि, मुश्किल काम मै आशान करूंगा. तो इससे और क्या कठिन होगा? कालके मुँहमें अब पड़गयेहैं. यह सेठजीकी बात सुनकर विक्रम उठा और फरी खांडा हाथमें ले रस्सा फकड़ जहाजके नीचे उतर गया. जाकर बहुतसी हिकमतकी पर कोई हिकमत

न चली. और कहने लगा कि, सेठजी ! अब पालें इसकी चढ़ादो, लोगोंने पालें चढ़ाईं और उसने कूदकर लंगर काटदिया. पानीकी तेजीसे और हवाकी तुदीसे जहाज चल निकला. और कोई रस्सा उसके हाथ न लगा. उसी जगह रहगया. जो कुछ विधाताने कर्ममें लिखा है उसको कोई मिटा नहीं सकता. अलकिस्सः वह राजा वहांसे बहताहुआ चला. और जाते जाते उसे एक नगर नजर आया. वह वहां जानेलगा. उस नगरका जो दरवाजा था उसपर ज्योंही निगाहकी त्योंही देखा कि, चौखटपर लिखा हुआहै कि सिंहावतीकी राजा विक्रमादित्यसे शादी होगी. यह देख राजाको अचरज हुआ कि, यह किस पंडितने लिखा है ? जब उस दरवाजेके अंदर गया तो वहां जाकर एक महल देखा और वहां रंडियां हैं. मर्द कोई नहीं है. और एक अच्छे पलँगपर सिंहावती सोती है. और चौकीकी सहेलियां बैठी हैं. यह भी जाकर पलँगपर बैठगया. और तुर्त उसको जगा दिया. वह उठकर बैठगई तब राजाने हाथ पकड़लिया और दोनों सिंहासनपर जा बैठे. सब सखियां हाजिर हुईं और इस भेदसे वाकिफथीं कि राजा विक्रमादित्य यहां आवेगा. और इससे उसकी शादी होगी. राजाको जो देखा तो फूलोंकी माला ले आईं और गंधर्वव्याह किया. राजा जैसा दुःख पाकर पहुँचाथा वैसा हँसा. इसवख्त उसने सुखोपभोग किया. अलगरज़ वे दोनों आप-

समें रहने लगे. और नौजवानीकी ऐश करने, हर एक तरहका लुत्फ उठाने लगे और सखियांभी खिदमतमें हाजिर थीं. और मानिंद चकोरके चांदसा राजाका मुँह देखतीथीं. चंदमुद्दत राजाको इसी तरह गुजरी. अपने राजकी सुध कुछ न रही. यह बातें कह लीलावती पुतलीनें फिर कहा कि राजा भोज ! जैसा राजाने बल किया तैसाही विधाताने उसको सुख दिया. किस्मतने वह तमासा दिखाया फिर कहने लगी कि, उन सखियोंमें एक सखीसे राजा विक्रमादित्यकी बहुतसी प्रीति हुई और वह राजाकी दया विचार वहांका भेद कहनेलगी ऐ राजा ! तुम यहां आन फँसेहो जीते यहांसे कभी न निकलोगे. तुम्हारा नाम सुनकर और तुम्हारे राजका ध्यान करके मुझको रहम आताहै. क्योंकि तुम्हारे सरीखे धर्मात्मा, दयावंत, दाता, परोपकारी होकर यहां रहना इसमें तुम्हारा भला नहीं है उधर लाखों आदमी तुझबिना दुःख पाते होंगे. उस सखीकी बात सुनकर राजाको ज्ञान हुआ और अपने राजका ध्यान आया. तब सखीसे पूछ यहांसे जानेका भेद मुझे बताओ. तब वह बोली एक घोडी इस राजकन्याकी घुड़सालमें है, सो उदयसे अस्ततलक जा सकतीहै. यह बात सुनकर दूसरे दिन राजा रानीको अपने साथ लेकर टहलता हुआ अश्वशालमें जा निकला. घोड़ोंको देखकर तारीफ करने लगा. रानी बोली जो तुझे शौक होय तो

इन घोड़ोंमेंसे किसी घोडेपर चढ़ाकरो. भेद तो इसे वहांका मालूमही था. दूसरे दिन घोड़ा उसनें वहांसे मँगवाया. और उसपर सवार हो वहीं फेरने लगा, वह राजाका अहवाल देख-रानीभी खुश होती थी. और राजाभी खुश होताथा. इसी तरह कईएक दिन और २ घोड़ोंपर सवार होतारहा. एक दिन उस घोड़ीको मँगाया और रानीके हुक्मसे उस घोडीपरभी सवार होगया. रानी तो गफलतमें रही, कि इसने कोड़ा किया. घोडीमानिंद हवाके राजाको ले उड़ी और सखियाँ पछता पछता रहगईं. इतनेमें राजा अंबावती नगरीको आन पहुँचा. वहां नदीके किनारे एक सिद्ध बैठा देखा, तब राजा उतर दंडवत कर उसके पास जाकर बैठा. सिद्धका जब ध्यान खुला तब उसने इसे देखा देखकर खुश हुआ और एक फूलकी माला इसे दी और कहा कि राजा! विजय माला मैंने तुझे दी है. इसका गुण यह है कि, जहां जायगा वहां फतेह पावेगा. और यह माला पहिनेपर तू सबको देखेगा पर तुझे कोई न देखेगा. फिर एक छड़ी राजाको दी और उसका ब्यौराभी समझाकर कहा कि, इस लकड़ीका यह खवास है कि, पहले पहर रातको इसके पास सोनेका जड़ाऊ गहना जो मांगोगे तो यह देगी, और दूसरे पहर रातको एक खूबसूरत नारी ऐसी देगी कि जिसे देख राजा तुम आशिक होजाओगे और तीसरे पहर रातको जो इसे

हाथमें लोगे तो तुम सबको देखोगे और तुम्हें कोई न देखेगा. चौथे पहर रातको मानिंद कालके यह होजायगी. इसके डरसे कोई दुश्मन तुम्हारेपास आ न सकेगा. यह बात सुनकर योगीने राजाको रुखसत किया. राजा जब उज्जैन नगरीके पास जाकर पहुँचा तब उधरसे एक ब्राह्मण और एक भाटको आते देखा. और जब नजदीक जाकर पहुँचे तो उन्होंने आशीर्वाद देकर कहा महाराज ! आपके द्वारपर हमने बहुत दिन सेवा की पर हमारा भाग्यही ऐसा था कि कुछ इसका फल न मिला. तब राजाने सुनतेही ब्राह्मणको छड़ी दी. और भाटको माला दी, और उसका सब भेद कह दिया. तब आशीर्वाद देकर वह दोनों कहने लगे महाराज ! इस समयमें तुम राजा कर्ण हो. तुम्हारे बराबर दानी आज पृथ्वीमें दूसरा और नहीं. यह कहा और दोनों बिदा होकर गये. राजाभी अपने स्थानको गया. तब दीवान प्रधान सब आनकर हाजिर हुए. शहरकी तमाम रैयत खुश हुई और वे दोनों झगडेलूभी यह खबर सुन तुर्त आकर राजाके सामने खड़े रहे और कहा महाराज ! आपने जो छै महीनेका करार कियाथा सो बीत गया अब हमारा न्याय करदीजिये. यह सुनकर राजा बोला कि बिना बल कर्म कुछ कामका नहीं. और बिना कर्म बल काम नहीं आता, इससे ये दोनों बराबर हैं. इसको सुन संतोषकर वाद छोड़ दोनों अपने अपने घरको गये. ऐ

राजा भोज! यह अहवाल मैंने तुझसे इसलिये कहा है कि, तू समझकरके यह खयाल अपने जीसे उठावेगा. इसवास्ते कि, जो ये लियाकत रक्खे वह सिंहासनपर बैठे. वहभी योग राजाका बीतगया फिर उसके दूसरे दिन भोर होतेही सिंहासनपर बैठनेको तैयार हुवा कि, इतनेमें **कामकंदला--**

छठी पुतली-

हँसी और कहने लगी, कि जिस आसनपर राजा विक्रमने पाँव धरा है तू उसपर बैठनेके लायक कहां है? ऐ पापी! तू अपने होशको गुम न कर और पांव खाली रखदे, क्योंकि तुझे देख मेरा मन मलीन होजाता है. इस सिंहासनपर वही बैठे जो विक्रमसा राजाहो. तब राजा बोला. तू अपने मुँहसे कह कि विक्रम राजाने क्या क्या कर्म किये हैं? वह बोली तू सुचित्त होकर बैठ मैं नृपतिकी कथा कहतीहूं. एकदिन नृपती अपनी सभामें बैठाथा. वहां एक ब्राह्मणने आकर एक अचरजकी बात कही कि, उत्तर दिशामें एक बड़ा बन है और उस बनमें एक पर्वत और उसके आगे एक तालाब है. और उस तालाबमें एक खंभ स्फटिकका है, जब सूर्य निकलताहै तब उस सरोवरमेंसे वह खंभभी निकलताहै. और ज्यों ज्यों सूरज चढताहै त्यों त्यों खंभभी बढताहै. जब ठीक दोपहर होतीहै तब वह खंभ सूर्यके रथके बराबर जाकर पहुँचताहै.

तब उस जगह रथभी खड़ा रहताहै. और वहां सूर्य जब कुछ भोजन कर लेतेहैं. तब रथ फेर आगे ले चलतेहैं. और खंभभी घटता जाताहै. निदान सामके वख्त पानीमें लोप हो जाता है, इसको देवता या देव कोई नहीं जानता. यह बात ब्राह्मणके मुँहसे सुनकर राजाने अपने मनमें रक्खी, जाहिर न की और उसके तईं कई रुपये दे बिदा किया और अगिया कोयला बतालोंको याद किया वे दोनों वीर वहां आकर हाजिर हुए. और उन्होंने कहा कि, हमें जो इस वख्त आपने याद किया है सो आज्ञा कीजिये कहिये स्वर्गको ले जावें? कहिये पातालको? कहिये समुद्रपार? इन तीनों लोकोंमें जहां आपकी मर्जी हो तहां लेचलें? तब हँसकर राजाने कहा एक कौतुक देखने हम जाया चाहतेहैं सो वह उत्तराखंडमें है तहां तुम लेचलो. यह सुनकर वीर कांधेपर चढ़ा राजाको लेउड़े और उस जगह तुर्त जा पहुँचे. तब राजानें वह तालाब देखा कि चारों घाट उसके पक्के हैं. हंस बगुले उसमें फिरतेहैं. और मुरगाबियां चकोर पनडुबियां कलोल करतीहैं. कमलके फूलोंपर भौंरे गूँज रहे हैं. मोर बोल रहे हैं, कोयल कूक रही हैं, और तरह तरहके पछी हुलासमें हैं, फूलोंकी सुगंधोंके साथ पौन चली आतीहै. और मेवादार दरख्तकी डालियां तो लचके खाती हैं. राजा यह सभा देखकर मनमें

बहुतही खुश हुआ, रातभर वहीं रहा. जब सुबह हुई तब सूर्य निकला जो कुछ अहवाल ब्राह्मणने कहाथा वह सब वहां देखकर वीरोंसे कहा एक बात मेरे जीमें आती है, कि मेरे तईं ले जाकर इस खंभपर बिठलादो. और भगवान्का ध्यानकर अपने स्थानको जाओ. तब वीरोंने खंभपर ले जाकर बिठा दिया. और वे अपने मकानको गये. ज्यों ज्यों यह बढ़ने लगा त्यों त्यों राजा अपने दिलमें खौप करने लगा जितना सूर्यके नजदीक पँहुचताथा उतनाही गर्मीसे जला जाताथा निदान सूर्यके निकट पहुँच जलकर अंगार होगया. जब खंभ बराबर रथके पहुँचा और रथवानने एक मुर्दा जला हुवा देखा तब अपने रथके घोडोंकी बाग खैंची. सूर्यने बँककर देखा कि खंभपर जला हुआ एक आदमी लग रहा है. सूर्य त्राहि त्राहि कर बोले कि यह साहस आदमीका नहीं यह कोई योगी है या देवता या कोई गंधर्व इस मुर्देके होते मैं इस जगह किसतरह भोजन करूंगा ? यह कहकर सूर्यने अमृत ले इसपर छिड़काया. तब राजा राम रामकर पुकार उठा. और देखकर सूर्यको दंडवत् कर हाथ जोड़ कहने लगा कि धन्य है भाग्य मेरा और मेरे कुलका जो आपके दर्शन पाये और मैंने इस जन्ममें यज्ञ दान किये थे इसीके सबबसे तुम्हारे चरण देखे. जिन्दगीका जो फल था सो मुझे मिला. इच्छा संसारमें सबको है, लेकिन् जिस-

पर तुम्हारी मिहरबानी हो उसीको दर्शन मिलताहै. यह सुनकर सूर्य बोले कि, तू कौन है ? तेरा क्या नाम है ? तुझे देख देखके मेरे जीमें तरस आतीहै. अपना नाम तू जल्दीसे कह. तब राजा बोला कि, स्वामी ! नगर अंबावतीमें गंधर्वसेन नाम जो राजाथा उसका मैं बेटा हूं मेरा नाम विक्रम है. आपकी कथा मैंने एक ब्राह्मणके मुँहसे सुनीथी. तब मुझे आपके दर्शनकी इच्छा हुई और आपकी तवज्जोहसे आपके चरण देखे. अब मेरे तई आज्ञा दीजिये तो मैं बिदा हूं. यह सुन सूर्यने हँसकर अपना कुंडल उतारकर राजाको दिया और कहा अब तू निडर राज कर. फिर सूर्यका रथ आगे बढ़ा और खंभभी घटने लगा. जब राजा अकेला रहगया तब बीरोंको अपने पास बुलाया वे आकर हाजिर हुये. उनके कांधेपर सवार होके अपने मकानको आया. जब शहरमें दाखिल होने लगा तब सामनेसे एक गुसाईं आया, और राजासे अपने योगकी मतिसे कहा महाराज ! जो आप सूर्यके पाससे कुंडल लायेहो सो मुझे दान दीजिये. और यश धर्म, बड़ाई लीजिये. राजा बोला ऐ मतिहीन ! ऐसा योग तूने कब कमाया ? जो तू कुंडल माँगता है. वह संन्यासी कहने लगा कि, महाराज ! मैंने योग तो कुछ नहीं साधा. पर सुनाथा कि राजा विक्रम बड़ा दानी है इससे मैंने आपको जांचा. राजाने हँसकर कुंडल उतार उसके हाथ दिया. आप खुश होता हुआ अपने घरमें गया. कामकंदला ये बात सुनाकर कहने लगी

राजा ! तुझमें इतनी शक्ति हो तो तूभी इस सिंहासनपर बैठ. यह बात सुन राजा मनमलीन हो महलमें गया. दूसरे दिन राजा मनमें गुस्सः खाताहुआ फिर सिंहासनपर बैठनेको चला. और वररुचि पुरोहितसे कहा कि, इस बेर मैं पुतलीके रोकनेसे न रुकूंगा. आज सिंहासनपर मैं जरूर बैठूंगा. जब राजाने अपना पाँव उठाकर सिंहासनपर बैठनेको चाहा कि, रक्खूं तब **कामोदी** नाम-

सातवीं पुतली-

कहने लगी-और पांव तले आन गिरी, तब राजाने यह देख दुःखित होके पांव खेंचलिया. और उस पुतलीसे कहा तू किस कारण पांवतले आनगिरी? तब इसने कथा शुरू की कि, हम जो है अबला सो सत्ययुगकी हैं. राजा ! तेरा अवतार कलियुगमें हुआ. हमने एक मर्दको छोड़ दूसरेका मुँह नजरसे नहीं देखा, हम पहले अपना माजरा कहती हैं कि, विश्वकर्मीने तो हमें जन्म दिया. और बाहुबल राजाके पास आकर रहीं. उसने राजा वीर विक्रमादित्यको हमें दिया. वह अपने घर ले आया. जब हम वहांसे बिछुड़ीं तबसे कभी सुख नहीं पाया. जो उस राजाके बराबर होवे सोही इस सिंहासनपर बैठे. राजा बोला विक्रममें वसफ क्याथे. तू वे मुझसे बयान कर. तब वह पुतली बोली, सुन राजा ! विक्रमका अहवाल. एकदिन

राजा वीर बिक्रमादित्य अपने घरमें दोपहर रातको सोताथा और तमाम शहर नींदमें यहांतक गाफिल था कि जो किसी आदमीकी आवाज न आतीथी. कि, उत्तर दिशाकी तरफ नदीके पार एक स्त्री ढाढ़ें मारके रो उठी. उसका आवाज राजाके कान पड़गया. तब राजा अपने मनमें चिंता करने लगा कि, हमारे नगरमें कोई दुःखी आया है कि वह अपने दुःखसे कूक मार मार रो रहा है. यह बात दिलमें विचार ढाल तलवार हाथमें ले उधरको चला. और नदीके किनारेपर पहुँचकर वस्त्र छोड़ लंगोट मार पैरकर पार हुआ और थोडा आगे बढ़कर देखा तो एक अति सुंदरी जवान नारी खडी कूकमार रो रही है. उसके पास जाकर राजाने पूंछा कि, पुरुषका तुझे वियोग है या पुत्रका शोक है सो कह ? या तुझे सौतका साल है. इतने दुःखोंमेसे किस दुःखसे तू रोतीहै ? जो कुछ तुझे व्यापा है सो मुझे कह ? तब वह कहने लगी सुन राजा ! हमारा बालम चोरी करताथा इतनेमें शहरके कोतवालने उसे पकडकर शूली दिया है. और मैं उसकी मुहब्बतसे कुछ खाना खिलानेको लाईहूं और चाहती हूं उसे भोजन करवाऊं. पर शूली ऊंची है और मेरा हाथ उसके मुँह तलक नहीं पहुँचता इस दुःखसे रोतीहूं और बहुत यत्न करतीहूं पर पहुँचने नहीं पाती. तब नरपतिने कहा यह तो थोडीसी बात है. इसके वास्ते तू क्या रोतीहै ? उसने जवाब दिया

कि, मुझे यह थोडी बहुतही है; तब राजा बोला मेरे कांधेपर चढ उसे खिलादे. तब वह कंकालिन राजाके कांधेपर चढ़ी. उस शूलीपर चढ़ चोर जो टँगाथा उसे खवाने लगी. तब रक्त राजाके बदनपर गिरने लगा. राजाने मनमें सोचा कि, यह कोई ओर है ये मनुष्य नहीं. इसने मुझे धोखा दिया. तब अपने जीमें राजाने सोचकर पूंछा कि, कह सुंदरी ! तेरा पिया भोजन करता है कि नहीं ? तब कंकालिन बोली रुचिसे खा चुका, अब इसका पेट भरगया. इसवास्ते मुझे कांधसे उतार. जब हेठ उतरी तब राजाने कहा उसने चाहसे खाया. तब कंकालिन हँसकर बोली तू मांग जो तुझे चाहिये होय ? मैं तुझसे बहुत खुश हुई. मैं कंकालिन हूं अपने जीमें मुझसे मत डर. तब वह बोला मैं तुझसे क्या डरूंगा और क्या मागूंगा ? तैंने तो मर्दको मेरे कांधपर चढ़ खवाया सो तू मुझे क्या देगी ? वह फिर बोली कि राजा ! तू इसके खयालमें मत पड़ कि, मैंने क्या किया और क्या न किया ? जो तुझे इच्छा होय सो माँगले. राजाने हँसकर कहा कि अन्नपूर्णा मुझे दो और जगत्में यश लो. वह बोली अन्नपूर्णा मेरी छोटी बहन है. तूं मेरे साथ चल मैं तुझे दूंगी. इस तरह आपसमें दोनों वहांसे बचन कर चले. आगे २ कंकालिन और पीछे पीछे राजा नदीके किनारे जा पहुँचे. वहां एक मंदिर था. उसके द्वारे कंकालिनने ताली मारी और अन्नपू-

र्णाने प्रकट होके उससे कहा कि यह भूपाल कौन है ? वह बोली कि, यह राजा विक्रम है. इसने मेरी सेवा की है. और मैंने इससे बचन हारा है. अगर मेरी मोहब्बत तेरे दिलमें हो तो अन्नपूर्णा इसे दे. तब हँसकर उसने राजाको एक थैली दी. और कहा कि इसमेंसे जितनी खानेकी चीज तुम मांगोगे उतनी पाओगे. तब राजाने हाथ फैला लेली. और वहांसे खुश हो नदीके किनारे आन स्नान ध्यान कर निश्चित हुआ कि इतनेमें एक ब्राह्मण वहां आन पहुँचा. उसको राजाने पास बुलाया और कहा कि कुछ भोजन करोगे ? उसने कहा मुझे भूंख लगी है, जो आप देओगे तो मैं खाऊंगा ? राजा बोला क्या खाओगे ? किस चीजपर तुम्हारी सूरत है ? तब ब्राह्मण बोला इस वख्त मिले तो पकवान खाऊंगा. राजा अपने मनसें सोचने लगाः– जो इसदम पकवान न पहुँचेगा तो मैं ब्राह्मणसे झूठा हूंगा. इतनी बात मनमें विचार थैलीमें हाथ डालकर जो निकाला तो देखा कि पकवानही निकला. ब्राह्मणने पेट भरकर खाया और बोला–महाराज ! भोजन तो मैंने किया, अब इसकी दक्षिणाभी दीजिये. तब राजाने कहा महाराज ! आप जो दक्षिणा मांगोगे सो मैं दूंगा. ब्राह्मण बोला–यह थैली मैं दक्षिणा पाऊं तो आनंदसे अपने घर जाऊं. थैली ब्राह्मणको देकर राजा अपनें महलमें आया. इतनी कथा कहकर वह राजा भोजसे

फिर बोली कि इतनी मेहनतसे थैली पाई और ब्राह्मणको देनेमें बार न लगाई. ऐसा साहसी और ऐसा दानी जो तू हो तो इस सिंहासनपर बैठ और नहीं तो पातक होगा. वहभी मुहूर्त राजाका टूट गया. जब दूसरे दिन फिर राजा सिंहासनपर बैठनेको आया. तब पुष्पावती—

आठवीं पुतली—

बोली—हे राजा भोज! तन जो सिंहासनपर बैठनेका चित्त किया है सो इसकी आशा मनसे छोंड़दे. राजा बोला-मैं किसतरह छोड़ूं? तब पुतलीने कथा शुरू की कि,

एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य अपने दरबारमें बैठाथा उसवख्त सब राजा मुजरेको हाजिर थे. कि इतनेमें एक बढ़ईने आकर सलाम किया. और कहा महाराज ! मैं आपके दर्शनको आयाहूं और एक घोड़ा आपके लिये लाया हूं. राजाने आज्ञा की कि ले आ. बढ़ईने जो हिकमतका घोडा बनाया था सो नजर किया. राजाने घोडेको देख उससे पूंछा—कि, इसमें क्या २ गुण हैं. ? बढ़ईने कहा—महाराज ! इसमें ये गुण हैं—कि न यह कुछ खाता है. न कुछ पीता है. और जहां चाहो तहां ले जाता है. दर्याई घोड़ेके बराबर है. घोड़ा इस वख्त चालाकीसे एक जगह ठहेरता न था. कूद फांद रहा था. ज्यों ज्यों राजा देखताथा त्यों त्यों रीझताथा. आखिर पसंद करके कहा कि, इसको इस

मैदानमें फेरकर दिखादो. ज्योंही उसने कोड़ा किया. फिर तो गर्दही नजर आतीथी. और घोड़ा मालूम न होताथा. जब ऐसे गुण घोडेमें राजाने देखे, तब दीवानको बुलाकर कहा–कि एक लाख रुपये इसे दो. दीवानने अर्ज की-कि, महाराज ! यह काठका घोडा और लाख रुपये इनाम मुनासिब नहीं. राजाने दो लाख रुपये फरमाया. तब उस दीवानने चुपके हवाले कर दिये. और अपने दिलमें सोचा जो कुछ और तकरार करूंगा तो और बढेंगे. वह बढ़ई रुपये ले अपने घरको गया. घोडा थानपर बांधा और वह यह कहतेहुये चला गया, कि इसपर सवार होते कोडा न कीजो, न ऐंड मारियो. पर क़िस्मतका लिखा कोई मिटा नहीं सक्ता. जो बात हुई चाहती है, सो होतीही है. कई दिनके बाद राजाने घोडा मँगवाया. और अपने मुसाहिबोंसे फरमाया कि कोई तुममेंसे सवार होकर इस घोडेको फेरे तो हम देखें. यह बात सुनकर वे एकेकका मुँह देखने लगे. घोडेकी चालाकीसे कोई न चढ़ा. तब राजा झुंझलाकर बोला– घोडेको साज लगाकर तैयार कर लाओ. यह बात सुनकर एककी जगह हजार आदमी दौडे और जल्दी तैयार कर लाए. तब राजा सवार होकर वहां फेरने लगा. कि वह चाहताथा कि आसन जमाकर घोडेको अपने काबूमें लावें पर वह रानोंसे निकला जाताथा और पारेकी तरह जगहपर ठहरता न था.

छलावेकी मानिंद छलबल कर रहाथा. राजा खुशिके मारे बढ़ईकी बात भूल गया. और घोड़ेको कोड़ा दिया. चाबुक लगा तेही वो आग बबूला होकर ऐसा उड़ा कि समुद्रपार लेगया. और एक जंगलमें दरख्तके ऊपरसे गिरा आप रानोंसे निकल गया. राजाभी दरख्तपरसे लड़खड़ाता हुआ नीचे गिर पड़ा और यह हालत हुई कि मृतकसा हो गया. जब कितनी देर लगी, तब कुछ उसे होश आया. तब अपने दिलमें कहनेही लगा कि देश, नगर, राज, पाट, रैयत और अपने परिवारके ये सब छूटे क़िस्मत यहां मुझे लेआई. देखिये आगे क्या होय ? यह मनमें बिचारकर धीरज बांध उठकर वहांसे आगे चला. ऐसे महाबनमें जा पडा कि निकलना फिर मुश्किल हुवा. पर ज्यों त्यों उस जंगलसे भूला भटका दश दिनमें सातकोस राह चलकर फिर ऐसे एक बनमें जा पहुँचा कि उसमें ऐसा अँधियारा था कि हाथको हाथ न सूझताथा और चारों तरफ़ शेर, गैंडे, चीते, बल्कि सब परिंदे बोल रहेथे. उनकी डरावनी आवाजें सुनकर राजा सहमा जाता था. कभी पूर्व, कभी पश्चिम, कभी दक्षिण, कभी उत्तर, भटका भटका फिरता था, पर कहीं राह न मिलतीथी. इस तरह दुःख भोगता हुआ पंद्रह दिनके बाद एक तरफ़ जा निकला. वहां एक तमाशा नजर आया कि, एक मकान है. और उसके बाहर एकबड़ा दरख्त और दो बडे

कुए थे, उस दरख्तपर एक बंदरिया बैठी थी. वो कभी नीचे उतरती है, और कभी ऊपर चढ़ती है. राजा यह कौतुक छिपाहुआ देखता रहा. इतनेमें निगाह उसकी ऊपर गई तो क्या देखता है कि उस हवेलीपर एक बालाखाना है. जब दरख्तपर चढ़गया तो देखा कि वहाँ एक पलंग बिछा है और सब ऐशका असबाब धरा है. तब मनमें कहा अभी जाहिर होना अच्छा नहीं. पहिले यही मालूम करूं कि, कौन यहां आता है और कौन जाता है. जब ठीक दो पहर दिन हुआ तब एक सिद्ध वहां आया और बाईं तरफ जो कुआ था उसमेंसे उसने एक तूंबा जल निकाला तब वह बंदिरया निकल आई तब सिद्धने एक चुल्लू पानी उसपर डाल दिया तो वह खूबसूरत स्त्री होगई और उस रूपवती स्त्रीसे योगीने भोग किया. जब तीसरा पहर हुवा तब योगीने दूसरे कुआसे पानी खैंच उसपर छींटा मारा फिर वह बंदरीकी बंदरी बनगई. और दरख्तपर चढ़ी और योगीभी पहाडकी गुफामें जाकर बैठा और अपना योग करने लगा. इतनेमें राजाने प्रकट हो चतुराई कर बाँए कुवेसे जल निकाल उस बंदरीपर छींटा मारा. फिर वह ऐसी सुंदरी नारी हुई कि, गोया इंद्रके अखाडेकी अप्सरा है. और राजाको देख लाजसे मुँह फेर लिया. कामके बाण राजाके आन लगे. प्रेमकर उसको अपने पास बिठाया. जब उसने आँखें प्यारकी देखीं तब हँस-

कर बोली कि, महाराज ! हमारी ओर और दृष्टिसे मत देखो क्योंकि, हम तपस्विनी हैं. जो हम सरापेंगी तो तुम भस्म हो जाओगे. राजा बोला कि, शाप मुझे न लगेगा मैं राजा वीर विक्रमादित्य हूं, कोई मेरा क्या कर सक्ता है ? मेरे हुक्ममें ताल बेताल हैं. विक्रमका नाम सुनतेही वह राजाके चरणपर गिरपड़ी. और कहा महाराज! तुम तो नरेश हो. हमारा उप-देश सुन जल्दी यहांसे जाओ अभी यती आवेगा तो मुझे और तुम्हें दोनोंको शाप देकर जलादेगा. तब नरपति बोला–कि, हम यतीके सामने न होंगे, तो हमारा कुछ वह कर न सकेगा पर स्त्रीहत्या लेनी उचित नहीं. क्योंकि स्त्रीहत्या लेनेसे आ-खिरको नरक भोग करना पड़ताहै. फिर राजाने कहा कि, उस सिद्धने तुझे कहां पाया ? तब वह बोली कि, कामदेव मेरा बाप है. और पुष्पवती मेरी मा है. मैंने उनके कुलमें अवतार लिया था. जब बारह बरसकी मैं होगई तब उन्होंने मुझे एक आज्ञा की सो मैंने न मानी इतनेही अपराधसे माता पिताने क्रोधकर मुझे यतीको दे डाला. और मुझे यह अपने बश करके इस बनमें ले आया. और यहां आकर बंदरी करके रूखपर चढ़ा दिया. इस शक्लसे एक बरस गुजरा कि मैं इस बनमें पड़ी हूं, सच है कि, क़िस्मतके लिखेको कोई मिटा नहीं सक्ता, यह मनमें सोचकर चुपकी हूं. तब राजा बोला-मेरा जी

चाहता है कि, तुझे अपने घर ले जाऊं. तब वह बोली—महाराज ! यह बात तो मेरेभी दिलमें आती है. पर क्योंकर जाऊं तुम्हारा नगर तो समुद्रके पार है. तब राजाने बचन दिया कि, मैं तुझे ले चलूंगा. समुद्र लांघनेकी फिक्र अपने मनमें मतकर. इस तरह ले जाऊंगा कि, तुझे मालूमभी न होगा. यों दोनोंने आपसमें बातें कर रैन आनंदसे निकाली. और सुबह होतेही राजाने पानी दूसरे कुएसे निकाल उसपर छिड़क दिया कि, फिर वह बँदरिया हो कूद दरख्तपर जा चढ़ी और राजाभी वहीं छुप रहा. उसी दम योगी आन पहुँचा. वही यत्न योगिने कर छिन एक वहां सुस्ता खुशी की. जब चलने लगा तब वह सुंदरी बोली–महाराज ! मेरी एक विनती सुनिये. कुछ प्रसाद मैं आपके पास माँगती हूं सो तुम मुझे कृपा कर दीजिये यह सुन योगीने हँसकर एक कमलका फूल उसे दिया और कहा कि, एक लाल हररोज इस कमलसे पैदा होगा. और कभी न कुम्हलायगा. इसे तू अच्छी तरहसे रखना. यह सुनकर उसने अपनी चोलीमें रखलिया. और दिल उसका खुश हुआ. योगी फिर उसे बंदरी बनाके आप चला गया. राजाने आकर फेर कुएसे पानी निकालकर उसे नारी बनायी. और उसने वह कमलका फूल राजाको दिखाया और कहा कि, महाराज ! एक अद्भुत चरित्र है कि इसमेंसे एक लाल हररोज निकलेगा.

यह बात बुद्धिबाहिर है. राजाने कहा अचरज नहीं. भगवान्‌को सब शक्ति है और वह क्या क्या नहीं करता. ये बातें कर रात ऐशमें काटी और प्रभात होतेही उस कमलसे एक लाल गिरा. दोनोंने यह तमाशा देखा. तब राजाने कहा कि, चंचले! अब यहां ठहरना उचित नहीं. बेहतर यह है कि, मेरे देशको चलो. यह बात राजाकी सुनकर वह बोली–सुनो महाराज ! एक मेरी अधीनी. मैं पांव पड़कर जो आपको कहतीहूं सो सुनो. महाराज ! आप बड़े दानी हो. ऐसा दानी मैंने आजतक नहीं सुना. ऐसा नहीं कि, किसीको मुझे दान करदो. मैं दासी होकर आपकी हरवख्त सेवा करूंगी. तब राजा बोला–कि, यह नहीं होसक्ता कि, कोई अपनी नारी परपुरुषको देय. यह काम तो धर्मविरुद्ध है. और लोकविरुद्ध है. इस तरह उसकी खातिर जमा कर दोनों बीरोंको बुलाया. वे आकर हाजिर हुए. उन्होंसे कहा कि, जल्दी हमारे देशको ले चलो. वे बीर उन दोनोंको तख्तपर बिठा हवाकी तरह ले कर उड़े, वे तो यों अपने शहरकी तरफ गये. और योगी जो यहां आया और उस सुंदरीको न पाया. तब पछता पछता मनमार मुरझाय रहा. निदान राजा अपने नगरके पास आया. और सिंहासनसे उतर उस राजकन्याका हाथ पकड़ शहरको लेचला. रास्तेमें उसने देखा कि, किसीका एक खूबसूरत लड़का दरवाजेपर खेल रहा है. राजमहिषीके हाथमें

कमलका फूल देखकर वह लड़का रोने लगा. और विकल विकल बोला कि, मैं यह फूल लूंगा. तब राजाने कमल रानीके हाथसे ले लड़केको दिया. लड़का फूल ले हँसता हुआ अपने घरमें गया. राजाभी अपने मंदिरमें जा विराजमान हुआ. जब सुबह हुआ तब उस कमलके फूलमेंसे एक लाल गिरा, लड़केके बापने उसे देख उठा लिया. और कमलको छिपा रक्खा. इसी रंगमें हररोज लाल निकलने लगे कि एक दिन कितनेक लाल वह लेकर बजारमें बेंचनेको गया. वह खबर कोतवालको हुई तब कोतवालने उसे पकड़वा मँगवाया. और पूंछा कि, तू बनिया है और तूने इतने लाल कहां पाये ? तब वो कहने लगा कि, ये हमारेही घरके हैं. परं उसकी बात न सुन उसे बहुतसी सियासत कर लाल लेकर राजाके पास आया. और सब वह अहवाल बताया. तब राजाने कहा कि उसको मिलादो. और उसे पूछा कि, तूने ये लाल कहां पाये ? और राजाने उसे कहा कि जो तू सच मुझसे कहेगा तो मैं तुझे और भी दौलत दूंगा और झूंठ कहेगा तो देशसे निकाल दूंगा. उसने अर्ज की सुनो भूपाल! द्वार खेलता था मेरा बाल उसके हाथमें कोई कमलका फूल दे गया. और उसने आन मुझे दिया. मैंने रातभर उसे अपने पास रखलिया. सुबह होतेही उसमेंसे एक लाल गिरा और अब हररोज एक एक लाल योंही निकलता है. और

अबभी वह फूल मेरे घरमें है. राजाने कहा यह तो तूने सब अच्छीं बातें कहीं. अब तू ये लाल लेकर अपने घरको जा. और कोतवालने बहुत बुरा काम किया जो बेतक़सीर तुझे पकड़ लाया. इससे न्याय अब यह है कि, लाख रुपये कोतवाल तुझे दंड दे. यह कह कोतवालसे लाख रुपये दिलाये. और उसे घरको भेज दिया. ये बातें कह फिर पुतली बोली–सुन राजा भोज ! वीर विक्रमादित्यके गुण और धर्म. तू मूर्ख है. कुछ उसकी हक़ीक़त नहीं जानता. वैसे राजाको तू अपने आगे हीनकर मानता है. और अपने ताईं मनमें तू अधिक समझता है. ये बातें पुतलीसे सुन राजा उस दिन योंही अछता पछता रहगया वह साअतभी जाती रही. सुबहको दूसरे दिन राजा सिंहासनके पास खड़ा हुवा. और पुतलीसे पूंछने लगा कि, तू खुश तो है ? तुम्हारे मुँहसे कथा सुनकर मुझे निहायत खुशी पैदा होती है. तब **मधुमालती**—

नववीं पुतली–

बोली– सुन राजा भोज ! यहां बैठकर मैं एक दिनकी कथा राजा वीर विक्रमादित्यकी कहतीहूं. एक दिन राजाने होम करनेका आरंभ किया. जहाँतक देशके ब्राह्मण थे. उन्होंको न्योता भेज बुलाया और जितने उसके देशके राजा और साहूकार थे वे भी हाजिर

हुए. भाट, भिखारी, भिक्षुक सुनकर सब धाय धाय आए. और देश देशके राजा अपने सब लोगोंको ले ले आये. और जितने देवता थे वे भी सबके सब आये. राजा अपने सिंहासनपर बैठा. यज्ञ होने लगी. कि एक बूढ़ा ब्राह्मण उस समय आया. राजा अपने यज्ञके मंत्र पढ़ता था. ब्राह्मणको दूरसे देखके मनमेहीं दंडवत् की, उस पंडितको आगम विद्यासे मालूम होगया. इसवास्ते हाथ बढ़ाकर राजाको आशीस दी कि, चिरंजीव हो. जब राजाने मंत्रसे फुर्सत पाई तब उस ब्राह्मणसे कहा कि, महाराज! आपने बहुत मंद काम किया कि, बिना प्रणाम मुझे आशीर्वाद दिया "जबकत पांव न लागे कोई! वह आशीस पापसम होई" तब ब्राह्मणने कहा राजा! जब तूने अपने मनमें दंडवत् की तबहीं मैंने आशीस दी. यह बात सुन राजाने लाख रुपये ब्राह्मणको दिये. तब ब्राह्मण हँसकर कहने लगा कि, महाराज! इतने रुपयोंमें मेरा निर्वाह न होवेगा. ऐसा कुछ विचार कर दीजिये कि, जिसमें मेरा काम हो. तब राजाने पांच लाख रुपये उसे दिये. वह लेकर अपने घरको गया. और जो जो ब्राह्मण उस यज्ञमें थे उनकोभी बहुत कुछ दिया. इसवास्ते राजा भोज! मैंने तेरे आगे यह बात कही कि तू सिंहासनपर बैठनेके योग्य नहीं. सिंहकी बराबरी सियार

नहीं कर सकता. और हंसकी बराबरी कौवेसे नहीं होसक्ती और बंदरके गलेमें मोतीकी माला नहीं शोभती. और गधेपर पाखर नहीं फबती. इसवास्ते मेरा कहा तू मान और इस खयालसे दर गुजर; नहीं तो नाहक किसीदिन तेरा प्राण जायगा. यह बात सुनकर राजा चुप रहा और वह दिनभी गुजर गया. जब रात हुई अंदेशा कर सुबहको बदस्तूर सिंहासनके पास आया और चाहा कि, पाँव धरें; तब **प्रेमावती**–

दशवीं पुतली–

हँसकर बोली–हे राजा भोज ! पहले तुम मुझसे यह बात सुनलो. पीछे इस सिंहासनपर बैठो. तब राजा बोला–तू कथा कह मेरा जीभी सुननेको चाहता है. राजा वहां आसन बिछाय बैठ गया. और पुतली कहने लगी–सुन राजा ! एक दिन वसंत ऋतुमें टेसू फूला हुवा था मोर मोराया हुआ कोयल कूक रहींथीं. हवा चलरहीथी. राजा वीर विक्रमादित्य अपने बागमें बैठा हुवा हिंडोल झूलताथा. इसमें एक वियोगी किसी देशसे भूला भटका आ निकला. राजाके पाँवपर गिरपड़ा और कहने लगा कि, स्वामी ! मैंने बहुत दुःख पाया. और अब मैं आपकी शरण आया हूं. और उसकी यह सूरत बनगई थी कि तमाम लोहू बदनका सूख गया था. और आँखसे कम सूझताथा, अन्नपानी सब छोड़ दियाथा. किसी तरह धीरज

नहीं धरता था. राजा ज्यों ज्यों समझता था त्यों त्यों वह विरहसे व्याकुल हो हो रोता था. तब राजाने कहा तू अपने जीको सँभाल और इतना दुःखी क्यों है ? और अब जो यहां आया है तो अपनी कथा कह दे कि, किसकारण ऐसी गति हुई है ? और किसके गमसे तेरी यह शकल बन गई है ! तू किस देशसे आया है. और क्या तेरा नाम है ? वह एक आह सर्द दिल पुर दर्दसे खैंचकर बोला. नगर कलंजर देश है मेरा. मैं मतिहीन और दुर्बुद्धि हूं. एक यतीने मेरे आगे यह बात कहीथी कि, एक खूब सूरत स्त्री एक जगह है वैसी सुंदरी कोई जगहमें नहीं. गोया कामदेवसे पैदा हुई है. बल्कि तीनों लोकमें वैसी न होगी. और लाखों राजा जी लगा उसके यहां आते हैं. और जल जल जाते हैं. पर उसे नहीं पाते. राजाने कहा किसलिये वे जलते हैं ? तब वह हक़ीक़त कहने लगा कि, उसके बापने वहां एक आग भड़काई है. और एक कड़ाह भर घी चढ़ाकर रक्खा है. वह घी पड़ा खौलता है. और यह उसकी शर्त है कि, जो उस कडाहमें स्नानकर जीता बच निकले उससे कन्याकी सादी करूंगा. यह बात उस योगीसे सुनकर मैं भी वहां गया था सो मैंने अपनी आँखोंसे यह तमाशा देख हैरान हुआ और वहां हजारों राजे देश देशके लाखों नौकर, चाकर, साथ लेकर

आते हैं और यह देख पछताकर जाते हैं. उनमेंसे जो इरादः कर्ता है सो उस कड़ाहमें गिरकर भुन जाता है. जब शक्ल उस राजकन्याकी नजर आई तब सुध बुध मैंने गँवाय अपनी हालत यह उस्के इश्कमें बनाई है. यह बात उसके मुखसे सुनकर राजाने कहा आज तुम यहांही रहो. कल तुम हम मिलकर वहां चलेंगे. और उसे तुम्हें दिला देंगे. अपनी खातिर जमा रक्खो. यह राजाकी बात सुन उसको समाधान हुआ. ये देख राजाने उसे स्नान करवा कुछ खिलवा अपनी सभामें बैठाकर यह हुकुम किया कि जितने संगीतविद्यावाले हैं सो सब तैयार होहो आज यहां आकर हाजिर होवें और अपना अपना मुजरा बतलावें. राजाकी यह आज्ञा पायके सब आन हाजिर हुए. और अपना अपना गुण जाहिर करने लगे. राजाने उससे कहा कि, इनमेंसे जिस रंडीको तुम चाहो उसे हम तुम्हें देंगे तुम यहां बैठकर सुख भोग करो और उसका खयाल दिलसे भुलादो. यह बात राजाकी सुनकर वह वियोगी बोला महाराज ! सिंह अगर सात दिन उपवास करै तौभी घास न चरे. सिवाय उसके मुझे किसी औरकी इच्छा नहीं. इसी तरह तमाम रात बीत गई. जब सुबह हुवा तब राजाने स्नान पूजा कर उन बीरोंको याद किया. वे तुर्तही आन हाजिर हुए. और अर्ज किया कि, महाराज ! हमको क्या हुकुम है ? हम

किस देशको तुम्हें लेचलें ? तब राजा बोला जहां यह प्रेमी कहे. उसने कहा महाराज ! कन्याके नगरमें ले चलो. जिस जगह वह घीका कड़ाह खौल रहा है, और सारा आलम वहां जमा है. उसी देशको ले चलो. राजाने तख्तपर उसकोभी बिठला दिया. और अगिया कोयला दोनों वीरोंको हुकुम किया कि, उसी देशमें ले चलो. वीर यह सुनतेही ले उड़े और एक दमसे सिंहासन उसी जगह जाकर रखदिया. राजाने वहां जाकर देखा तौ बाजन बजरहे हैं और मंगलाचार हो रहा है. वह राजकन्या हाथमें फूलोंकी माला लिये फिरती है. और राजपुत्र वहां उसके लिये कामना करके जो गये हैं सो सब वहां खड़े हैं. लेकिन हिआव किसीका यह नहीं पड़ता जो उस कडाहमें कूदे. और जो कोई जानपर खेलकर कूदता है तो जल जाता है, राजाने जब उस कन्याके पास जाकर देखा उसके रूपको तो मोहित होरहा और कहा कि, जिस कोखसे यह कन्या पैदा हुई है धन्य है उस कोखको. आदमीकी तो जान क्या है ? इसे देवता देखें तोभी बेसुध हो जावें. इतनी बात राजाने कहकर बीरोंको कहा कि, हम इस कड़ाहमें कूदते हैं. इस वास्ते तुम खबरदार रहना. तब बीर बोले महाराज ! तुम निश्चिंताईसे कूदिये. और किसी बातकी खौफ न कीजिये. इतनी बात कह राजा कड़ाहके पास जा झड़ाकसे कूद पड़ा,

कूदतेही जलके राख हो गया. बैतालने देखा और तुरंत अमृत ले आया. और राजाके ऊपर डाला. अमृत पड़तेही राजा राम राम करके खड़ा हो गया. और जितने ब्राह्मण वहां थे सो सब जयजयकार करने लगे. वहां जो राजकन्या थी उसने आतेही [redacted]

जैसा साहस तुमने किया वैसा न हमने आँखोंसे देखा न कानोंसे सुना. इस कलियुगमें तुम कोई अवतार हो. एक जबानसे हम कहाँ तलक तुम्हारी सिफत करसकें ? एक शिर है हमारा हम तुम्हे क्या चढ़ावें ? तुम्हारे पराक्रमपर करोड़ों शिर सदके हैं. जो नियत हमने कीथी सो तुमने पूरीकी, इसका भरोसा हमें न था कि यह इरादः हमारा पूरा होगा. राजकन्या हाथ जोड़कर राजासे कहने लगी–महाराज ! मेरा यह महा-दुःख आपने छुड़ाया. नहीं तो मेरे बापने ऐसा पाप किया था कि आपतो नरक भोग करता और मैं सारी उमरभरही अन-व्याही रहजाती. इतनी कथा कह प्रेमावती पुतली बोली कि सुन राजा भोज ! ऐसा पराक्रम करके उस कन्याको लाया. और उस बिरहीको इसे देते बार न लाया. राजकन्या और सब माल असबाब बिरहीको दे दिया. और आप खालीं हाथोंसे अपने मंदिरमें आ दाखिल हुआ. और तू विद्यार्थी है ऐसा साहस तुझसे न होसकेगा. यह सुनकर राजाने हैरान होकर शिर नीचे कर लिया. वह साअतभी इसी तरह गुजरी. फिर दूसरे दिन राजा भोज जब सिंहासनके पास आया और चाहा कि बैठें. तब **पद्मावती–**

ग्यारहवीं पुतली–

बोली–कि, हे राजा भोज ! पहले मुझसे कथा सुनले. पीछे

इस सिंहासनपर पांव दे. एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य उज्जैन नाम नगरीको गया. और अपने सब आदमियोंको बिदा कर आप वहां रातको रहा. सोता था कि उत्तर दिशाकी ओरसे एक रंडी हाय मार उठी और पुकार पुकार कहने लगी कि कोई ऐसा है कि मेरी आकर खबर ले. इस पापीसे मुझे बचावे. और जीवदान दे. दममें मरी मरी कारती थी. और दम चुप हो जाती थी. उसकी आवाज सुनकर राजा चौंक पड़ा. और ढाल तलवार हाथमें ले अँधेरी रातमें अकेला उठ चला. किसीको खबर न हुई. जब बनमें राजा पैठा वह सुंदरी फिर रो रो पुकार उठी कि राजा वहां जा पहुँचा. और देखा कि वहां एक देव उस स्त्रीसे रति माँगता है और वह नहीं मानती, तब शिरके बाल पकड़ पकड़कर जमीनपर दे दे पटकता है. तब राजाने कहा अय पापी! तू इस स्त्रीको क्यों मारता है? नरकसेभी नहीं डरता? राजाकी बात सुनकर फिर वह उसे मारने लगा. राजाने कहा तू इसे छोड़दे नहीं तो अभी मैं तुझे मारताहूं. यह राजा विक्रमका बचन सुनकर वह सन्मुख होगया. और गुस्सेसे शोककर बोला या तू भाग! नहीं मैं तुझे खाताहूं? और तू कौन है? जो यहां आनकर बात करता है? तब राजाने गजबमें आकर एक तलवार ऐसी मारी कि, शिर उसका

धडसे जुदा होगया. रुंड मुंडसे दो बीर निकले और राजाके दोनों हाथोंमें लिपट गये तब राजाने धीरज धर छल बलकर उनमेंसे एकको मारा. दूसरा रैन भर लड़ता रहा. और भोर होतेही भाग गया. दैत्य जब भाग गया तब उस रंडीसे राजाने कहा अब तू जल्दी मेरे साथ चल और कुछ जीमें अंदेसा मतकर. वह राक्षस मेरे डरसे भाग गया. फिर न आवेगा. तब वह सुंदरी बोली कि, सुनो भूपाल ! जो मैं सात द्वीप नौखंड पृथ्वीमें जहां भागकर छिप रहूंगी उससे बचने न पाऊंगी. वह आकर ले जायगा. उसके बिना मरे जिंदगी न होगी. उसके पास एक मोहनी पुतली है वह उसके पेटमें रहती है जहां मैं छिपूंगी उसके बलसे वह ढूँढ़ निकालेगा. और उस पुतलीमें यह ताकत है कि एक देव मरनेसे दूसरे चार देव बना सकती है. यह बात उसकी सुनकर राजा उसी बनमें छिप रहा. सुबह होते वह देव आया उस औरतसे फिर ख्वाहिश करने लगा. जब उसने न माना और बाल शिरके पकड़ जमीनपर पडकने लगा तब वह धाड़ करने लगी उसकी आवाज सुनतेही राजा निकट आया और उससे लड़नेको तैयार हुवा तब देवभी रंडीको छोड़ राजाके सामने होगया. चाहे कि राजाको मारें. इतनेमें राजाने ऐसा एक खांड़ा मारा कि धड़से शिर अलग होगया. उसके धड़से वह मोहनी निकली और अमृत

लेने चली, तब राजाने बीरोंको आज्ञाकी कि वह कहीं जाने न पावे. तब वीरोंने दौड़कर उसकी चोली पकड़ खेंच लिया. और राजाके सामने लाकर हाजिर किया. राजाने उससे पूंछा कि तू चंपकबरनी, मृगनयनी, पिकबयनी, गजगामिनी, कटिकेसरी, चंद्रमुखी, नख शिखसे ऐसी कि, हँसीसे तेरी फूल झड़ते हैं और सुगंधसे भौंरे मड़राते हैं. बतला कि देवके पेटमें क्योंकर रहीथी ? तब वह बोली, सुन राजा ! पहले मैं शिवगण थी. पर एक आज्ञा शिवजीकी मैं चूक गई तिससे उन्होंने मुझे शाप दिया. और मैं मोहिनीरूप होगई. और इस दैत्यने महादेवकी बहुत तपस्या की, तब सदाशिवने मेरे तईं उसको बकसीस दिया. फिर उस पापी-ने मुझे लेकर अपने पेटमें भर रक्खा. तबसे मैं मोहिनी कहलाई. पर शिवकी आज्ञा थी कि इसकी सेवा कीजियो. और जो यह कहै सो मानियो. यों इसके बश होकर मैं रहतीहूं. मेरा माजरा जो था सो मैंने आपसे कहा. अब ये बीर मुझे काबू कर तुम्हारे पास लाये हैं. और आदमीको इतनी कुदरत नहीं थी बल्कि जो तुमभी बहुतेरा उपाय करते तोभी तुम्हारे हाथ न आती. अब राजा ! मैं तुम्हारे बशमें हूं और मैं मोहनी हूं इसवास्ते तेरेपास रहूंगी, ज्यों महादेवके पास पार्वती. यह कहकर बचन दिया. एक वह मोहनी और दूसरी वह रंडी. जिसे देवसे छुड़ाया था ये दोनों राजाके साथ हुईं. ये बातें कर पद्मावती पुतली

बोली सुन राजा भोज ! उस मोहनीसे राजा विक्रमादित्यने गांधर्व विवाह किया. और जो कुछ आगे राजाके पराक्रम हैं सो मैं कहती हूं कान देकर, सुन वह रंडी दैत्यसे जो लीथी उसे राजाने यों कहा सुन सुंदरी ! मैं तुझे पूंछताहूं कि देवने तुझे कहां पाया था ? कौन द्वीप और कौन नगर तेरा ? और कौन बाप है तेरा ? नाम ले उसका अपना सब व्यौरा मुझसे कह और सब बातें तुर्त बताव ? अब देर मतकर. सुनकर तेरी अवस्था जैसा तू कहेगी वैसाही मैं विचार करूंगा. वह नारी बोली–महाराज ! अब मेरी कथा सुाने, कि किस्मतका लिखा मिटता नहीं है और जो कुछ विधातानें कपालमें लिखा है वह इन्सानको भुगतना होता है. एक ब्रह्मपुरी है समुद्रके पास जिसे सिंहलद्वीप कहते हैं. वहांके ब्राह्मणकी मैं बेटी हूं. एक दिन अपनी सखियोंके संग तालाबपर स्नान करनेको गई थी और वह तालाब ऐसा था कि, घने घने दरख्तोंसे सूर्य वहां नजर न आता था. वहां सखियोंके साथ मैं स्नान पूजा करके घरको आतीथी. कि सामनेसे यह राक्षस नजर आया. और मुझे देखकर वहांही रति मांगने लगा. ज्यों ज्यों मैं न मानती थी त्यों त्यों मुझे बहुत दुःख देता था. मैं अनव्याही अपना धर्म क्यों कर गँवाती कितने दिनोंसे मुझे सताताथा और नरकमें पड़नेसे डरता न था. राजा ! अब तूने धर्म रखलिया, और

मेरे कुलकीभी लाज रक्खी. तुझे संसारमें यश और कीर्त्ति होवेगी जैसा तूने मुझपर उपकार किया, वैसाही मुझसे आशीसले. हजार बरसतक जीता रह और किसीके वश न पड़. दिन दिन सत और तेज बढ़ते जायगा. साहस तेरा ऐसा होवेगा कि तुझे कोई न जीते. इतनी आशीस जब वह दे चुकी तब उसे बेटी कह राजाने अपने पास तख्तपर बिठा लिया और मोहनीकोभी उठा बेतालको हुकुम किया कि हमारे नगरको लेचलो. तब बेताल सबको लेकर उड़े, पलक मारते महलमें ला दाखिल किया. राजाने आतेही दिवानको याद किया. वह मंत्री आकर हाजिर हुवा. राजाने कहा कोई पंडित सुज्ञानी ब्राह्मण ढूँढ़कर ले आओ जलदी. प्रधानने आज्ञा पाय नगर नगर ब्राह्मणोंको भेज एक ब्राह्मण सुंदर विद्वानको बुलाया. मार्कंडेय नाम वह ब्राह्मण जब आया, तब उसे ले मंत्री राजसभामें लाया. राजाने उससे हाथ जोड़कर कहा कि महाराज! एक ब्राह्मणकी कन्या हमारे यहां है. उससे हम तुमको दिया चाहतेहैं तुमभी यह बात कबूल करो. ब्राह्मण बोला, वह कन्या हमको दो और जगतमें तुम यश, धर्म और बड़ाई लो. राजाने यह बात सुनतेही ब्राह्मणको तिलक दे सादीके सामानका दान दहेज तैयार किया. फिर ब्राह्मण बुलाकर संकल्प कर उस कन्याका कन्यादान किया और उसको बहुत कुछ दिया.

इतनी बात कहकर पुतली कहने लगी कि सुन राजा ! वीर विक्रमादित्यने सोच कुछ न किया और लाखों रुपयोंका दान दहेज दे एक पलमें ब्राह्मणके हवाले किया. तू इस लायक नहीं है इस सिंहासनपर बैठनेसे डर. ऐ राजा भोज ! तू गुण-ग्राहक है दानी और साहसी नहीं, तू नाहक हिर्स कर्ता है ? यह सुनकर राजा भोज मनमें पछताकर चुप हो, रहगया. दूसरे दिन सुबह होतेही फिर सिंहासनके पास आया. और बैठनेको तैयार हुवा . जब उसने पांव बढ़ाया तब **कीर्तिवती**

बारहवीं पुतली–

बोली--सुन राजा भोज ! एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य अपनी मजलिसमें बैठकर कहने लगा कि, कलियुगमें औरभी कहीं कोई दाता है. ऐसी बात सुनतेही एक ब्राह्मण बोला कि, सुन राजा! प्रजाके हितकारी तेरे बराबर साहसी और दानी कोई नहीं. पर एक बात मैं कहना चाहताहूं शर्मसे कह नहीं सक्ता. राजाने कहा कि सत्य बात कहनेमें लाज काहेकी है? तुम हमारे आगे साफ कहो ? हम उस बातको बुरा न मानेंगे. वह ब्राह्मण बोला एक राजा समुद्रके किनारे रहता है और सदा धर्मकार्य कर्ता है. जब वह सबेरे स्नान किया चाहता है तब लाख रुपये दान देता है और जल पीता है. यह तो मैंने एक उसके दानकी रीत कही

औरभी बहुत कुछ दान करता है. और ऐसा राजा धर्मात्मा उसके सिवाय दूसरा हमने नहीं देखा. यह बात सुनकर राजाके जीमें इच्छा हुई कि, उस राजाको चलकर देखिये. यों आपनें जीमें बिचारकर बैतालोंको बुला तख्तपर सवारहो समुद्रके किनारेचला और जो उसके नगरके पास पहुँचा. सिंहासनसे उतर बैतालोंको कहा कि, अब तुम देशको जाओ और हम इस राजाकी सेवा करनेपर तैयार हुए. तुम वहांसे हमारी खबर लेते रहियो. तब बैताल बोला इसका विचार क्या है ? राजाने कहा तुम्हें इस बातसे क्या काम है ? जो हम तुम्हें कहते हैं सो करो. यह बात सुनकर बैताल अपनें नगरको आये और राजा पाँओं पाँओंसे शहरमें दाखिल हुवा. नगरमें फिरता हुआ राजाके द्वारपर जाकर पहुँचा. और द्वारपालोंसे कहा अपने स्वामीको समाचार दो कि कोई विदेशी तुम्हारी सेवा करनेके लिये खड़ा है. इसकी बात डेवढ़ीदारोंनें सुनकर राजासे अर्ज की, महाराज सुनतेही हँसता हुआ आपही बाहर निकल आया राजाको देखकर ! विक्रमने जुहार किया. तब उसने पूंछा कि क्षेम कुशलसे हो ? तब विक्रम बोला कि आपकी दयासे. फिर राजाने कहा तुम किस देशसे आये हो ? और तुम्हारा नाम क्या है ? और तुम्हारा अर्थ क्या है ? सो सब सुनाओ ? यह बोला सुनो महाराज ! मेरा नाम विक्रम है. राजा विक्रमके

देशका मैं रहनेवाला हूं. कुछ वैराग्य मेरे जीमें हुआ इससे मैं आपके दर्शनको आयाहूं. अब आपका दर्शन मैंने किया इसीसे सब मेरा सोच बिचार गया. राजा बोला तुम्हें हम क्या रोज करदें. और कितनेमें तुम्हारा निर्वाह होगा ? तब इसने कहा चार हजार रुपयेमें मेरी गुजरान होगी यह सुनकर राजाने कहा ऐसा क्या काम करतेहो जो चार हजार रुपये रोजीना हम तुम्हें देवें. फिर वह बोला जो काम हमसे कहोगे हम वह करेंगे. फिर विक्रम बोला जिस राजाके पास मैं रहता हूं उसकी गाढ़ी भीड़में काम आता हूं. और इस तरहसे चार हजार रुपये लेकर राजा वहां रहनें लगा. यह बात पुतलीने समझा राजा भोजसे कहा जब इस तरहसे नौदस दिन गुजर गये तब राजा वीरविक्रमादित्यनें अपने मनमें विचारा कि, जो लाख रुपये रोज दान करता है उसका नित्यनेम क्या है ? इसे मालूम किया चाहिये. किस देवताका इसे बल है ? इसी सोचमें रहने लगा. एक दिन क्या देखता है कि, दोपहर रातके समय राजा अकेला बनको जाता है यह देखतेही उसके पीछे होलिया आगे आगे राजा और पीछे पीछे विक्रमादित्य इस तरहसे शहरके बाहर निकल एक बनमें पहुँचे. वहां जाकर देखा तो एक देवीका मंदिर है. और उस मंदिरके बाहर कड़ाह चढ़ा है और उसमें ब्रह्मकी आगसे घी औटता है. वह राजा तालाबमें

स्नान करके देवीका दर्शन कर उस कड़ाहमें कूद पड़ा और पड़तेही भून गया. वहां चौंसठ योगिनियां आनके राजाके उस तले हुए बदनको नोचकर खागईं इतनेमें कंकालिन अमृत ले आई और उसके हाड़पंजरपर छिड़का तब वह राजा राम राम करके उठकर खड़ा हुवा. तब देवीने मंदिरमें लाख रुपये दिये और वह लेकर अपने घरको आया. तब योगिनियां अपने धामको गईं. यह तमाशा देखकर राजा विक्रमादित्यभी उसी कड़ाहमें कूद पड़ा और उसी तरह जल गया. फिर तुर्त योगिनियां दौड़ीं और उसकोभी खागईं और उसी तरह कंकालिनने अमृत ला उसपरभी छिड़क जिला दिया. मंदिर-मेंसे उसेभी लाख रुपये देवीने दिये. रुपये ले दुबारा फिर वह कड़ाहमें गिरा. योगिनियां फिर जला भूना गोस्त बदनका नोचकर खागईं और कंकालिननें अमृत छिड़क जिलादिया. फिर देवीने लाख रुपये दिये गरज वह इसी तौर सातबेर गिरा. और लाख लाख रुपये हरबेर पाया. जब आठवीं दफह इरादः गिरनेका किया. तब देवीने आनकर उसका कर पकड़ा और कहा कि मांग जो तुझे चाहिये ? तब राजा विक्रम हाथ जोड़कर बोला कि, मैं मांगूं जो मांगा पाऊं ? देवीने कहा जो तेरी इच्छामें आवे सो तू मांगले मैं तुझे दूंगी. राजाने कहा देवी ! जिस थैलीमेंसे तुमने रुपये दिये हैं. वह थैली मुझे

कृपा कर दीजिये. यह सुनतेही उसने वह थैली दी. वह खुश हो उसी राजाके स्थानपर गया. और दूसरे दिन रातको फिर वह राजा बनमें गया. और वहां उसनें देखा कि न देवीका मंदिर है और न कड़ाह है. स्थान भंग पड़ा है. यह दशा वहांकी देख सोचमें डूब गया. फिर जो होश आया तो हाय मारके रोनें लगा. आखिरको लाचार हो उलटा फिर अपनें मंदिरको आय उदास होकर सोरहा. भोर हुवा जो सभाके लोग आये और राजाको देखा कि, बिह्वल पड़ा है. न हँसता है, न किसीसे बोलता है, बल्कि जो कोई राज्यकी बात करता है; वह सुन-कर मुँह फेर लेता है. यह हालत राजाकी देख दीवानने बिनती किया कि, महाराज! आपका मन मलीन होनेसे सारी सभा उदास होरही है. राजानें यह जवाब दिया. कि आज तुम बैठकर दरबारका काम करो मेरा शरीर माँदा है. तब प्रधान बैठ राजकाजकी बातें करने लगा. और जो कोई आताथा सो अपने मनमें जो चाहताथा सोई बिचारताथा. कोई कहता था कि, राजा बीमार हो गया है. कोई कहता कि राजाको कोई मोह गया है. और कोई कहताथा कि राजा है नहीं. पर जो इसकी अवस्था थी वो किसीको मालूम न थी. इतनेमें अपनें समयपर राजा बीर विक्रमादित्यभी गया और पूंछा कि तुम्हारे मनमें क्या दुःख है? क्योंकि मैंने

तुमसे प्रतिज्ञा की थी कि, मैं तुम्हारी मुश्किलके वख्त काम आऊंगा. सो मेरा बचन क्या आप भूल गये? मेरे आगे अपनी सब अवस्था ब्यौरेवार कहिये. तब राजा बोला कि मैं तेरे आगे क्या अपनी बात कहूं पर एक मेरे जीमें है कि अब अपना प्राणघात करूंगा. विक्रमने कहा पृथ्वीनाथ! एक बेर मेरे आगे अपनें मनकी व्यथा कहिये- और पीछे अपनें मनमें जो करना होय सो करो. राजानें कहा एक देवी मेरे पास थी सो मैं नहीं जानता वह कहां गई. लाख रुपये रोज वह मुझे देतीथी. और वे लाख रुपये मैं नित्य दान पुण्य करताथा. और अब मुझे बड़ा कष्ट हुवा है. मेरी नित्यक्रिया निबहेगी नहीं. इसवास्ते अब मैं जान दूंगा. और ऐसा मैं किसीको नहीं देखता कि जिससे मेरा नित्य नेम चले. और जो धर्म पुण्य न रहेगा तो मेरा जीना संसारमें अकारण है. यह बात उसकी विक्रम सुनतेही बोला ऐसा काम मैं करूंगा. ऐसा बोलकर वह थैली हाथमें दी. और कहा महाराज! स्नान ध्यान कर नित्यधर्म कीजिये. और थैलीसे जितनें रुपये चाहोगें वे खर्च करोगे. कम कभी न होंगे. यह बात सुनतेही राजा खुश होकर उठ बैठा और थैली हाथमें ले प्रधानको बुला उसमेंसे रुपये निकाल प्रधानको दिये. और खर्च करनेका हुक्म किया. और कहा कि जितने ब्राह्मण

सदा दान पाते हैं उन्होंको उसी तरहसे दो. दीवान मुवाफिक हुक्मके अपने काममें मशगूल हुआ. और राजा बीर विक्रमादित्यनें कहा महाराज ! मुझे आज्ञा दीजिये तो मैं अपनें देशको जाऊं ! बहुत दिन गुजरे हैं. तब वह राजा बोला हम तुम्हारे कहां तक गुण मानेंगे. तुमनें हमें जीवदान दिया है. फिर कहा जो तुम अपने देश पहुँचोगे. तब संदेसा हमें भेज देना कि हम क्षेम कुशलसे पहुँचे. और ठीक अपना ठिकाना बता जाओ. जो हमारा पत्र तुम्हारे पास पहुँचे. तब उसने कहा कि हे राजा ! मैं राजा बीर विक्रमादित्य हूं. अंबावती नगरीमें राज्य करता हूं. तुम्हारा नाम, और यश सुनकर दर्शनके लिये आयाथा. सो तुम्हें देखा. और मेरा चित्त प्रसन्न हुआ. तुम अच्छी तरहसे राज करो और हमें बिदा दो. तुम्हारा साहस बल धर्म हमनें देखा. यह सुनतेही वह राजा उसके पांओंपर गिरपड़ा और हाथ जोड़कर कहनें लगा कि महाराज ! बड़ा जपराध हुआ. मैंनें तुम्हारा मर्म न जाना. तुमने मेरी सेवा की सो तुम अपनें जीमें कुछ न लाना. और जैसा धर्म मैंने आपका सुनाथा वैसाही देखा. और धन्य है तुम्हारे ताईं और तुम्हारे धर्म साहस और पराक्रमको, यह कह राजाको तिलक दे बिदा किया. राजा बीरोंको बुला सवार हो अपने अगरमें आया. इतनी बात कीर्तिवती पुतली

कहकर राजा भोजको समझानें लगी कि सुन राजा भोज ! राजा बीर बिक्रमादित्यका साहस ! ऐसी बस्तु पाकर देते कुछ बिलंब न लाया और अपनें जीमें न पछताया. और जैसा साहस राजानें किया वैसा सुनकर कोई न करता तू किस गिनतीमें है ? यह बात सुन राजा भोज चुप हो रहा. पुनि दूसरे दिनके प्रभात समयमें राजा उठ तैयार हो सिंहासनपर बैठनेको गया. और मनमें इरादा बैठनेका करताथा फिर झिझक कर रह जाताथा. इतनेमें त्रिलोचनी—

तेरहवीं पुतली—

बोल उठी—सुन राजा भोज ! एक पुरातन कथा मैं तुझे सुनाऊं कि इस सिंहासनपर वही चढ़ेगा,जो राजा बिक्रमके समान पराक्रम करेगा. तब राजाने कहा कह ? सुंदरी ! बिक्रमका बल और कथा सुननेको मेराभी मन चाहता है. पुतली बोली राजा ! कान देके सुन. एक दिन राजा बीर बिक्रमादित्य शिकार खेलनेको चला. और साथमें जितने मुसाहिब रजपूत बली थे वेभी सजकर तैयार हो आये और एक एककी सवारीमें हजार हजार कोसके धावेका तुरंग था. राजा अपने घोड़ेपर सवार था. और वह गोया छलावा था. राजकुमार अपने शिकारी जानवर बाज, बहरी जुर्रा, शाहीन, कूही, लरगड़, मँगवा मँगवा अपने अपने हाथोंपर लेले साथ हुए. और

राजानेभी एक बाज अपने हाथपर बिठा लिया. मीरसिकारोंको हुक्म पहुँचा कि, जिस जिसके पास जो जो शिकारी जानवर तैयार हैं सो लेकर रिकाबमें हाजिर होवें. इस तरह बन उसने एक बनकी राहली और वहां जाकर किसीने बाज और किसीने बहरी और किसीने कुही, किसीने शाईन उड़ाई और अपने अपने जानवरोंके पीछे घोड़े बढ़ाये. और उधर राजानेभी जितने मीरशिकार थे उन्हें हुक्म किया कि इस जंगलमें सब शिकार करो, मैं तमाशा देखूंगा. जो शिकार कर लावेगा वह इनाम पावेगा. और जो शिकार न कर लावेगा सो नौकरीसे दूर होवेगा. यह बात सुनतेही जितने मीर शिकार थे उन सबोंने उस बनमें चारों तरफ जानवर छोड़े और उधर हुक्म बहेलियोंको किया कि, तुमभी शिकार करो. इस तरह सब शिकार करते थे. और ला लाके राजाको गुजराते थे. वह खड़ा तमाशा देख रहाथा. फिर उसने एक परिंदापर बाज उड़ाया और आप उसके पीछे लगा. जिधर जिधर वह बाज जाताथा राजाभी पीछा किये जाताथा. इसमें कोसों निकल गया. देखे तो शाम होगई तब याद आई और फिरकर पीछे देखा तो वहां कोई आदमी नजर न आया. और वह तमाम फौज राजाकी शाम हुएपर राजाको ढूँढ़ शिकार लेले आनकर नगरमे दाखिल हुई और वहां सने जंगलमें राजा भटकता फिरता था. कहीं राह

न पाताथा. जब अँधेरा होगया और रात बहुत होगई तब एक नदीके किनारेपर जा पहुँचा वहां उतरकर अपने हाथ जीन- [illegible] क्या है कि, वह नदी बढ़ती आती है. और यह हटने लगा. गरज ज्यों ज्यों राजा हठता जाताथा त्यों त्यों वह बढ़ती जा-तीथी. फिर जो निगाह की तो यह देखा कि नदीकी धारमें एक मुर्दा बहा चला आता है. और उसके साथ एक बैताल और एक योगी खैंचा खैंची किये हुए आते हैं. और आपसमें झगड़ते हैं. योगी बैतालसे कहता है कि, तूने बहुतसे मुर्दे खाये हैं और यह मैंने अपने अवसरपर पाया है. तू छोड़दे मैं उसे लेजाकर अपना योग कमाऊंगा. यह सिद्धि मैंने तुझसे पाई. यह सुन बैताल बोला–भाई ! मैं अयाना नहीं हूं जो तू मुझे फुसलावे. क्योंकर मैं अपना आहार तुझे दूं. इसी तरह दोनों आपसमें झगड़तेथे और कहतेथे, कोई तीसरा पुरुष इस वख्त ऐसा नहीं कि हमारा न्याय चुकावे. फिर योगी कहने लगा कि बैताल तू मेरी बात सुन कल प्रभातको हम तुम सभाको जावें और जो सभामें न्याय चुके वही तूभी प्रमाणकर और मैंभी करूंगा. इतनेमें एककी दृष्टी राजाकी ओर जा पड़ी, देखकर दोनों हँसे. और कहने लगे कि, वह कोई मनुष्य नदीके किना-रेमें नजर आता है. वहां चलो कि वह अपना न्याय निबेड़े.

यह कहकर मुर्दा लेकर दोनों किनारेपर आये. राजाको तमाम किस्सा सुनाकर कहा कि, महाराज ! तुम धर्मात्मा हो इसवास्ते धर्म विचारके हमारा न्याय करो. योगी बोला–महाराज ! मैं कहताहूं सो आप ध्यान लगाकर सुनिये. इस बैतालने बहुत मुर्दे खाये. और यह मुर्दा मैंने अपने दांवपर पाया है. और यह नाहक मुझसे रार करता है ? और कहता है कि, मैं तुझे न दूंगा. मैं इससे बिनती करके माँगता हूं और कहता हूं कि गोया यह प्रसाद मैंने तुझसे पाया. यह नहीं मानता. तब राजाने बैतालको पूंछा कि तू अपनें भी मनकी मुझसे बात कह ? वह बोला–महाराज ! यह योगी बड़ा मूर्ख है. जो इसने मुझसे राहमें झगड़ा लगाया मैं हजार कोशसे इस मुर्देको ले आयाहूं और यह मुझसे मांग रहा है. मैं इसे क्यों कर दूंगा. इस मुर्देके लिये मैंनें बहुत कष्ट किया. यह नाहक देखके मन चलाता है. मैं क्या करूं कि जो जो मैंनें इसके वास्ते दुःख उठाया है और आहारके समयमें इस दुष्टने आन सताया. और इसका न्याय तेरे हाथ है, क्योंकि तू धर्मात्मा राजा है, जो तू कहेगा सो मुझे प्रमाण है. तब राजा कहने लगा कि तुम दोनों ही बड़े हो इस वास्ते यह प्रसाद हमें दो. कुछ तुमसे हम मांगते हैं. तब तुम्हारा न्याय हम चुकावेंगे. यह सुन योगीने हँसकर झोलीमेंसे एक बटुआ निकाल राजाके हाथ देकर कहा–राजा ! तुझे जितना

द्रव्य अभीष्ट होगा इतना यह बटुआ देगा. और इसमेंसे कभी कम न होगा. पुनि बैतालने कहा राजा ! मैं एक मोहनी तिलक तुझे देताहूं इसे जब तू घिसकर टीका देगा, तब सब तुझे दबेंगे तेरे सामने कोई न होगा. ये दोनोंनें प्रसाद राजाको दिया. उसने कर ओटकर लिया और बोला कि सुन बैताल ! तू इस मुर्देको छोड़दे और मेरे घोड़ेको खा, यह मुर्दा योगीके हवाले करदे. क्योंकि तू भूखा न रहे और उसका कामभी बंद न होय. यह सुनतेही बैताल उस घोड़को खागया और योगी मुर्दा ले अपना मंत्र साधने लगा. राजा बीरोंको बुलाय उनपर सवार हो अपने देशको चला. रास्तेमें एक भिखारी सन्मुख चला आताथा. उसने देखा कि शकबंधी राजा आता है, डरते डरते उसने सवाल किया कि महाराज ! आपके नगरमें मैं बहुत दिन रहा लेकिन कुछभी अर्थ मेरा सिद्ध न हुवा. अब मैं कुछ तुमसे माँगता हूं, मेरे तईं दीजिये. यह सुनतेही राजाने वह बटुआ उसके हाथ दिया. और उसका भेद बताया. वह आशीस दे अपने घरको गया और राजाभी अपने मंदिरमें आया. इतनी बात कह त्रिलोचनी पुतली बोली–सुन राजा भोज ! ऐसा दानी और ऐसा साहसी जो होगा सो ही इस सिंहासनपर बैठे नहीं तो पातक है. उसके दूसरे दिन राजा सबेरे उठ स्नान ध्यानकर दरबारमें आन बैठा. और दीवान मुत्सद्दियोंको बुलाकर कहा।

कि आज मेरा चित्त बहुत प्रसन्न है. जल्दी चलकर सिंहासनपर बैठूंगा. इतनी बात कह वहांसे उठ सिंहासनके पास आकर गोदान कर ब्राह्मणोंको वृत्ति कर दी. फिर गणेशको मना सिंहासनपर बैठनेको पांव बढ़ाया कि इतनेमें त्रिलोचना नामक

चौदहवीं पुतली–

बोली हे राजा भोज! पहले कथा सुन जो मैं कहतीहूं पीछे सिंहासनपर बैठ. यह बात राजानें सुनतेही पांव खैंच लिया. और सिंहासनके नीचे आसन बिछाय बैठगया. तब पुतली बोली कि, राजा! सुन एकदिन राजा बीर विक्रमादित्यने अपने प्रधानको बुलाकर कहा कि मैं यज्ञ करूंगा जिसमें पुण्य हो और आगेका निस्तार होवे. दीवानने सुनते ही देश देशको नौता भेजा जहां तलक राजा प्रजा थे उन्हें बुलाया. कर्नाटक, गुजरात, काश्मीर, कन्नौज, तिलंगान इन नगरोंको भी नौता भेज जितनें ब्राह्मण थे उन्हें बुलाया और सातों द्वीपोंको नौता भेजा वहांके राजाओंको तलब किया, फिर एक बीरको पातालके राजाके पास नौता भेज उसे बुलाया. और दूसरे बीरको स्वर्गको रवाना कर देवताओंको नौता भेज बुलाया. और एक ब्राह्मणको बुलाकर कहा कि, तुम समुद्रके पास जाकर हमारा दंडवत् कहो. और निवेदन करो कि, राजा विक्रमादित्यने यज्ञका आरंभ किया है और आपको बहुत नम्रता कर बुलाया

है. वह ब्राह्मण तुर्त्त वहांसे चला और कितने एक दिनोंमें साग-रके तीरपर जा पहुँचा और वहां देखता क्या है कि, न कोई मनुष्य है और न कोई वहां पशु पक्षी है. केवल जलही जल नजर आता है, यह देख ब्राह्मण अपने जीमें चिंता कर कहने लगा कि, राजाका संदेशा किससे कहूं ? यहां तो कोई जीव दिखाई नहीं देता और है तो जलही जल है. ऐसा अपने मनमें विचारकर वह पुकारा कि राजा वीरबिक्रमादित्यका नौता मैं दिये जाताहूं. और तुम जल्दी पहुँचना. इतना कह वहांसे वह जब चला तब रास्तेमें एक बूढ़े ब्राह्मणके रूप समुद्र नजर आया. और उसने पूंछा कि बीर विक्रमादित्यनें हमें किसवास्ते बुलाया है ? तब उसने कहा कि राजाके यहां यज्ञ है ? और तुम्हें जरूर बुलाया है. तब समुद्र बोला कि, मैं चलूंगा पर मेरे चलनेसे जल जो यहांसे बढ़ेगा तो कई नगर डूब जावेंगे. इस लिये मेरी तरफसे तुम राजाको विनती कर कहना कि, मेरे न आनेका कुछ पछताव न करना मैं इस सबबसे पहुँच नहीं सक्ता. तब समुद्रने ब्राह्मणको पाँच लाल दिये. और एक घोड़ा राजाको सौगत भेजा. और आप वहीं रहा. तब ब्राह्मण रुख-सत हो राजाके पास गया. वे पांच रत्न राजाको दिये और घोड़ा सामने खड़ा किया फिर सब वहांका वृत्तांत कहा. तब राजाने प्रसन्न हो ब्राह्मणसे कहा कि यह लाल और घोड़ा

तुमलो मैंनें तुम्हें दिया है. यह कहकर त्रिलोचना पुतलीने राजा भोजको समझाया कि सुन राजा भोज ! ऐसा पदार्थ राजा विक्रमने देते विलंब न किया. वे लाल और घोड़ा कई राजोंकी कीमतके थे ऐसे दानी राजाके आसनपर बैठनेके योग्य तू नहीं, पंडित तू है पर माया तुझसे छूटती नहीं. वह दिनभी योंहीं गुजर गया. दूसरे रोज राजा फिर सिंहासनपर बेठनेको तैयार हो गया. तब **अनूपवती.**

पंद्रहवीं पुतली–

कहने लगी–सुन राजा भोज ! राजा वीर विक्रमादित्यके गुण कहनेमें नहीं आसक्ते जो बात कहनें योग्य होवे तो कहिये. अयुक्त कहते हुए जी शक खाता है. राजा बोला तू कह ? मेरा जी सुन्नेको चाहता है. जैसी बात हुई है वैसी कह इसमें तुझे दोष नहीं. तब **अनूपवती** बोली अच्छा अब मैं कहती हूं तुम कान देकर सुनिये. एक दिन राजा बीर विक्रमादित्य सभामें बैठा था. और कहींसे पंडित आया. उसने आकर राजाके सन्मुख एक श्लोक पढ़ा वह सुनकर राजा मनमें बहुत प्रसन्न हुवा. इस श्लोकका मुद्दा यह था कि, मित्रद्रोही और विश्वासघाती जो हैं सो नरक भोग करैंगे. जब तलक चंद्र और सूर्य हैं. यह सुनकर लाख रुपये राजानें उस ब्राह्मणको दान दिये और कहा कि इसका अर्थ मुझे समझाकर कहो कि क्या वृत्तांत है

इसका ? तब वह ब्राह्मण कहनें लगा कि, एक राजा बड़ा अज्ञानी था. उसकी रानी जो प्राणकी आधार थी. पलभरभी राजा उसे आपसे जुदा न करता था. जब सभामें बैठता था तब साथही जांघपर ले बैठता था. और जब शिकारको जाता था तब दूसरे घोड़ेपर बिठा साथले लेता. गरज जागना, सोना, खाना, पीना, एकही साथ था. पर ऐसा मूर्ख था कि; किसीसे लजाता न था. रानीको दृष्टिमें रखता था. एक दिन उसके प्रधाननें अवसर पाकर हाथ जोड़ और शिर नवा कहने लगा कि स्वामी ! जो मुझे जीव दान दे तो मै एक बात कहूं तब राजा बोला अच्छा. वह बोला कि महाराज ! रानीके संग आप शोभा नहीं पाते. राजकुलकी आन और मर्याद रहती नहीं. आपको देश देशके राजा हँसते हैं, और कहते हैं कि, ऐसी सुंदरी राजाके मनमें बसी है कि पलक ओटभी नहीं करता. एक मेरी बात मानिये. जो आपको वह बहुत प्यारी है तो एक चित्रपट लिखवाइये और अपने पास रखिये. इसमें लोक निंदा न करेंगे. यह बात प्रधानकी राजाके मनमें भाई और कहा अच्छा चित्रकारको बुलाकर चित्र लिखालो. मंत्रीनें उसको बुला भेजा. वह तुर्त आकर हाजिर हुआ. और वह कैसा था कि ज्योतिषविद्यामें अति निपुण था. और चित्रकारी विद्यामें भी पंडित था. उसे राज्ञाने कहा कि रानीकी

मूर्तिका पट लिख दे जो मैं अपनी नजरमें हमेशः रक्खूं. सुनकर उस शारदापुत्रने मस्तक झुकाके कहा महाराज ! अच्छा. मैं लिख लाताहूं. राजासे रुखसत हो अपने घरको आया. और लिखना आरंभ किया. सो! ऐसा कि जाने अभी इंद्रलोकसे अप्सरा उतरी है. और उस रानीका जैसा अंग जहां था तैसाही उसने अपनी बिद्याके जोरसे लिखा. जब वह तसवीर तैयार हुई तब लेकर राजाके पास गया. और राजाने देखकर बहुत पसंद किया. अंग अंग उसने निरख निरख देखा. नखसे शिख तलक गोया सांचेकी ढाली हुईथी. राजाकी दृष्टि देखते देखते दाहनी जांघपर जा पड़ी तो वहां एक तिल देखा तब बहुतसा अपने जीमें घबराया. और कहने लगा कि इसने रानीकी जांघका तिल क्यों कर देखा हो न होय. रानीसे इसकी मुलाकात है. इस तरह अपने मनमें बिचार क्रोधकर दीवानसे कहा कि इस चित्रकारको तुरत बुलाओ. उसने सुनतेही उसे बुला भेजा. जाना कि राजा खुश हुआ है. सो कुछ इनाम देगा. जब वह आनकर राजाके सन्मुख हुवा. तब बधिकको बुलाकर हुकुम किया कि इसकी गर्दन मारके आंखें निकालके मेरेपास ले आओ. जब वह उसे मारनें चला तब दीवानभी बिदा हो पीछे हो लिया. बाहर निकल जल्लादसे कहा

कि तू इसे मुझे दे और आंखें हरनकी निकालकर राजाके पास लेजा, जल्लादनें प्रधानका कहना किया. और दीवान राजाकी तरफसे बहुत बेइतिबार हुवा कि ऐसा मूर्ख राजा हमनें नहीं देखा. न सुना गुणवंत पुरुषको यों जीता मारे. कदाचित् गुणवान् पुरुषसे कुछ तकसीर हो जाय तो उससे देशसे निकाल देते हैं. यह राजाओंका चलन हमेशासे है. पर कोई राजाओंकी बातपर न भूलै मुँहमें तो उनके अमृत रहता है और पेटमें विषभरे हुए हैं. जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं. इस तरह दीवाननें अपने जीमें बिचारकर डरते डरते उसे छिपारक्खा. और जल्लाद हिरनकीं आंखें निकाल राजाके पास लेगया कि महाराज ! उसको मारकर आंखें निकालकर आपके पास लाया हूं. राजाने हुक्म किया कि इन आंखोंको संडासमें लेजाकर डालदो. इस तरह वह साअत तो यों टलगई. फिर कितने एक दिनोंके बाद उस राजाका बेटा एकदिन अकेला शिकारको गया जाते जाते एक महाबनमें जा निकला. एक शेर वहां नजर आया. बाघको देख वह राजपुत्र बहुत घबराया तब घोड़ा वहीं छोड़ एक वृक्षपर चढ़ गया. उसके ऊपर जो देखे तो एक रीछ बैठा है. रीछको देखतेही उसके हाथ पांव फूलगये और कांपने लगा. चाहे कि बेहाल होकर गिरें. इसमें वह रीछ बोला कि ऐ कुँवर ! तू अपने मनमें भय मत कर. मैं तुझे नहीं खा-

ऊंगा क्यों तू मेरे शरण आया है और मैंने तुझे जीवदान दिया है. अब तू निःसंदेह होकर आनंदसे यहां बैठ. यह बात रीछसे सुन उसके जीमें जी आया. इसमें दिन बीतगया और रात होगई तब रीछ बोला राजपुत्र ! अबतो रात होगई यह नाहर शत्रु हम दोनोंको खानेको बैठा है इस वख्त सोना जीका जियान है. बेहतर यह है कि दोदो पहर रात हम आपसमें जागें. आधी आधी रात जागना. आधीरात तू जाग और आधीरात मैं जागूं. राजपुत्रने कहा बहुत अच्छा. रीछने कहा पहले दोपहर रातको तू सोरह. मैं अब जागताहूं और पिछले दो याम निशाको तू जागियो मैं सो रहूंगा. आपसमें इस तरह दोनोंनें करार किया. और राजपुत्र सोरहा वह रीछ बैठा और चौकी देने लगा. इसमें शेरनें रींछसे कहा कि तू मेरी बात सुन और अज्ञानी मत हो. यह मनुष्य तो अपना भक्ष्य है तू क्यों विषका बीज बोता है ? इसे नीचे डालदे हम दोनों इसे खाजांय यह आदमी है और हम तुम दोनों बनबासी हैं. हाथका माणिक गिरके हाथ फिर नहीं आता. जब यह जाग उठेगा. और तू सोवेगा तो वह तेरा शिर काटकर फेंक देवेगा. अब यही बेहतर है कि मेरा कहना कर फिर यह अवसर न पावेगा. और आखिरको तू पछतावेगा. रीछने जबाब दिया कि सुन अज्ञानी बाघ ! अपने ऊपर अपराध लेना उचित नहीं. जितना होता है

पाप राजाके मारने और वृक्षके काटने, गुरूसे झूठ बोलने और बन जलाने और विश्वासघात करनेसे, इतनाही होताहै शरणागतको मारनेसे. इन सबका पाप महापाप है. और यह पाप किसी तरहसे छूटता नहीं. इसने मेरी शरण ली है. क्या हुआ ? जो एक जी मैंनें न खाया. तब बाघ खफा होकर बोला कि, तूनें मेरा कहा तो न माना इस वास्ते मैंभी तुझे जीता न जाने दूंगा. इतनेमें रीछकी बारी तो होगई और राजपुत्र जागा, रींछ सोया. वह चौकी देने लगा. इससेभी बाघनें वही बात की कि, भाई ! जो मैं कहूं सो तू सुन. भूलकरभी तू इससे मत पतिया. सोकर सुबहको जब उठेगा तब अलसाकर तुझे खा जायगा. वह मुझसे कह चुका है कि सोकर उठूं तो मैं इसे खाजाऊं इससे यह भला है कि, तू पहलेही इस रीछको गिरा दे. जो मैं इसे खाजाऊं और अपनी राहलूं तू भी सहीह सलामत अपनें घरको जा. उसके प्रबोध देनेसे यह बातोंमें आ गया और उस टहनीको पकड़ ऐसा हिलाया कि जिससे वह रीछ तले गिरपड़े इससे उसकी आँख खुल गई और टहनीसे लिपट कर रह गया. और इससे कहा कि अयपापी ! जो तूने मुझसे सलूक किया उससे मैंने तेरी जान रक्खी और तू मतिहीन मेरे मारनेको तयार हुआ. अब जो मैं तुझे मार कर खाजाऊं तो तू क्या करेगा ? यह बातें रीछकी सुनतेही इसकी जान सूख गई. और

अपनें दिलमें जाना कि, अब यह मुझे मुकर्रर खायगा. इसमें सबेरा होगया. बाघ उठकर वहांसे चला गया रीछनें उसके कानोंमें मूत दिया और कहा तुझे जीसे तो क्या मारूं क्योंकि, अब यहां तेरा कोई बचानेवाला नहीं है. इससे असमर्थ जानकर मैं छोड़ देताहूं. यह कहकर रीछ तो चला गया. और वह गूँगा बहरा हो बहुत घबरा और व्याकुल हो घरमें आया. राजा उसकी दशा देख अपनें जीमें चिंता करने लगा. महलोंमें यह खबर हुई तो रानियां कूक मार मार रोने लगीं. और कहने लगी कि, भगवान्नें यह क्या अयुक्त किया. कोई कहनें लगी कि किसीने इसे छला है तिससे इसकी यह हालत हो गई है. तब राजानें सोचकर दीवानसे कहा कि, जितने गुणी लोग हैं मंत्र-यंत्र जाननेवाले अपने नगरमें उन सबको बुलाकर कुँवरको दिखलाओ. प्रधाननें आदमियोंको भेज सब सयानोंको बुलाया और उनसे कहा जिससे इसे आराम होय ऐसा काम किया चाहिये. तब वे अपने मंत्र यंत्र करनें लगे. जिस कदर कि उन्होंनें उसका उतार किया परंतु कुछभी फायदा न हुवा. तब हारकर उन सबोंनें जवाब दिया कि, हमारी विद्या यहां कुछ काम नहीं करती. जब मंत्रीनें यह देखा कि उन्होंके गुणोंसे उसे कुछ आराम न हुवा, तब राजासे हाथ जोड़ बिनती किया कि महाराज ! मेरे पुत्रकी बहू जो है सो बड़ी गुणवती है. इस

वास्ते आप आज्ञा कीजिये तो मैं उस्के तईं ले आऊं और वह कुँवरको देखे. भगवान् चाहे तो आराम हो जायगा. इसके सिवाय और कुछ यत्न नहीं. राजाने कहा तेरे बेटेकी स्त्री क्या जाने? तब फिर दीवाननें कहा महाराज! वह एक योगीकी चेली है. और उस योगीनें मंत्र, यंत्र, तंत्र, विद्या सब उसे सिखादी है राजानें आज्ञा दी और दीवान सवार हो अपने घरको चला गया और वहां चित्रकारको बुला सब अवस्था वहांकी कही. और कहा कि मैं इस तरहसे राजाको बचन देकर आयाहूं तुम स्त्रीका भेष बनाकर मेरे संग चलो. तब उसनें कबूल किया. और स्त्रीका भेष बन साथ हो लिया. दोनों सवार होकर राजाके पास आये. लोग महलमें उसे परदा करके लेगये दरमियान एक कनात खैंचली. और उस तरफ कनातके उसे बैठाया. राजा और लड़का और दीवान ये तीनों कनातके बाहर बैठे और उसनें कनातके अंदरसे कहा कि कुँवरको स्नान करवा कपड़े बदलवा चौका दिलवा एक पठड़ा बिछवाकर बिठाओ और कुँवरको कहो कि तुम सावधान होकर बैठो और जैसे मैं मंत्र कहुं सो तू कान देकर सुन. बिभीषण बड़ा शूर बीर था और दगा करके रामचंद्रसे जा मिला. उन्होंने रावणका राज सब खराब किया. और अपने कुलका नाश किया. उस लाजसे एक बर्ष तक शिर न उठाया. और अपनें कियेका फल पाया.

कि सब कुल गँवाया. और भस्मासुरने महादेवजीकी तपस्या कर बर पाया ओर उन्हींसेही विश्वासघात किया कि, पार्वतीजीको लेनेकी इच्छा की और उसकाभी फल उसने तुर्त पाया कि क्षण भरमें आपही जलके भस्म होगया. और कुँवर तू मित्र-द्रोही और विश्वासघाती क्यों हुआ है ? सोएहुये रीछको तूने नीचे ढकेल दिया ? उसने तो तेरेपर उपकार किया था. और तूने उसका बुरा बिचारा. पर उसमें तेरा दोष कुछ नही हैं. तेरे पिताका दोष है इस वास्ते कि जैसा बीज होवेगा वैसाही फल होवेगा. यह तुमनें अपने पिताके पापसे दुःख पाया. इतनी बात सुनतेही कुँवर सचेत हो बोल उठा. तब राजा बोला अय सुंदरी ! तु सच कह कि तूनें वह बनका जानवर क्योंकर पहँचाना ? यह उसे सुनकर उसनें जबाब दिया कि राजा ! मैं अपनी पूर्व अवस्था तेरे आगे प्रकट करतीहूं सो चित्त लगाय सुनो. जब मैं अपने गुरुके पास पढ़ने जातीथी तब गुरुकी अति सेवा करतीथी. गुरुनें प्रसन्न होकर एक मंत्र मुझे बताया. वह मंत्र मैंने साधा, तबसे सरस्वती मेरे मनमें बसी है. और जैसे मैंने रानीकी जांघका तिल पहँचाना वैसेही बनके रीछकोभी जाना. यह सुनतेही राजा प्रसन्न हो परदा दरमियानसे दूरकर दिया और कहा कि, तु सच्चा शारद-पुत्र है तेरे गुणको मैंने अब जाना. यह कह राजाने आधा

राज उसे दिया. और अपना मंत्री किया. इतनी बात कह वह ब्राह्मण बोला कि राजा बीरविक्रमादित्य ! यह इस श्लोकका अर्थ है. यह कथा उस ब्राह्मणके मुखसे सुनकर राजा वीर विक्रमादित्यनें उसे हजार गांव वृत्ति कर दिया. यह बात कहकर पुतली बोली कि, सुन राजा भोज ! तुझमें इतना गुण कहां है ? और अब इस नगरमें विक्रमादित्यके समान राजा होता मुश्किल है. मैंने तुझसे यह सच बात कही. और तू इस सिंहासनके योग्य नहीं. ऐसा सुन उस दिनकीभी साअत जाती रही. राजा महलमें दाखिल हुआ और अपने प्रधान और पुरोहितको बुलाके वह हालत कही. दूसरे दिन सुबहको उठ स्नान पूजा कर ध्यानलगा सिंहासनके पास जाकर खड़ा हुवा. और प्रधानको बुलाकर कहा कि, अब मेरा जी चाहता है कि सिंहासनपर आज बैठूं. बेहतरहै कि दुघड़ी अच्छा मुहूर्त इस बख्त मुझे देख दो. तब दीवाननें कहा महाराज ! आपतो बैठियेगा पर ये पुतलियां आप आके रोरो मरेंगी. राजा उठकर खड़ा रहा और सुन्दरवती—

सोलहवीं पुतली—

बोल उठी—सुन राजा भोज! मैं तुझसे विचाकर कथाका अहवाल कहती हूं. उज्जैन नगरीमें छत्तीस कौम और चार जाति बसती थीं. एक वहांकाही नगरसेठ जिसके यहां अति धन था

और बड़ा प्रतापी था नगरके लोगोंको व्यौहार करनेके लिये बहुत माया देता लेताथा. जो कोई उसके पास अपना स्वार्थ विचार कर जाताथा वह खाली फिरकर नहीं आताथा. उसका बेटा रत्नसेन नाम बहुत सुंदर था और अति विद्यावान् माता पिताकी आज्ञामें निशिदित रहता. उस सेठके मनमें आया कि, कहीं अच्छी सुंदरी कन्या ठहरा उसीकी शादी कर दें. ऐसा ठहराय ब्राह्मणोंको बुला देश देश भेजा और कह दिया कि, जहां कहीं अच्छी लड़की ठहरे वहांका टीका लेके तुम आओगे तो बहुत कुछ धन तुम्हें दूंगा. और कुछ रुपये खर्चको दे बिदा किया. ब्राह्मण देश देश ढूँढ़ने लगे. उनमेंसे एक ब्राह्मणनें समाचार पाया कि समुद्रके पार एक सेठ है और उसकी बेटी बहुत सुंदर है उसेभी बरकी तलाश है यह सुनकर एक जहाजपर बैठ समुद्रके पार हुआ. वहां जा सेठका ठिकाना पूँछकर उसके द्वारपर ठहरा. और खबर दी कि उज्जैन नगरीसे एक ब्राह्मण वहांके सेठका आया है. यह खबर सुन उस सेठने उसको बुलाया और दंडवत् कर आसन दे बिठाया. ब्राह्मण आशीश देकर बैठा. सेठने पूंछा किस कार्यके लिये तुम आये हो ? सो कहो ? ब्राह्मणने कहा हमारे सेठनें अपनें लड़केकी शादीके लिये भेजा है. और कह दिया है कि जहां कन्या अच्छी कुलीनकी ठहरे वहांका टीका ले हमारे पास

पहुँचो. सेठ यह सुनकर बोला मेरीभी यही इच्छा थी कि पुत्रीका व्याह मैं कहां करूंगा ? पर भगवान्‌नें घर बैठे ही संयोग कर दिया. फिर कहा कि कुछ दिन तुम यहां आराम करो मैं अपना पुरोहित तुम्हारे साथ कर दूंगा. वह लड़केको देख टीका जाकर देगा और तुमभी इस लड़कीको देखलो. और वहां जाकर उस सेठसे कहो कि, अपनी आँखों देख आयाहुं. वह ब्राह्मण कितनेक दिनोंतक वहां रहा और उस कन्याको अपनी आंखोंसे देख सेठके ब्राह्मणको साथ ले उज्जैन नगरीको फिर चला. तब उस सेठने अपने पुरोहितसे कह दिया कि, टीका दे व्याहकी तैयारी जल्दी कर आना. ये दोनों वहांसे चल जहाजपर चढ़ कितनेक दिनोंमें उज्जैन नगरीमें आन पहुँचे. ब्राह्मणने सेठको खबर दी कि, मैं कन्या ठहरा आयाहूं. सेठने दूसरे दिन उस ब्राह्मणको बुलाया. और लड़केको अपनेपास बैठा दिखलाया. ब्राह्मणने देख उसे तिलक कर दिया. और हाथ जोड़ अपने सेठकी तरफसे बिनती कर कहा कि, आप जल्दीसे बरात लेकर आइये. हम जाकर वहां तैयारी करते हैं. ऐसा ठहराकर फिर रुखसतहो वह ब्राह्मण अपने मुल्कको गया. वहां जा सेठसे यहांका सब समाचार कहा. सेठ यह खबर सुनकर व्याहका सामान तैयार करने लगा. और इधर यह सेठ व्याहकी तैयारी करने लगा. कारखानेमें नौबत बजने लगी और मंगलाचार होने लगा.

तरह तरहकी तैयारियां कीं. जितने कुटुंबके लोग थे उन्होंको नये नये जोड़े पहना अपने साथ ले जानेको तैयार हो रहा. नाच राग रंग खुशीसे होने लगे. इस तरह तमाम शहरकी जियाफत करते करते बरातकी तैयारी होरही. व्याहका दिन नजदीक पहुँचा, अज़बस कि जाना दूरका थां फिक्र करने लगा कि अरसा थोड़ा रहा है. समुद्रपार इतने दिनोंमें हम क्योंकर जा सकेंगे ? यह बात सुनकर इसके सब भाई बंधु अंदेशा करनें लगे और खुशी तमाम शादीकी भूलगये. इसमें एक शक्सने आकर उस सेठसे कहा कि इस कन्याका प्रारब्ध होगा तो इस लग्नमें विवाह होगा. और मैं एक यत्न बताताहूं तुम इसकी फिक्र मत करो. भगवान् चाहे तो बनजाय. तब उसने हाथ जोड़कर कहा कि भाई ! यातो भगवान्‌के हाथ हमारी लज्जा या तेरे हाथ जिससे हमारा काम बने सो कह? वह कहने लगा कई एक महीनें हुए हैं कि एक बढ़ई उडनखटोला बनाकर राजाके पास ले आयाथा और वह कहताथा कि, इस खटोलेका यह स्वभाव है कि, इसपर बैठकर जहां तुम्हारी इच्छा हो वहां जाओ, यह पहुँचावेगा. राजाने सुनकर उसको दो लाख रुपये दिये. और खटोला ले लिया. वह अब राजाके घरमें होवेगा. इसवास्ते तुम राजाके पास जाओ और सब हालत राजासे कहो तो राजा वह खटोला देगा और तुम्हारा सब काम सिद्ध होजा

पगा. यह सुनतेही वह खुशी होकर राजद्वारपर गया. और द्वारपालसे कहा कि मेरी खबर महाराजसे जाहिर कर दो. तब दरवानोंनें जाकर दीवानसे अर्ज की कि, नगरसेठ द्वारेपर हाजिर है. आपकी आज्ञा हो तो राजाके दर्शनको आवे. दीवाननें कहा कि बुलाओ. दरवान आकर उस सेठको अंदर लेगया. उसने वहां जाकर दीवानको दंडवत् की और बिनती कर कहने लगा कि, महाराज ! आपके दर्शनको मैं आया हूं और अपना बड़ा जरूरका कामभी है. यह सुनकर दीवानने कहा कि राजा महलमे हैं. सेठ यह सुन अति उदास होगया. और कहा कि मेरा बड़ा कार्य है सो ऐसा कि लड़केकी शादी है और जाना तो समुद्रके पार है और चारदिन बीचमें बाकी हैं. इसमें जो न पहुँच सकें तो मेरे कुलकी हँसी होगी. बनियेसे यह बात सुनकर दीवाननें राजासे जाकर सब हकीकत जाहिर की. तब राजाने आज्ञा दी कि वह उड़न खटोला उसे लेजाकर दो और जो कुछ वह कहेगा वैसीही सब तैयारी करदो. जो किसी तरह उनके काममें विघ्न न आवे. तब प्रधानने खटोला मँगवा बनियेको देदिया. और कहा कि जो कुछ सामान तुम्हें दरकार हो सो कहो ? महाराजका यह हुक्म हुवा है कि, उसको जो कुछ चाहिये होय सो दे दो. तब सेठने कहा कि महाराजकी दयासे सब कुछ है पर मेरी यही जरूर थी और आपकी

कृपासे सब काम सिद्ध होगया है. महाजन खटोला लिये अपने घरको आया. और ब्राह्मणको बुलाकर साथ लिया. लड़का और आप उसपर बैठ समुद्रपार चला. एक अरसेमें वहां जाकर पहुँचा. और वहां जाकर देखे तो मंगलाचार सारे नगरमें हो रहा है. और सब लोग राह देखरहे हैं. जब लोगोंनें देखा तो हाथों हाथ ले गये. जाकर एक हवेलीमें उतारा और अपनें सेठको खबरदी कि तुम्हारा संबंधी बरात लेकर आन पहुँचा है. वह सेठभी वहांसे उसकी मुलाकातको आप आया और इन तीन आदमियों-को देखकर अपने जीमें बहुत पछताया. और पूंछा कि, क्या सबब है ? जो तुम इस तरहसे आयेहो. तब सब अवस्था अपनी सुनाई. सुनतेही उस सेठनें अपने गुमास्तेसे कहा कि, कल व्याह है और आज बरातकी तैयारी सब तुम जल्दी करदो कि जिसमें शहरके लोग न हँसें. उन्होंने सब तैयारी बात कहतेही करदी. दूसरे दिन बरात लेकर वह सेठ व्याहने गया. और बेटेका व्याह किया. उस सेठनें हाथी घोंड़े जोड़े पालकी मियानें जड़ाऊ गहने और बहुतसा कुछ दान दहेज दिया. इसने वहांसे सब लेकर जहाजमें रखकर जहाज रवाना कर दिया और आप खटोलापर सवार हो अपने शहरमें आया. और नयेसिरमें शादी रचाई. ब्राह्मणोंको बहुत कुछ दान दिया और कुछ जवाहिर पोशाक और बाजे तुहफः और तहाय-

थालोंमें रत्न और चार घोड़े खासे लेकर राजाके नगरको चला और वहांसे खटोला जो लेगया था वहभी फेर देने. जब द्वारेपर पहुँचा तब द्वारपालोंसे कहा कि, महाराजको मेरी खबर दो. तब द्वारपालोंने राजाको जाकर कहा. राजानें खबर सुन उसे बुला लिया. और जो कुछ वह लेगयाथा सो जाकर उसने राजाकी भेट किया. और कहा महाराज ! आपके पुण्य प्रतापसें सब काम अच्छा हुवा. अब इस दासकी भेंट आपको कबूल करनी चाहिये. तब राजा सुन हँसकर बोला कि, मेरा यह सुभाव है कि, दी हुई चीज मैं फेर नहीं लेता. यह खटोला मैंने तुझको दिया. और जो कुछ तू तुहफे लाया है यह सब तुहफे और लाख रुपये अपने खजानेसे मँगवाया और कहा कि, हमनें तेरे बेठेको दिये. इस वास्ते कि, इसकी शादी हुई है. गरज ये सब कुछ इनायत करके मानदे उसे रुखसत किया. वह प्रसन्न हो अपने घरको आया. इतनी बात कह वह पुतली बोली सुन राजा भोज ! राजा वीरविक्रमादित्यकी बराबरी इंद्रभी नहीं कर सकता था. और तुम तो किस गिनतीमें हो ? जो तूने अपना मन बढ़ाया है इससे तू बाज आ. इन बातोंमें वहभी दिन गुजर गया. तब राजा महलमें दाखिल हुआ. रात जिस तिस तरह गुजरगई. फिर जब सुबह होगई तब राजा सिंहासनपर बैठनेका इराद करके वहां आगया. तब सत्यवती

सत्रहवीं पुतली–

कहने लगी–सुन राजा भोज! एकदिन राजा वीरविक्रमादित्य अपनी सभामें इंद्रकी समान बैठा था. और गंधर्व मधुर मधुर स्वरोंसे गा रहेथे. रंडी नृत्यकर भाव बताय रहीं थीं. कहीं भाट खड़े हुए यश वर्णन कर रहेथे. किसी तरफ ब्राह्मण वेदपाठ कर रहेथे. किसी तरफ मल्ल आपसमें युद्ध कर रहेथे. और किसी तरफ चीते कुत्ते, सियार, गोशहरन, मेढ़े, मीर शिकार लिये खड़े थे. और जितनी तयारी राजाओंकी चाहिये सो सब तयार थी. उनकी सभामें एकसे एक पंडित चतुर और बीर बैठे थे. उनमें राजा इंद्रकी तरह और सब सामान इंद्रके अखाड़ेके ऐसा था. इसमें राजानें अपने चित्तमें विचारकर पंडितोंसे कहा कि, तुम एक बात मेरी सुनो कि, स्वर्गमें राजा इंद्र जो हैं सो मर्त्य लोकका सब मर्म जानते हैं. पर कहो कि पातालका राजा कौन है? और किस जगह वह रहता है? तब उनमेंसे एक पंडित बोला कि महाराज! पातालके राजा शेष नाग हैं? जिनके हजार फन हैं और पद्मिनी रानी उनके यहां है? और कभी शोक संताप उन्हें नहीं व्यापता, इस वास्ते वह आनंदसे वहांका अचल राज करते हैं. और जैसा वह राजा सुखी है वैसा इस संसारमें कोईभी नहीं. पंडितकी बात सुनकर राजाको उनसे मिलनेकी इच्छा हुई.

तब बैतालोंको बुलाकर कहा कि, मेरे तईं पातालको लेचलो, मैं शेष नागके दर्शनको जाउंगा. ऐसा राजाका बचन सुन बैताल उठाकर पातालको लेगये. और शेष नागका मंदिर दिखा दिया. राजाने उनका मंदिर देखतेही बैतालोंको बिदा किया. और आप मंदिरको चला गया. जब जाकर उनके पास पहुँचा और देखे तो वह कंचनका मंदिर है और उसमें रत्न जड़े हुए चकमका रहेहैं. और ऐसी ज्योति है उसकी कि जिसकी रोशनीके सिवाय रात दिन कुछ नहीं मालूम होता. द्वार द्वारपर कमलके फूलोंकी बंदनवारें बँधी हुईं हैं. और घर घर आनंद मंगलाचार हो रहा है. वहां राजा कुछ ड़रता ड़रता कुछ खुशी खुशी हो जाकर खड़ा हुआ. और वहांके द्वारपालोंसे दंडवत् करके कहा कि महाराज ! हमारा समाचार शेष राजाजीको पहुँचाओ कि, मर्त्यलोकसे एक राजा आपके दर्शनको आया है. तब दरवान राजाको खबर देनेको गया. और यह द्वारपर खड़ा हुआ कहता था कि, धन्य भाग्य है मेरा कि मैं यहांतक आन पहुँचाहूं और चारों तरफ़से रामकृष्ण रामकृष्ण इम नामकी आवाज आतीथी. राजाके मंदिरमें वेदकी ध्वनि कान पडती थी. जब दरवान राजाके सन्मुख जा प्रणामकर हाथ जोड़कर खड़ा हुवा. राजानें उसकी ओर दृष्टिकी, उसने कहा महाराज ! एक मनुष्य द्वारेपर

खड़ा है और कहता है कि, मैं मर्त्यलोकसे आया हूं. द्वारेको हजारों दंडवत् करता है. उसको आपके दर्शनकी अभिलाषा है. जिससे निहायत बेचैन है. यह बात सुनतेही शेष नाग उठके द्वारेपर आये राजाने देखते ही उनको साष्टांग प्रणाम किया और उन्होंनें हँसकर आशीशदी और पूँछा कि तुम्हारा नाम क्या है ? और कौनसा देश है ? तब राजाने हाथ जोड़कर कहा कि स्वामी ! विक्रम भूपाल मेरा नाम है और मैं मर्त्यलोकका राजा हूं और आपके चरणके दर्शनकी मुझे इच्छा थी सो मेरे मनकी इच्छा पुरी हुई. आज मुझे करोड़ यज्ञका फल हुआ और करोड़ों रुपये दान कियेका पुण्य पाया. और धन्य भाग मेरा जो आपके चरणकमलके दर्शन हुए. बल्कि चौंसठ तीरथ न्हायेका मुझे फल हुआ. विक्रमका नाम सुनतेही शेष नाग उसको मिले. और हाथ पकड़कर अपने मकानमें लेगया. अच्छी जगह बैठाकर क्षेम कुशल पूंछी. राजानें कहा महाराजके दर्शनसे सब आनंद है. फिर कहा–तुम किस कारण यहां आयेहो ? और आते हुये पंथमें तुमने बहुत कष्ट पाया होगा. विक्रम बोला कि फणिनाथ ! मैंने जो कष्ट पाया सो सब तुम्हारे दर्शन कियेसे निस्तरा. फिर राजाको रहनेके लिये एक अच्छा स्थान दिया और बहुतसे लोग टहल करनेको. उन लोगोंसे कह दिया कि मेरी सेवासे भी तुम अधिक राजाकी सेवा जानना. इस

तरहसे पांच, सात दिन राजा विक्रमादित्य वहां रहा. बाद उसके एक दिन हाथ जोड़कर कहा कि पृथ्वीनाथ! मुझे बिदा कीजिये. अब मैं अपने नगरमें जाऊं और वहां बैठ आपका गुण गाऊं. तब शेषने हँसकर कहा कि, राजा! अब तुम्हें घर जानेकी इच्छा हुई है सो तुम्हारे वास्ते कुछ प्रसाद हम देतेहैं तुम लेते जाओ. यह कह चार लाल मँगवाकर राजा विक्रमको दिये और उनका गुण कहनेको लगे कि, इस एक रत्नका यह स्वभाव है कि; जितना गहना तुम चाहोगे सो यह तुम्हें देगा. और क्षणभर देते विलंब न करेगा. और दूसरे लालका ऐसा स्वभाव है कि, हाथी, घोड़े, पालकियां जितनी तुम मांगोगे उतनी इससे पाओगे. और तीसरे लालका यह स्वभाव है कि, तुम जितनी लक्ष्मी चाहोगे तुमको उतनीहीं यह देगा. और चौथे रत्नका यह प्रभाव है कि, हरिभजन और सत्कर्म करनेकी जितनी मनमें इच्छा रक्खोगे उतनी यह पूरी करेगा. इस तरह चारों लालोंके गुण राजाको समझाकर कहे और बिदा किया. राजा हाथ जोड़कर खड़ा हो कहने लगा—महाराज! मैं आपके गुणको उपमा नहीं दे सकता हूं. पर आप मुझे दास समझकर कृपा रखियेगा. यह कहकर राजा वहांसे रुखसत हुआ. और अपने बैतालोंको बुलाकर उनपर सवार हो अपने घरको आया. जब कोश एक नगर रहगया तब बैतालोंको

छोंड़ राजा पाँओं पाओं शहरको चला तो देखता क्या है कि, एक दुर्बल भूंखा ब्राह्मण चला आता है. जब वह पास आया तब उसने कहा कि राजा! मैं भूंखा ब्राह्मण हूं, कुछ मुझे भिक्षा दो तो मैं जाकर अपने कुंटुबको पालूं. यह सुनतेही राजा चिंता कर अपने मनमें कहनें लगा कि इस ब्राह्मणको इसमेंसे एक लाल दूं. यह विचारकर ब्राह्मणसे कहा कि, देवता! इस बख्त मेरे पास चार रत्न हैं और उन चारोंका एक एक गुण है इस वास्ते जो तुम इनमेंसे चाहो वह मैं तुम्हें दूंगा. तब ब्राह्मणनें कहा पहले अपने घर हो आऊं तब तुमसे कहूं. यह कहकर ब्राह्मण अपने घर गया. और राजा वहां खड़ा रहा. वह घरमें जाकर अपनी स्त्री पुत्र और पुत्रकी स्त्रीसे कहनें लगा कि, उन चारों लालोंका यह व्यौरा है. तब उन तीनोंमेंसे ब्राह्मणी बोली कि स्वामी! तुम वह लाल लो कि, जो लक्ष्मी देता है सो, और खयाल मनमेंसे उठादो, क्योंकि लक्ष्मीसे मिलते हैं सहाय और लक्ष्मीसे होते हैं सब उपाय. धर्म, ज्ञान, नेम, पुण्य, दान यह सब लक्ष्मीसेही होते हैं. इससे तुम और तरफ चित्त मत डुलाओ. और जाकर लक्ष्मी लेआओ, फिर उसका पुत्र बोला–लक्ष्मी किस कामकी है, जो साथ सामान न हो और जो सामान हो तो राजा कहावे, और सब कोई शिर नवावे. सामान हो तो दुर्जन ड़रे और संसारमें

शोभा पावे. जो घरमें लक्ष्मी हुई और जगमें शोभा न पाई तो उस पुरुषका जन्म लेना निष्फल है. तुम वह लाल लो कि जो इस संसारमें शोभा दे. उत्तनेमें उसके बेटेकी बहू बोली कि तुम वह लाल लो कि जो अच्छे अच्छे आभूषण दे. गहनें पहननेसे स्त्री अप्सरा मालूम हो. जो रांडभी पहने तो अति सुंदरी दिखाई दे. और विपत् पड़े तो बेंच बेंच बहुतसा धन ले. और जितना मांगोगे उतना इससे पाओगे. और पुरुष हमारा बावला है और सास बुद्धिहीन है इससे ससुरजी ! तुम सज्ञान हो और तुमसे मैं कहतीहूं वही लाल लेकर आओ जो मैंने तुमसे कहा है. उससे तुम सब कुछ पाओगे. यह सुनकर ब्राह्मण बोला कि तुम तीनों बौराये हो. और मेरी इच्छा सिवाय धर्मके और कोईमें नहीं. क्योंकि धर्मसे संसारमें आदमी राज पाता है, और धर्मसे सब काम सिद्ध होते हैं. धर्मसेही जगमें यश होता है. और धर्म करनेसे देखो कि राजा बलिनें पातालका राज पाया. और धर्मसे ही राजा इंद्रनें स्वर्गमें जाकर इंद्रासन पाया. और धर्मसे यह काया अमर हो जाती है. गर्भवास छूट जाता है. इसमें तुम मेरा धर्म मत डुबावो. और मैंभी अपना सत न छोड़ूंगा इससे जो हो सो हो. इसी तरह चारोंनें चार मत किया. और एकका एकने नहीं माना तब वह ब्राह्मण घरसे फिरकर राजाके निकट आया

और सब अहवाल राजाको सुनाया. और कहा कि महाराज ! मैं घर तो गया पर बात कुछभी बन न आई. अपनी अपनी सब कोई कहता है और हम चारोंकी चार मती हैं. और आपने यहां खड़े होकर हमारे लिये दुःख पाया. पर हमारा मतलब नहीं आया. यह सुन राजानें कहा कि, महाराज ! तुम अपनें चित्तमें निराश होकर उदास न होना. चारों लाल अपने घरको लेजाओ मैं तुम्हें देताहूं क्योंकि जिसमें तुम्हारा कुटुंबभी प्रसन्न हो और तुमभी. हमारा इसीमें कल्याण है. निदान राजाने चारों लाल ब्राह्मणके हाथ दिये. ब्राह्मण लेकर खुश हुआ और आशीश दे अपने धामको गया. सुन राजा भोज ! राजा विक्रमादित्यभी अपनें मंदिरको गया. और दान देते कुछ विलंब न लाया. ऐसा दानी और प्रतापी अब इस कलियुगमें कौन है ? जो उसके समान हो वह इस आसनपर बैठे और नहीं तो नरकवास पावे. अभी तू अपने मनमें मत उकता धीरज धर और आगे कथा सुन जो जो राजाने साहस और दान किये हैं. यह बात पुतलीकी सुनकर राजा भोज सिंहासनके पाससे उठकर घर आया. और सारी रात शोच चिंतामें गँवाई. सुबह होतेही स्नान पूजा करके बैठा. इतनेमें दीवान प्रधान आकर हाजिर हुए. सबको साथ ले सिंहासनके पास जाना चाहा कि पांव उठाकर धरें तब रूपरेखा--

अठारहवीं-

पुतली उठी और हांहांकर कहने लगी कि राजा ! मुझपर दया कर और पहले मेरी बात सुन, तिस पीछे जो इच्छामें आवे सो कर. तब राजा बोला कि तू कह ? जो तेरे चित्तमें है. तब वह पुतली कहने लगी कि सुन राजा भोज ! एकदिन दो संन्यासी आपसमें योगकी रीतिसे झगड़तेथे. न वह उससे जीत सकताथा न यह इससे. आखिर इस तरह झगड़ते झगड़ते वीरविक्रमादित्यके पास आये. और कहा कि महाराज ! हम दोनों विवादी हैं इसका आप न्याव चुकावो. आप धर्मात्मा राजा हैं यह समझकर हम आये हैं. राजानें कहा मुझसे समझाकर तुम जाहिर करो कि किस बातपर झगड़ा है? तब उन मेंसे एक यती बोला कि, महाराज ! मैं कहताहूं कि मनके बशमें ज्ञान है और मनके बशमेंही आत्मा है और मनके बशमेंही देह है और माया, मोह, पाप, पुण्य येभी सब मनसे हैं. और जितनी बातें हैं वह सब मनकेही ताबेमें हैं और मनकी इच्छाहीसे सब कुछ होता है. मन जो है सो तमाम शरीरका राजा है. और जितने अंग हैं सो मनके अधीन हैं. मन उनसे जो काम लेता है सो ही वे करते हैं. एक दोनोंमेंसे यह जब कहचुका तब दूसरा बोला सुनो राजा ! निश्चय करके जो मैं कहूं. ज्ञान जो है यही राजा है देहका. और मन जो है सो

उसका ताबेदार है. और जो कदाचित् मन अपना अमल किया चाहे तो ज्ञानसे कुछ इसका बश नहीं चलता. मनके काबूमें हैं इंद्रियां वह चाहे तो उनसे कर्म करवावे. पर ज्ञान नहीं करने देता. जब ज्ञान आता है तब वह मनको मार कर निकाल देता है और पांचों इंद्रियांभी ज्ञानके बश हो खड्गसे कटी हुई हैं. जब मनुष्यसे मन और इंद्रीका विकार छूटा निर्भय हुआ संसारके भयसे और योग सिद्ध हुआ. दोनोंकी ये बातें सुनकर राजा बोला कि, तुमनें जो कहा सो मैं सब समझा इसका उत्तर बिचार कर तुम्हें दूंगा. कितनी एक देरके बाद राजानें सोचकर कहा कि, सुनो योगेश्वर ! चार वस्तु एक साथ रही हैं. अग्नि, जल, वायु और पृथ्वी इन चारोंसे शरीर है.मन इनका सरदार है. मनकी मतिसे जो ये चलें तो घड़ी पलमें नाश करदे. पर उनपर ज्ञान बली है. मनका विकार होनें नहीं देता. और जो नर हैं ज्ञानी उनकी काया विनाशको नहीं पाती. वे इस संसारमें अमर हैं. और जबतक योगी ज्ञानसे मनको नहीं जीते तबतक उसका योग सिद्ध नहीं होता. ये बातें राजाकी योगियोंनें सुन अपने मनका हठ छोड़ दिया. और ये योगियोंनें प्रसन्न होकर राजाको एक खड़िया कलम देकर कहा कि इसमें ये गुणहैं जो इससे दिनको तुम लिखोगे सो रातको प्रत्यक्ष सर्व देखोगे. यह कहकर दोनों योगी चले

गये. राजानें अपने जीमें अचरज माना कि यह बात किस तरहसे सत्य होगी ? तब राजानें एक मंदिर खाली करवाया. और झड़वा धुलवाय लिपवा अकेले उसके घरमें जा बिछोना बिछवा किंवाड़ बंदकर दीवालमें मूरत लिखने लगा. पहले कृष्णकी मूर्ति लिखी, पीछे सरस्वतीकी फिर देवताओंकी. इतनेम सांझ हुई और एक बार जय जय शब्द होने लगा. जो जो देवता लिखेथे सो साफ देखे देखतेही राजा मोहित हो गया. और जो जो बातें वे आपसमें कहतेथे वह राजा सब सुनताथा. इतनेमें प्रभात होगया. और देवताओंने उठ उठ अपनी अपनी राह ली. और पुतलीकी पुतलियां रहगईं. फिर राजाने दूसरी तरफ दीवालमें हाथी, घोड़े, पालकी, रथ और फौज यह सब कुछ लिखा. फिर जब शाम हुई तो वे सब हाजिर हुवे. राजा देख देख अपने जीमें प्रसन्न होताथा. और योगीको याद करताथा कि, मुझे वह पदार्थ दे गया. जब भोर हुआ तब वह चित्रका चित्र रहगया. फिर तीसरे दिन राजानें पहले एक मृदंगी लिखा. फिर गंधर्व लिखा. पुनि अप्सरायें खैंची. तालबीन, रबाब, तंबूरा, मुहचंग, सितार, पिनाक, बाँसुरी, करताल, अलगोजा, एक एक साज एक एक मूर्तिके हाथ दे दे लिखा. जब संध्याका समय हुआ तब पहले एक शब्द हुआ. और गंधर्व संगीत शास्त्रकी रीतिसे गाने लगे. और सब साज स्वरोंके साथ

मिल मिल बाजने लगे. और वे अप्सरायें नृत्य करने लगीं और भाव बतानें. इस तरहसे राजा हमेश आनंदसे रात काटताथा. और दिनको यही लिखताथा. इसी तरहसे वह रात दिन वहां व्यतीत करता और रनवासमें नहीं जाताथा. तब रानियोंके जीमें चिंता हुई कि राजा किस कारण महलमें नहीं आता ? और जुदे मंदिरमें रहता है इसका क्या सबब है. यह मालूम किया चाहिये. यह रानियां आपसमें मत ठान राजाका खोज लेनेको तैयार हुईं और उनमेंसे चार रानियां आपसमें विचार करके कहने लगीं कि हमारा जीनाभी धिक्कारकासा है. और जगमेंभी हमको धिक्कार है कि राजा हमें छोड़ वहां बैठ रहा है. और हम यहां विरहमें दुःख पाती हैं इतने दिनों तो हम दुःख मरीं पर अब एक दिनभरभी बिन प्रियतम नहीं रहा जाता. यह विचार कर रातको सवार हो जिस मंदिरमें राजा बैठा कौतुक देख रहाथा. ये भी वहां जा पहुँचीं. और हाथ जोड़ बिनती कर कहनेलगीं कि, महाराज ! हमसे क्या अपराध हुआ है ? जो आप हमारी सूरत बिसरा यहां बैठ रहे हैं. यह सुन राजा हँसकर बोला कि, सुनो सुंदरियो ! तुम्हें किसनें सताया है और किस कारण तुम यहां आईं? क्या तुम्हें किसीनें कुछ कहा है कि यह तुम्हारा मुखचंद्र मलीन हो रहा है? राजाकी यह बात सुन शिर निहुड़ाके उन्होंनें कहा कि स्वामी ! जो बात है

सो आपके सन्मुख हम प्रकाश करती हैं. तब राजानें कहा अच्छा, जो कुछ कहना हो सो कहो. तब उनमेंसें एक रानी जो चतुरा थी सो बोली महाराज! हम अबला हैं और कभी कुछ नहीं देखा सुखहीमें उमर गँवाई और अब विरहमें काम निशिदिन हमें दहता है सो यह दुःख हम तुम्हारे सिवाय किससे कहें? इस व्यथासे हमें आप बचाइयो. और आपनें हमसे बचन कियाथा कि हम तुम्हें पीठ न देंगे. सो इतनी मुद्दतसे तुमने बिसार दिया. इतने दिनोंतक जिस तरह हुआ हमने वियोग मारा अब हममें बल नहीं कि अब वियोग सहन करेंगे. इसी तरहकी बातें करती हुईं तो सुबह होगई और वे सब मूर्तें फिर नकशीदार और दीवालें होगईं. तब रानियोंने कहा कि महाराज! जबसे तुमनें मंदिर छोड़ा तबसे दुःखही सदा रनवासमें हो रहा है. और उन रानियोंका पाप आपको लगता है क्योंकि सब आपही के आसरेमें हैं. ये बातें सुन राजा हँसकर बोला कि अब जीमें तुम प्रसन्न हो. जो तुम कहोगी सोही हम करेंगे और जो मांगो सो हम देंगे. तब रानियां खुश होकर बोलीं महाराज! हमारे मांगनेसे जो आप देंगे तो हम मांगें. राजाने कहा जो तुम मांगोगी सो हम देंगे. रानियोंने कहा महाराज! यह जो खड़िया आपके हाथमें है सो हमेदो. यह सुनतेही राजाने आनंदसे हवालेकी. रानियोंनें लैली और

छिपा रक्खी. फिर सवार हो अपने अपने महलमें आई और राजाभी आकर दाखिल हुवा. और अपना राजकाज करने लगा. इतनी कथा कह रूपरेखा पुतली बोली कि सुन राजा भोज! ऐसा पदार्थ देते राजानें विलंब न किया. और ऐसी विद्या तू कहां पावेगा. और जो पावेगा तो तुझसे दी नहीं जायगी. इससे इस आसनके ऊपर बैठनेका तू अदब छोंड़दे. मैं तुझसे सच कहतीहूं तू बौरा न जा, और इस योग्य तू नहीं. वहभी सायत गुजर गई, राजा उठकर वहांसे महलमें दाखिल हुआ. तमाम रात सोचमें गुजरगई. सुबह उठ स्नान पूजासे फरागत कर फिर उसी मकानमें आया. सिंहासनके पास खड़ा हो चाहा कि पांव उठाकर धरें इतनेमें तारा नामक--

उन्नीसवीं-

पुतली बोली.-कि हे राजा! तू अज्ञानी बावला होकर यह क्या करता है? पहले मैं तुझसे एक बात कहतीहूं सो सुनकर पीछे और विचार कर. जो तुम इस सिंहासनपर चरण रक्खोगे तो सबके अपराधी होगे, मुझपर पग दिया था राजा विक्रमादित्यने. तूने अपने जीमें क्या विचारा है? जो यह इरादा करके आया है? मेरा हृदय जो है सो केवल कमल है और मधुकर वीर विक्रमादित्य था. तू गोबरका कीड़ा है और मुझपर पांव किस तरह रक्खेगा? राजा बोला सुन बाला! तूने मुझे गोबरक

कीड़ा क्यों कर जाना ? तब पुतली बोली सुन राजा भोज ! एक दिनकी कथा. एक ब्राह्मण सामुद्रिक नाम सामुद्रिक पढ़ा हुआ था बनमें चला जाताथा. उसके बराबर दुनियांमें कोई और पंडित न था. अनेक अनेक विद्याके भेद जानताथा. उसनें दर्याफ्त किया कि इस रस्ते कोई आदमी गया है. जब उसके निशान पांवके देखे तो उसमें ऊर्ध्वरेखा और कमलका चिह्न नजर आया तब वह अपने जीमें विचार करनें लगा कि कोई, राजा नंगे पांव इस रस्तेसे गुजरा है. इसको देखा चाहिये कि वह कहां गया है ? यह विचारकर उन पांवोंका निशान देखता हुवा जब कोशभर जा पहुँचा तो उस बनमें देखा कि एक आदमी दरख्तसे लकड़िया तोड़कर गठड़ी बांध रहा है. तब ब्राह्मण उसके पास जाकर खड़ा हुआ. और पूंछा कि तू यहां इस बनमें कबसे आया है ? यह बोला महाराज ! दो घड़ी रात रहेसे इधर आयाहुं तब ब्राह्मणनें पूछा कि, तूनें किसीको इस राहसे जाते देखा है कि नहीं ? उसने कहा कि महाराज ! मैं जिस समयसे यहां आयाहूं तबसे इस बनमें मनुष्यका तो जिक्र क्या है कोई पक्षी भी नजर नहीं आया. तब फिर उस ब्राह्मणनें कहा कि देखूं तेरा पांव. यह सुनकर पांव उसने आगे रख दिया. और ब्राह्मण सब चिह्न देख देखकर अपनें जीमें कहने लगा कि, यह सबब क्या है कि सब लक्षण इसमें

राजाके हैं और यह इतना दुःखी क्यों है ? फिर उसने पूंछा कि कितने दिनोंसे तू यह काम करता है ? उसने कहा जबसे मैंने होश सँभाला है तबसे यही उद्यम करके खाताहूं और राजा वीर विक्रमादित्यके नगरमें रहताहूं. ब्राह्मणनें पूंछा कि तू बहुत दुःख पाता है. वह बोला महाराज ! यह भगवतकी इच्छा है कि किसीको हाथीपर चढ़ावे और किसीको पैदल फिरावे किसीको धन दौलत बिन मांगे दे और किसीको भीख मांगे टुकड़ाभी न मिले. कोई सुखमें चैन करते हैं कोई दुःखमें बौरा रहते हैं. भगवत्की गति किसीसे नहीं जानी जाती कि कौन रूप किसमें रचा है. और जो कर्ममें लिख दिया है सो मनुष्यको भुगतना होताहै ? उसके हाथ सुख दुःख हैं. इसमें किसीका कुछ जोर नहीं चलता. उससे यह बातें सुन और वह चिह्न देख ब्राह्मणनें अपनें जीमें अचरज किया. कहा कि मैंने बड़ी मेहनतसे विद्या पढ़ीथी. सो मेरा श्रम व्यर्थ गया. और सामुद्रिकमें जो विधि लिखी है पुरुषके लक्षण देखनेकी सो झूंठ गँवाई और यह कह मनमें मलीन हो बिचार करता राजाके पास चला कि जाकर उसकाभी पांव देखूं कि उसमेंभी निशान हैं या नहीं ? और जो लक्षण पोथीके प्रमाण न मिलें तो सब पोथियां फाड़ जला संन्यासी हो तीर्थ यात्राको चला जाउं फिर संसारमें रहनेसे कुछ अर्थ नहीं और न मानूंगा. क्योंकि इतनी मुद्दतकी मेह-

नत झूंठ कर्मके पिछे गँवाई तो आगे संसारमें क्या फल मिलेगा? उससे भगवद्भजन करना अच्छा है इस लिये कि, स्वार्थ न हो तो परमार्थ तो होगा. यह बिचार करता करता राजाके पास जाकर पहुँचा. और राजाको आशीश दी. तब राजानें दंडवत् करके कहा कि, देवता! तुम इतना मन मलीन होगये इसका कारण क्या? क्या दुःख तुम्हारे मनमें उपजा है? सो मुझसे कहो? ब्राह्मणने कहा कि राजा! तू पहले अपना चरण मुझे दिखा तो मेरे चित्तका संदेह जाय. तब राजानें अपना पांव ब्राह्मणको दिखाया और उसने कुछ लक्षण उसमें न पाया. वह देख शीश नवाय चुप होरहा और अपने जीमें कहने लगा कि पोथियां सब जला संसारको त्याग बैराग्य ले देश देश फिरिये यह तो अपने जीमें बिचारकर रहाथा. राजाने कहा पंडित! तू क्यों क्रोधकर शिर डुलाय पछताय चुप हो रहा है? अपने मनकी बात मुझे कह कि तूने अपने मनमें क्या ठानी है? तब ब्राह्मण बोला कि सुनो महाराज! मेरे पास सामुद्रिक पोथी है और बारह बरस मैंने पढ़कर याद की है सो मेहनत मेरी निष्फल गई इस वास्ते संसारसे मेरा जी उदास हुआ है. राजानें हँसकर कहा कि, यह तुमने प्रत्यक्ष क्यों कर देखा. वह बोला महाराज! एक मैंने बड़ा दुःखी देखा कि जिसके पांवमें ऊर्ध्व रेखा और कमल था और उसकी रोजी यह

थी कि, लकड़ियां बनमेंसे लाता और बेंचकर खाता. यह देखकर मैंने जो तेरा पांव देखा तो कोई अच्छा लक्षण न पाया और तू सारे नगरका राज करता है इससे मेरे जीमें क्रोध हुआ है. इससे अब घर जाकर ग्रंथ जला देश त्याग करूंगा. राजाने कहा ब्राह्मण ! सुन मैं तुझे बुझाकर कहता हूं और ग्रंथ साधकर तुझे दिखलाताहूं तब तेरा जी पतिआवेगा. किसीके लक्षण गुप्त होते हैं और किसके प्रकट. तब ब्राह्मणनें कहा महाराज ! यह मैं किस तरहसे जानूं. तबहीं राजाने छूरी मँगवा तलुवोंकी खाल चीर लक्षण दिखला दिये. बाह्मणने देखा कि कमल और ऊर्ध्वरेखा है वह देखकर उसके जीको संतोष हुआ और कहा कि हे विप्र ! ऐसी विद्या पढ़ी हुई किस काम आती है कि जिसके सब भेद मालूम न हों. इस तरहके लक्षण देख ब्राह्मण अवाक् हुआ. फिर राजाको आशीश दे अपने घरको गया. इतना किस्सा कह पुतली बोली कि सुन राजा भोज ! कब इस योग्य तू हुवा ? जो सिंहासनपर बैठनेकी इच्छा करता है ? और जो इतना साहस करे सोही इस सिंहासनपर बैठे नाम, धर्म, यश आदमीके जानेसे नहीं जाता. जैसा फूल नहीं रहता और उसकी सुगंध अतरमें रह जाती है. यह सुनकर राजाको कुछ चेत हुआ और कहने लगा कि, यह संसार स्थिर नहीं, जैसी तरुवरकी छांह है वैसीही दुनियाकी गति है. जिस

तरह चंद्र सूर्य आते जाते हैं उसी तरह मनुष्यका जीना मरना है. जैसे कोई सपनेमें कौतुक देखता है वैसाही जगका रूप नजर आता है. और मनुष्यदेह धरके अनेक दुःख भोग करते हैं. पर सुख यह है कि, जो हरिभजन हो. इतना ज्ञान राजा अपनें जीमें विचार वहांसे उठ अपने मंदिरमें गया. रात जैसी तैसी काटी. प्रभात होतेही फिर वहां आन मौजूद हुआ और पुतलियोंसे पूंछा कि अब मैं क्या करूं ? तुम मुझे कहो. तब चंद्रज्योति नामवाली—

बीसवीं पुतली—

कहने लगी—महाराज ! मैं समझाकर कथा आपके आगे कहतीहूं. एकदिन राजा बीर विक्रमादित्यने खुश होकर रासमंडलीके प्रधानको आज्ञा दी कि यह कार्तिकमहीना धर्मका महीना है. इसमें कुछ हरिका भजन मन लगाकर करना चाहिये. शरदपूनो ठाकुरकी रासलीला करो. प्रधाननें राजाकी आज्ञा पाय देश देखके राजा और पंडितोंको न्योता भेज बुलाया और जितने नगरके योगी थे उनकोभी खबर दे तलब किया. और जितने देवता थे उनकोभी मंत्रोंसे आवाहन करके बिठलाया. रास होने लगा. चारों ओरसे जयजयकार शब्द होने लगा. और राजा एक एकका शिष्टाचार मनुहार करकर फूलमाल ठाकुरका प्रसाद देने लगा. राजानें देखा सब देवता आये. पर

चंद्रमा नहीं आये. यह अपनें जीमें विचार बैतालपर सवार हो चंद्र-लोकको गया. वहां जा सन्मुख हो दंडवत् की और हाथ जोड़ कर कहा स्वामी! मेरा क्या अपराध है? जो आपने कृपा न की और सबने मेरेपर कृपा की है. तुम्हारे बिना मेरा काम आधा है. अब काम मेरा सुधारिये. आपको धर्म होगा. तुम्हें संसारमें यश और कीर्ति मिलेगी. जो कदाचित् आप इसमें विलंब कीजियेगा तो मैं हत्या दूंगा. तब चंद्रमाने हँसकर कोमल मधुर बचनसे कहा राजा! मैं तुझसे सत्यकर कहताहूँ तू अपनें जीमें उदास न हो. मेरे आनेसे संसा-रमें अंधकार होजायगा इस लिये मेरा आना नहीं बनता. तुझे अभिलाषा थी मेरे दर्शनकी सो तेरी इच्छा पूरी होगई. और तेरा काम सुफल होगा. तू अपनें नगरमें जा. जो काम तूने आरंभ किया है सो पूर्ण कर. इस तरहसे राजाको समझा अमृत दे बिदा किया. राजानें शिर चढ़ा ले लिया. और दंडवत् कर अपनें नगरकों चला. रास्तेमें देखा कि यमराजके दो दूत एक ब्राह्मणका जीव लिये जाते हैं. राजानें वह देवदृष्टिसे जाना और उस ब्राह्मणके जीवनें राजा-को देख दूतसे कहा कि इस राजाकों भेटना है. राजानें उस ब्राह्म-णकी आवाज सुनकर कहा कि भाई तुम कौन हो? तब उन दोनोंने समझाकर राजासे कहा कि हम यमके भेजेसे उज्जैन नगरीको गये थे. ब्राह्मणका जीव लेकर अपने स्वामीके पास जाते

हैं. राजानें उससे कहा पहले उस ब्राह्मणको तुम हमें दिखा दो. और पीछे अपने कामको जाओ. वे दूत राजाको साथ ले नगरमें गये. जहां उस ब्राह्मणका देह पड़ा था वहां दिखाया. राजा देखतेही उस ब्राह्मणका शीश निहुड़ा अपने मनमें कहने लगा कि, यह तो हमाराही पुरोहीत है. तब राजानें दूतोंको बातोंमें लगा नजर बचा वह अमृत उसके मुँहमें डाल दिया. ब्राह्मण रामका नाम ले उठ खड़ा हुआ. ब्राह्मणने राजाको प्रणाम करतेही आशीश दिया और दूतोंसे हाथ जोड़ विनती कर कहा कि यह जीवदान मैंनें तुमसे पाया. यह देखकर दूतोंनें अपने जीमें अचंभा किया कि अब हम जाकर क्या जवाब देवेंगे ? यह विचार करते हुए दूतोंनें यमराजके पास जा सब राहकी अवस्था कही. यम सुनकर चुप होरहा और राजा ब्राह्मणका हाथ पकड़ अपनें मंदिरको लाया. और बहुतसा दान दे उसको बिदा किया. यह कथा सुनाकर चंद्रज्योति नाम पुतली बोली कि, हे राजा भोज ! ऐसा पुरुषार्थ तू कर सके तो इस आसनपर बैठ नहीं तो उसके खयालसे दर गुजर. इस तरहसे सुन राजा वहांसे उठ अपने मंदिरमें आया. रात तो जिस तिस तरहसे काटी. सुबह होतेही स्नान ध्यान कर तैयार हो फिर सिंहासनके पास जा खड़ा हुआ. चाहता था कि उठकर पांव धरें तब अनुरोधवती नामवाली—

इक्कीसवीं पुतली—

बोली—हे राजा ! क्या तू अपनी बड़ाई करता है? और इस अनीतिकी कौनसी बड़ाई है? पहले मुझसे बात सुन ले पीछे उसपर बैठ, माधवनाप एक बड़ा गुणी ब्राह्मण था. उसकी तारीफ हो नहीं सकती जो मैं करूं. वह योगी होकर तमाम पृथ्वीमें फिर कर आया. कहीं ठहरकर रहने न पाया. मानो वह कामदेवकाही अवतार था. स्त्री देखतेही उसे मोहित हो जाती थी. ऐ राजा ! वह सब विद्या पढ़ा था और अति चतुर था. मत्यर्लोकमे वैसे मनुष्य कम पैदा होते हैं. जिस राजाकी सेवा करनेको जाता था वहां पहले तो उसका आदर मान होता था और जब वह अपने गुणको प्रकाश करता तब वह राजा उसको देशसे निकाल देता. इस तरहसे देश देश भटकता दुःख पाता फिरताथा. कई एक दिनमें वह कामा नगरीमें आन पहुँचा. उस नगरीका राजा कामसेन नाम था. उसके यहां कामकंदला नाम एक रंडी थी. वह गोया उर्वशीकाही अवतार थी. गंधर्वविद्यामें वह चतुरथी. माधवभी उसी राजाके द्वारेपर जा पहुँचा. द्वारपालोंसे कहा राजाको जाकर हमारा समाचार कहो. आपके दर्शनको एक ब्राह्मण आया है. डेवढ़ीदार उसकी बात सुनी अनसुनी करगया. वह ब्राह्मण वहीं बैठ गया. ज्यों ज्यों वहांसे मृदंगका आवाज और गानेकी ध्वनि आती थी, त्यों त्यों वह शिर

धुन २ कर कहताथा कि, राजा भी मूर्ख है और उसकी सभा भी मूढ़ोंकी है जो विचार नहीं करती. यही बात पाँच सात दफे कही. द्वारपाल खफा हो ब्राह्मणको देख राजाके डरसे कुछ कह तो नसके पर राजाके सन्मुख जा हाथ जोड़कर खड़े हुए. महाराजने जो उनकी तरफ देखा तब उन्होंने बिनती करके कहा कि, महाराज ! द्वारपर एक ब्राह्मण विदेशी दुर्बल आन बैठा है ? शिर डुला डुलाकर बैठा है और कहता है कि, वह राजा और उसकी सभाके लोग अति मूर्ख हैं. जो गुण विचार नहीं करते. तब राजानें उन द्वारपालोंसे कहा कि जाकर उसे पूँछो उनको मूर्ख तूनें किस लिये कहा ? उन्होंने राजाकी आज्ञा पाय पौरपर आय ब्राह्मणसे पूंछा महाराजने आज्ञाकी है कि, उनके गुणमें दोष कौनसा है ? वह तुम बताओ तो हम तुम्हारी बात सचजाने. उसने कहा बारह आदमी चार चार तीन तरफमें खड़े हुए जो मृदंग बजाते हैं तिनमेंसे पूर्व मुखवालोंमें एक मृदंगीके अँगूठा नहीं है इससे समपर थाप हलकी पड़ती है इससे मैंने सबको मूढ कहा है न मानो तो तुम जाकर यह सच है या नहीं सो देखो. वे दौड़े हुये राजाके पास आये और सब बातें राजासे सुनाई. तब राजाने पूर्वमुखके चारों मृदंगियोंको बुला एक एकका हाथ देखलिया. उनमें एकका अँगूठा मोमका बनाकर

लगाया गयाथा. यह तमाशा राजा देख बहुत प्रसन्न हुआ और ब्राह्मणको ऊपर बुलाया. वह जाकर सन्मुख हुआ तब राजाने दंडवत् किया और उसने आशीश दी. फिर शिष्टाचार कर गद्दीपर बिठाया. जैसे वस्त्र आभूषण आप पहने थे वैसेही मँगवाकर ब्राह्मणको पहनाये और कामकंदलाको बुलाकर आज्ञाकी कि, यह महागुणी है इसलिये इसके आगे अपना गुण तू प्रकाश कर कि जिससे यह प्रसन्न होवे. कामकंदला राजाकी आज्ञा पाय अपना गुण जाहिर करने लगी. उसने संगीत नृत्यका आरंभ किया. रंगके सीसे भरे हुए सीसपर धर मुँहसे मोती पिरोती हुई हाथोंसे बट्टे उछालती हुई और सब साज स्वर मिलाये हुई नाचती थी. इसमें फूलोंकी और अतरकी खुशबू पाकर एक भौंरा उड़ता हुआ आकर उसके कुचकी भिटनीपर बैठा और डंक मारा, उसके बदनमें पीर हुई तब बिचारा कि, जो कुछभी हरकत करती हूं तो ताल भंग होगा और मेरे गुणकी हँसी हो जायगी. इतना जीमें सोच भंडार-विद्याकर श्वासरोक कुचकी राह निकाली पवन लगतेही वह भौंरा उड़ गया. तब माधव उस गुणको देखतेही मोहित होकर बोला कि, हे सुंदरी ! धन्य है तुझे और तेरे करतबको. यह कहके प्रसन्न होकर वस्त्र और आभूषण जो राजाने दियेथे सब उतार उसको दिये. यह देख राजा और मंत्री आपसमें

कहने लगे कि, देखो इस ब्राह्मणने क्या मूर्खता की है. इस वेश्याको ये कपड़े और तमाम जवाहिर एक आनमें बक्स दिया, यह जातका भिखारी यहां हमारे आगे सखावत दिखाता है. तब राजानें खफा हो ब्राह्मणसे पूँछा कि, तू इसके किस गुणपर रीझा वह मेरे आगे बयान कर. ब्राह्मणने कहा सुन राजा तूभी मूर्ख है और तेरी सभाभी मूढ़ है. तेरी सभामें यह ऐसा गुण प्रकाश करे·सोभी कोई नहीं जानता क्योंकि इसके कुचपर भौंरा आन बैठाथा सो इसनें अपनी श्वासरोक कुचकी राह निकाल उसे उड़ा दिया यह इसका चतुरताका काम देख सब कुछ मैंने इसे बक्स दिया. माधवनें जब यह बात कही तब राजा लज्जित हो बोला कि, इसी समय मेरे नगरसे निकलजा. अब जो सुनूंगा कि तू इस नगरमें हैं तो मैं बँधवाकर दरियामें डुबा दूंगा. तब माधवनें कहा महाराज ! मुझसे ऐसा क्या अपराध हुआ है ? जो आप मुझे देशसे निकाले देतेहो. राजानें कहा मैंने जो कुछ तुझे दियाथा सो तूने मेरेही आगे दानकर दिया. क्या मेरे पास देनेको कुछ न था. जो तूने दिया. यह सुनकर माधव मनमें मलीन हो राजसभासे निकल बाहरजा एक वृक्षके नीचे व्याकुल खड़ाहोकर अपने जीमें कहने लगा कि, माता बेटेको विष दे और पिता पुत्रको बेंचे और राजा सर्वस्व ले तो कोई शरण किसकी ले ? फिर कहने लगा

कि राजानें मुझे निकाला अब मैं कहां रहूं यों अनेक भाँतिकी चिंताकर कामकंदलाका नाम लेले रोताथा. और इधर कामकंदलाभी राजासे बहाना करके बिदा हुई और एक आदमी दौड़ाया कि यह ब्राह्मण बाहर जाने न पावे. उसे ढूँढ़ लेजाकर मेरे मकानमें बिठा, वह आदमी गया और ब्राह्मणको ले जाकर कामकंदलाके मंदिरमें बिठा दिया. इधरसे यह भी तुरत जा पहुँची. और वह दोनों आपसमें बैठकर प्रेमकी बातें करने लगे. तब उस ब्राह्मणने कहा मुझे राजाने देशसे निकाल दिया है और तूने अपने घरमें बुला बिठलाया जो यह बात राजा सुनेगा तो मेरा प्राण पहिलेही जायगा. इससें मैं तो दुःखसे छूटूंगा पर तुझेभी राजा अतिकष्ट देगा इसमें ऐसी बात करनी उचित नहीं है कि, अपनी तो जान जाय और जगमें हँसाई होय. इसवास्ते प्रेम जो है सो दुःखकी खान है जिसनें प्रेमके पैड़ेमें पाँव दिया उसने कभीही सुख न पाया. ये बातें माधवके मुखसे सुनकर कामकंदलाने कहा कि, अब तो मैं इस पंथमें आई जो कुछ करे सो भगवान् है. इतना कह सब साज बाज घरसे मँगवाकर अपनी विद्या जाहिर करने लगी. जितनी विद्या उसे याद थी उतनी ही जब प्रकाश कर चुकी तब माधवने उन्हें यंत्रोंके साथ अपने पास जो गुण था सोही सब प्रकाश करके दिखाया. जब रात थोड़ीसी रहगई तब

कामकंदलाने कहा कि, महाराज ! तुमने तो श्रम बहुत किया अब चलकर आराम कीजिये. यह कह माधवको रंगमहलमें ले गई और जितनी खुशी थी सो सब की. जब सुबह हुआ तब दोनोंके जीमें राजाकी बात याद आई और सुध बुध जाती रही. तब घबराकर माधवने कहा कि सुन सुंदरी ! रात तो आनंदसे कटी और अब जो मैं यहां रहूंगा तो दोनोंके प्राण जाँयगे. इसवास्ते अब कुछ यत्न कीजिये, जिससे निर्द्वंद्व आनंदसे रहेंगे. मैंने एक बात जीमें विचारी है. अब मैं यहांसे पहले जाऊं और कुछ उपाय कर फिर आकर तुझेभी यहांसे ले जाऊंगा तू अपना जी मजबूतसे रखना. मैं जरूर आकर तुझसे मिलूंगा. यह बचन मैं तुझे देकर जाताहूं. इतनी बातें सुनतेही वह तो मूर्च्छा खाके गिर पड़ी और माधवने उठकर राह ली. और वहांसे निकलके बन बन फिरनें लगा. और हाय कामकंदला ! हाय कामकंदला ! करने लगा. इधर इसेभी सखियोंने गुलाबका नीर छिड़ककर उठाया. जब कुछ होश आया तब वह भी मिाधव माधव पुकारने लगी. और खाना पीना सब त्याग काय 'बहुतेरा सखियाँ समझाती थीं. पर उसके जीमें एक न आती थीं. ज्यों ज्यों गुलाब वा कपूर चंदन लालाकर लगाती थीं. त्यों त्यों दाह चौगुनी बढ़तीथी. किसी तरहसे शीतलता न होतीथी. जब कोई माधवका नाम और गुण सुनताथा तबही

उसे जरा आराम आताथा. उधर माधवमी गटक भटक अपने जीमें बिचारने लगा कि, अब संसारमें कौन है ? जिसके निकट जाईये जो हमारा दुःख दूर करे. तब उसमेंही उसे याद आया कि, आजतक हम सुनते हैं कि राजा वीरविक्रमादित्य परदुःखनिवारक हैं भला उसके पास जाइये और देखिये कि लोग सच कहते है या झूंठ ? यह मनमें बिचारकर उज्जैन नगरीको चला गया. और वहां जाकर लोगोंसे पूँछा कि, वहां राजाकी भेंट आधीन की क्योंकर होसकती है ? तब उस नगरका वासी बोला कि गोदावरी नदीके किनारे शिवजीका मठ है, उस मठमें राजा शिवजीके दर्शनको नित आता है, वहां तू जा तो तेरा मनोरथ पूर्ण होगा. यह सुनकर वह गया और उस मठके द्वारेकी चौंखटपर लिखा कि, मैं ब्राह्मण विदेशी अतिदुःखित हूं और विरहसे व्याकुल हो तुम्हारे नगरमें आया हूं., यह सुनकर कि राजा परदुःखनिवारक है. और जो यह दुःख मेरा जायगा तोही मैं अपना प्राण रक्खूंगा नहीं तो तीसरे दिन गोदावरीमें प्राणत्याग करूंगा. यह विचार मुकर्रर जीमें मैंने ठहराया है कि तुम राजा हो और सदा गौब्राह्मणकी रक्षा करते आये हो और अबभी करोगे. इसवास्ते मैंने अपने मनकी बात सब प्रकाश कहदी है. इतनी बातें कह पुतलीने राजा भोजसे कहा कि सुन राजाभोज !

राजा बीरविक्रमादित्यका यह नियम था कि, अन्नदुःखी, वस्त्रदुःखी, द्रव्यदुःखी, भूमिदुःखी, विरहदुःखी और किसी तरहका दुःखी नगरमें आवे तो राजा सुनकर जबतक उसका दुःख न मिटा देता तबतक जलका तो क्या जिक्र है? पर दतूनभी न चीरताथा, सबेरे राजा महादेवजीके दर्शनको गया तो दर्शन कर परिक्रमा करने लगा. जब राजा ऊंची दृष्टि करके देखै तो कोई दुःखी अपने दुःखकी अवस्था लिख गया है. राजाने सब बाँच महादेवजीको दंडवत् कर मंदिरमें आया और सेवकको आज्ञाकी कि माधवनाम ब्राह्मण हमारे नगरमें आया है इसवास्ते जो कोई उसे ढूँढ़ लावे तो मुँहमाँगा द्रव्य पावेगा ऐसा कहा. यह बात सुन लोग नगरमें ढूँढ़नेको निकले. घाट घाट टोला महल्ला, वा बगीचे सब नमर ढूँढ़ फिरे कहीं ठिकाना उसका न पाया. तब राजाने एक दूतीको बुलाकर आज्ञा की कि, जो तू उसे ढूँढ़ लावे तो मुँहमांगा द्रव्य पावे. उसने कहा महाराज! यह क्या कठिन बात है अभी जाकर ढूँढ़ लाती हूं. यह कह उसने लिखाथा वहां जाकर मंदिरके पास बैठरही सांझसमय वहभी भटकता हुआ आन पहुँचा. उसने उसे देख मनमें बिचारा कि, हो नहो यह सच बिरही है किसलिये कि, मुँह पीला आसूं जारी तनक्षीण मन मलीन हो रहा है. यह तो यही बिचार कर रहीथी कि, वह ब्राह्मण

वहां आय और एक बार हाय कामकंदला हाय कामकंदला ! पुकार उठा. चट उसने जा उसका हाथ पकड़ लिया और कहा मैं तेरे ढूँढ़नेके लिये राजाकी आज्ञा पायके आयीहूं तू उठ मेरे साथ जल्दी चल तेरा मनोरथ पूरा होगा. तेरे दुःखसे राजा निपट निपट दुःखी है. यह सुनतेही उसके साथ वह होलिया. उसे ले वह दूती राजाके सन्मुख आई और कहने लगी कि, हे महाराज ! यह वही वियोगी है जिसके लिये आपने यह दुःख पाया है. तब राजानें उस ब्राह्मणसे पूंछा कि, महाराज ! आप किसके वियोगसे व्याकुल हो रहे हो सो सब बात मेरे आगे कहो. तब उसने एक आह भरकर कहा महाराज ! कामकंदलाके वियोगसे मेरी यह गती हुई है. वह राजा कामसेनके पास है. तू धर्मात्मा है और मैं तेरे पास आया हूं तू मुझे उसको दिला दे तो मेरी जान बचेगी. यह बात सुनतेही राजा हँसकर बोला सुन विप्र ! वह तो वेश्या है तूने उसके प्रेममें अपना सब धर्म कर्म छोड़ दिया यह तुझे उचित नहीं है. तब माधवने कहा महाराज ! प्रेमका पंथ न्यारा है जो नर प्रेम करते हैं सो अपना तन मन धर्म कर्म सब समर्पण करते हैं प्रेमकी कहानी तो अकथनीय है यह मुझसे नहीं कही जाती. राजाने ये बातें सुनी और उसे अपने साथ ले मंदिरमें गया और सब रानियोंको आज्ञा की कि, तुम

बनाव सिंगार करके आओ. रानियां जब सिंगार कर आईं तब उस विप्रसे राजाने कहा इनमेंसे जिसे तुम्हारी इच्छा होगी उसको लो और अपने मनमें दुःख न कर चैन करो. तब उसने जवाब दिया कि, महाराज ! मैं आपके आगे सत्य कहताहूं कि मेरी आँखोंमें वह बस रही है इस लिये और कुछ मेरी दृष्टिमें नहीं आता. चातककी तृषा स्वातीके बूँदसे बुझती है और जलपर उसे रुचि नहीं वैसी है प्रेमकी दृढ़ता. यह दृढ़ता विप्रकी देख राजाने अपने मनमें विचारा कि, इसे साथ ले जाकर कामकंदलाको दिलाऊं अन्यथा इसके मनको स्थिरता नहीं होगी. यह बात राजाने विचार विप्रसे कहा. देवता ! तुम स्नान पूजा कर कुछ खावो. तब तलक मैंभी अपने लोगोंको बुला तुझे साथ ले चलूंगा. और उसे तुझे दिलाऊंगा तू अपने मनमें किसी बातकी चिंता मतकर मैंने तुझसे यह बचन किया. तब विप्र अपने खाने पीनेमें लगा. और राजानें प्रधानको बुलाकर आज्ञाकी कि मेरे डेरे नगरके बाहर निकालो चार घड़ीके बाद कामनगरकी तरफ मेरा कूँच है इस वास्ते सबको खबरदो. इसमें कितनी एक देरके पीछे राजाभी तैयार हो विप्रको साथ ले कूंचकर डेरोंमें जा दाखिल हुआ. और जितने राजाके नौकरथे यह सब रिकाबमें हाजिर थे. राजा वहांसे कूच दरकूच जाताथा. कितने एक मंजिलोंके बाद कामा नगरीके दस कोस इधर डेरा किया.

और उस राजाको पत्र लिखा कि हम इस लिये आये हैं कि, तुम्हारे यहां जो कामकंदला वेश्या है उसे हमारे पास भेजदो. नहीं तो हमसे युद्ध करनेका सामान करो. यह पत्र लिख एक दूतके हाथ राजा कामसेनके पास भेज दिया. राजाको खबर हुई कि, एक दूत राजा वीरविक्रमादित्यका खत लेकर आया है यह सुनतेही राजाने उसको सन्मुख बुलाया और उसने जा जुहार-कर खत राजाके हाथमें दिया. राजानें उस चिठ्ठीको बाँचकर कहा कि, अच्छा कहो अपनें राजासे कि चले आवें हम युद्ध करनेको तैयार हुए हैं. दूतने आ राजासे कहा महाराज ! वह लड़नेको तैयार है. तब राजाने भी हुक्म अपनें लोगोंको दिया. कि हमाराभी दल तैयार हो फिर राजाके जीमें आया कि जिसके वास्ते हम आये हैं उसकी प्रीतिकी परीक्षा लिया चाहिये. इस तरह जीमें ठहराया. और आप वैद्यका स्वांग बन कामनग-रीमें गया. और लोगोंसे मकान कामकंदलाका पूंछ दरवाजे-पर जा वैद्य हकीम कर पुकारा. इनका आवाज सुनतेही एक दासी बाहर निकल आई और पूंछा कि, तुम वैद्य हो तो हमारी नायकाका कुछ इलाज करो. जो वह अच्छी होवेगी तो तुम्हें बहुतसे रुपैये मिलेंगे. ये बातें कह दासी उससे बिदा हो गई और वह उसके साथ कामकंदलाके सन्मुख गया. राजाने देखा कि निर्जीव पड़ी है राजानें उसकी नाड़ी देखकर कहा कि

इसके तईं रोग और कुछ नहीं इनको तो प्रियतमका वियोग है. जिससे इसकी यह गति बनी है. यह बात सुन कामकंदलानें आँखें खोल उसकी तरफ देखा. और कहा कि, इसका कुछ इलाज तुम्हारे पास होय सो करो. तब उसनें कहा कि, इसका इलाज तो था पर इसमें हमें कुछ कहते बन नहीं आता. तब वह बोली तुम्हारे पास इलाज क्या था ? वह बताओ. राजानें कहा माधव नाम एक ब्राह्मण था उसे हमनें उज्जैन नगरीमें विरह वियोगी अति शोकी देखा. सो वह दुःख पाय मर गया. यह सुनतेही हाय कर उसने भी अपना प्राण छोड़ दिया. जितनी दासी दास उसके घरमें थे. यह दशा देख शिर पीट पीट सब रोने लगे. तब उन्होंने कहा कि तुम कुछ चिंता अपने मनमें मत करो. इसे मूर्च्छा आई है कितनी देरमें सुध आवेगी. तुम इसकी चौकसी करते रहो. मैं जाकर अपनें घरसे ओषध लाऊं ऐसा कह राजा उलटा फिर अपनें दलमें आया. और माधवके आगे उसके मरनेकी खबर कही. सुनतेही एक आहके साथ उसकी भी जान निकल गई. यह देखकर राजा अपने जीमें पछताया. विचार करने लगा कि, जिसके वास्ते इतनी सेना साजके परभूमिमें आया और इसे इस तरह खो दिया. यह हत्या मेरे पर हुई अब अपना भी प्राण रखना उचित नहीं. यह बात जीमें ला बहुतसा चंदन मँगवा चिता बनाय राजा

जीताही जलनेको तैयार हुआ. दीवान और प्रधानने कितना मना किया पर न माना जो चाहे कि उस चितामें बैठकर आग लगावें कि बैतालने आ हाथ पकड़ लिया और कहा कि, हे राजा ! तू अपना जी क्यों देता है ? तब इसने कहा कि दो-की जान मैंने जानके खोई अब मेरा भी जीना संसारमें उचित नहीं इस बदनामीके जीनेसे मरनाही उत्तम है. तब बैतालने कहा कि, राजा मैं अमृत लाकर देताहूं– तू दोनोंको जिलादे. यह कह जल्द बैताल पातालमें जाकर अमृत लेकर आया. और उस ब्राह्मणपर छिड़काया. तब वह उठा फिर ले जाकर कामकंदलापर छिड़का. वह जी उठी और माधव माधव पुकारने लगी. राजाकी सूरत देखकर कहा कि महाराज ! तुम कौन हो? और कहांसें आये ? सो मुझसे कहो. तब राजानें कहा हम बीर-बिक्रमादित्य हैं और माधवका विरह दूर करनेके लिये उज्जैन नगरीसे यहां आये हैं तुम अपने मनमें खातिर जमा रक्खो. कि तुम्हें हम माधवसे मिला देंगे. यह बात राजाके मुखसे सुनते ही वह उठ राजाके पाँवपर गिरपडी और बोली कि महाराज ! यह तुम जीवदान दोगे. और जैसा तुम्हारा यश सुनतीथी वैसा-ही दृष्टिमें आया. इतनी बात कह राजा वहांसे फिर अपने लश्करको आय मिला. दूसरे दिन अपनी फौज ले कामनगरी-पर चढ़ धाये. वहांके राजासे युद्ध कर उसको जीता. तब उस

राजाने हार मानी और कबूल किया कि, हम कामकंदलाको भेज देंगे. और यह जो हमनें युद्ध किया सो आपके दर्शनके वास्ते किया है इसलिये कि किसीतरह हमारे नगरमें आपका चरण पड़े. आगे राजासे मुलाकात करके वह राजा अपने मंदिरमें विक्रमादित्यको लेगया. और बहुत भेट आगे धर कामकंदलाको बुलाकर राजाके आगे खड़ी किया. और उसनेभी माधवको बुला कामकंदलाका हाथ पकड़ हवाले किया. फिर वहांसे कूचकर अपने नगरमें आये और माधवको बहुत धन दौलत दे बिदा किया. इतनी बातें कह **अनुरोधवती** पुतली बोली कि, हे राजा भोज ! इतनी सामर्थ्य और इतना साहस जो तुझसे हो तो सिंहासनपर बैठ नहीं तो पतित हो नरक भोग करेगा. वहभी दिन राजाका टल गया. दूसरे दिन वह फिर मौजूद हुआ तब **अनुरेखा** नाम्नी

बाईसवीं पुतली–

बोली––कि हे राजा भोज ! तू अपने मनकी चिंता छोड़दे और मैं जो तेरेसे कहतीहूं सो सुन. एक दिन राजा बीरविक्रमादित्य सभा कर बैठाथा और प्रधानसे पूछां कि मनुष्य बुद्धि अपने कर्मसे पाते हैं या उनके मातापिताके सिखानेसे पाते हैं ? यह सुनकर मंत्री बोला महाराज ! यह नर पूर्वजन्ममें जैसा कर्म करता है वैसा विधाता उसके कर्ममें लिख देता है. तिसी

प्रमाण बुद्धि होती है, मातापिताके सिखाये बुद्धि होती नहीं कर्म लिखाही फल पाता है. आदमी आदमीको क्या सिखावे ? और जो सिखेसे बुद्धि हो जाय तो सभी पंडित होजाते इससे महाराज ! कर्मके लिखे बिना विद्या होती नहीं, करोंड यत्न कोई करे पर कर्मकी रेखा मेटे मिटती नहीं. राजानें कहा ऐ दीवान ! तूने यह क्या कहा ? संसारमें यह जो जाहिर देखते हैं कि जन्म लेतेही लड़का मातापितासे जो सुनता है और जो देखता है उसी व्यौहारसे चलता है ? इसमें कर्मका लिखा क्या है ? यह सिखायेसे सीखता है. और जैसे संगमें बैठता है वैसीही उसकी बुद्धि होती है. इतनी बात सुन मंत्री बोला कि धर्माव-तार ! आपकी बराबरी हम नहीं करसकते यह अपने मनमें विचारके तुम समझो कि कर्मका लिखा हुआ फल मिलता है. तब राजानें कहा अच्छा इस बातकीं परीक्षा लिया चाहिये ऐसा कह राजाने एक महाबनमें मंदिर बनवाया कि जहां मनुष्यकी आवाजही नहीं जाय. एक अपने बेटेको पैदा होतेही उस मंदिरमें भिजवा दिया. और उसके साथ एक दाई ऐसी कर दी कि, आंखोंसे अंधी, कानोंसे बहिरी. मुँहसे गूँगी. वही उसको दूध पिलातीथी. और परवरिश करतीथी. फिर इसी तरहसे एक दीवानके बेटेको, एक ब्राह्मणके सुतको, एक कोत-वालके पुत्रको जन्मतेही गूँगी.बहरी अंधी दाइयां दे उसी मंदि-

रमें भिजवा दिया. दिन बदिन वे बढ़ने लगे और ऐसी गादी चौकी उस मंदिरमें दोदोकोस गिर्दमें बैठादी कि मनुष्यके जानेकी तो क्या सामर्थ्यथी ? ढ़ोल नक्कारेकीभी आवाज न जातीथी. इसतरहसे बारह बरस जब बीतगये तब एकदिन ब्राह्मणीने अपने स्वामीसे कहा कि, एक युग पूरा होचुका और मैंने अपने पुत्रका मुह नहीं देखा. कदाचित् जी निकल जाय तो मनमें देखनेकी अभिलाषा रहजाय. इससे तुम अब राजाके निकट जाकर कहो, कि महाराज ! बारह बरस बीत गयेपर मैंने बेटेका मुँह नहीं देखा अब मेरे जीमें है कि, पुत्रको घर सौंपकर दंडी हो तपस्या करूं. यह ब्राह्मणकी बात सुन ब्राह्मण तयार हो राजाके पास गया. राजाने देखतेही दंडवत् की और उसने भी आशीश दी. राजा बोला तुम आनंद मंगलसे हो ? ब्राह्मणने कहा कि महाराज ! आपकी कृपासे सब आनंद मंगल है पर मैं एक कामनाकर आपके पास आयाहूं. यह सुनकर राजानें कहा कि जो तुम्हारा काम हो सो कहो. तब उस ब्राह्मणनें अपना सब अहवाल कहा.सुनतेही राजानें प्रधानको बुलाकर आज्ञा की कि उन चार बालकोंको मँगाओ जिसको कि बारह बरस होचुके. दीवान सुनतेही तुर्त आप सवारहो लड़कोंको लेने गया. पहले उनमेंसे राजकुँवरको ले आया. नख और केश बढ़े हुए, शरीर तमाम मैला कुचैला, इस भेषसे राजाके सन्मुख ला खड़ा किया

तब राजाने देखकर कहा कि, सुत ! तुम कुशलसे हो ? इतने दिन तुम कहां थे ? और अब कहांसे आये ? सब ब्यौरा अपना हमसे समझाकर कहो. यह सुन कुँवरनें हँसकर राजासे कहा कि, आपकी कृपासे सब कुशल है और आजका दिनभी कुशलका है जो आपके दर्शन पाये. यह कुँवरकी बात सुनकर अपने मनमें हर्षित हो राजाने मंत्रीकी तरफ देखा तो मंत्री उठ हाथ जोड़करके बोला कि, महाराज ! यह सब कर्महीका लिखा है. फिर दीवानके पुत्रको बुलवाया वह आकर राजाके सन्मुख भयानक भेषसे खड़ा हुआ. जैसे बनसे भालुकको पकड़लाते हैं. मुखपर बाल उसी तरह बढ़े हुए शर्मसे नीचीगर्दन किये खड़ा था. तब उनको राजाने कहा कि, तुम अपनी कुशल कहो कहां थे ? और किधरसे आये हो ? तब वह बोला, महाराज ! कुशल क्षेम कहां होगी ? उधर संसारमें उपजे हैं इधर विनसे हैं. जैसे घड़ी भरती और डूब जाती है नर जानता है दिन जाते हैं पर नर जाता है. यही जगत्का व्यौहार है. इससे कुशल क्षेम काहेकी कहूं ? ये उसकी बातें राजाने सुन दीवानसे कहा इसे यह किसने सिखाया है ? जो कुछ तूने कहाथा यह सब सच है. यह फल कर्मसेही इसने पाया. फिर राजाने कोतवालके बेटेको बुलवाया. उसने आतेही राजाको सलाम किया. और हाथ जोड़ खड़ा हुआ. राजानें कुशल पूंछी. तब उसनें कहा

पृथ्वीनाथ! दिनरात नगरका पहरा हम देते हैं. इसमेंभी चोर आन चोरी करता है, बदनाम हम होते हैं. बिना अपराध कलंक लगे तो फिर कुशल काहेकी है? राजानें फिर ब्राह्मणके बेटेको बुलाया. जब वह सन्मुख आया तब राजाने दंडवत् की. वो मंत्र पढ़ आशीश देनें लगा. तब राजानें कहा आप कुशल क्षेमसे हैं? उसने कहा महाराज! आप पूंछते हैं मुझसे यह बात कि तेरे शरीरमें कुशल है सो कुशल कहांसे हो? मेरे शरीरकी दिन बदिन उमर घटती है महाराज! कुशल तो तब कहनेमें आवें कि मनुष्य चिरंजीव होवे जिसके जीवन मरण साथ हैं उसको क्या खुशी है? चारोंकी चार बातें सुनकर दीवानसे कहा कि सच है. पढ़ानेसे पंडित नहीं, पंड़िताई जो कर्ममें लिखी हो तो मिले. यह कह दीवानके तईं सब प्रधानोंका सरदार किया और अपने राजका भार दिया. उन चारों लड़कोंके बिबाह कर दिये. और बहुत धन दौलत दी. इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज! कलियुगमें ऐसा धर्मात्मा और साहसी राजा होना कठिन है जो इतनी बुज़ुर्गी और धन पाय अपनी कही बातका खयाल न करे और जो न्यायका धर्म था सोही कहे. ऐसा जो तू कर्म करे और इसके योग्य हो तो इस सिंहासनपर पाँव धर और नहीं तो अपनी यह आशा तज. यह पुतलीकी बातें सुन राजा अपने मनमें चिंता करता हुआ वहांसे उठ मंदिरमें आया और

विचार करने लगा कि, देखूं मेरा भाग्य फिरे या अभागा रहूं. रात तो इसी तरह फिक्रमेंही बीतगई सुबह हुआ तब फिर राजा वहां आन मौजूद हुआ । चाहा कि पांव उठाकर सिंहासनपर धरें इतनेमें करुणावती नामवाली–

तेईसवीं पुतली–

कहने लगी सुन राजा! जो कदाचित् तू इस सिंहासनके ऊपर पांव रक्खेगा तो तुर्तेही जलकर भस्म हो जा-यगा. और तुझे लज्जा नहीं आती कि, तू घड़ी घड़ी यह इरादा करके आता है. और जो कोई होता तो फिर मुँह नहीं दिखाता! जिस सिंहासनपर राजा वीरविक्रमादि-त्य बैठे हैं तिसके ऊपर बैठनेका तू मानोरथ करे. हंसकी बराबरी कौवा नहीं कर सक्ता. सिंहके समान गदिड़को कोई नहीं मानता. पंडितके बराबर मूर्खको नहीं जानता इस वास्ते राजा! तू निर्बुद्धि है और तुझे कुछ ज्ञान नहीं जैसे मछली थोड़े जलमें उछलती है वैसे तू थोडी प्रभुता पाकर इतरा चला है. ऐसी ऐसी कठिन बातें सुनाकर पुतली रोने लगी. राजा अपने चित्तमें चिंता कर उस पु-तलीसे पूँछने लगा कि,कह सुंदरी! तूं क्यों रोती है? अपने जीका दुःख समझाकर मुझसे कह. राजा वीरवीक्रमादित्यमें क्या गुण और पुरुषार्थ था यह सुनकर करुणावती पुतली बोली राजा! जो तुम स्थिर होकर बैठो और कान देकर सुनो तो मैं सब कथा कहतीहूं.

तब राजा यह बात सुन प्रसन्न हो आसन बिछवा वहां बैठगया और जितने लोग राजाके साथ थे गिर्द ओ पेश वे सब बैठगये. फिर पुतली बोली कि, राजा! वीरविक्रमादित्यके गुण तूं सुन ऐसा यशी, साहसी और पुण्यात्मा इस कलियुगमें कोई जन्मा नहीं और न कोई जन्मेगा. जिस समय राजा वीरविक्रमादित्य शंखको मार राजगद्दीपर बैठा तब शंखके दीवानको बुलाकर कहा कि, तुझसे मेरा काम न चलेगा. इससे यह बेहतर है कि, बीस दास मुझे अच्छे ढूंढ़कर दे कि जो राजकाज करनेके लायक हों, क्योंकि तुझसे कामका बंदोबस्त न होगा. मैं उनसे अपना सब काम करा लूंगा. राजाकी आज्ञा सुन दीवानभी बीस आदमी उसी नगरमेंसे ढूँढ़कर लाया. कुलमें, उमरमें, सुंदरतामें, सबके सब अच्छे थे. उनको राजाके सामने खड़ेकर दिये. तब राजा उनको देखतेही बहुत प्रसन्न होगया. और उसी समय सबको बागे पहना पान देकर कहा कि, तुम हमारी खिदमतमें सदा हाजिर रहो. फिर उसके कई दिनके बाद उनमेंसे किसीको दीवान, किसीको कोतवाल, किसीको सेनाध्यक्ष किया. गरज इसी तरहमें हर एकको एक काम देकर पुराने लोगोंको जवाब दिया. और सब नया बँदोबस्त कर दिया. पर एक उस पुराने दीवानको जवाब न दिया. दीवान जब अपने घरमें बैठा करता तब वे सब पुरानें लोग आकर हाजिर हुआ करते और आपसमें चर्चा करते

कि, यह राजा बुद्धिमान् है. जो राजको यों लिया और बँदोबस्त यों किया. कई दिनके बात उन लोगोंसे दीवानने कहा कि, तुम मेरेपास न आया करो. इस लिये कि काम तो मेरे हाथ तुम्हारा निकलता नहीं और नाहकको राजा सुनेगा तो खफा होगा कि, यह अपने घरमें क्या मता किया करते हैं ? इस वास्ते मैं अपनी बदनामीसे ड़रताहूं. कुछ तुम मेरे इस कहनेका अपने मनमें बुरा न मानना. यह सुनकर उनमेंसे फिर कोई उसके पास न आया. यह अपने मनमें कहने लगा कि, ऐसा कुछ काम कीजिये जिसमें संतुष्ट हो रैनदिन यही विचार करता रहा था. एक दिन वह प्रधान नदीके किनारे गया. वहां जाकर स्नान ध्यान कर कमरभर पानीमें खड़ा हुआ जप करताथा इसमें उस नदीमें एक फूल अति सुंदर कि वैसा कभी दृष्टिमें न आया था. बहता हुआ देखा. अपना जप छोंड़कर आगे बढ़ फूल लेकर जीमें विचारा कि यह राजाको भेंट करूंगा तो वह देखकर बहुत खुश होवेगा. वह फूल हाथमें ले खुशी खुशी अपने घरमें आ कपड़े दरबारके पहन राजाके पास गया. और फूल नजर किया. राजा फूल लेकर खुश बहुत हो बोला कि, अपने राज पाटका मैंने तुझे प्रधान किया. उसने उठकर भेट दी और आदाब बजालिया. फिर राजाने कहा इस फूलका वृक्ष मुझे लादे. और लादेगा तो मैं तुझसे बहुत खुश हूंगा और जो न लादेगा तो अपने नगरसे

निकाल दूंगा. यह राजाकी आज्ञा ले अपने मंदिरमें आया और जीमें विचार करने लगा कि, मैंने पूर्व जन्ममें ऐसा क्या पाप किया है कि जो ऐसी सुंदर सुवस्तु राजाको दी और राजाने प्रसन्न होकर ली. फिर यह क्रोध किया. कर्मकी गति बूझी नहीं जाती कि भला करते बुरा होवे. अकेला बैठा बहुत चिंता करने लगा कि, अगर राजाकी आज्ञा न मानूं तो देशनिकाल मिले और ढूँढ़ने जाऊं तो कहांसे ढूँढ़कर लाऊं? जो दुःख पाकर कही जाऊं और ढूँढ़े न पाऊं तो औरभी दूना दुःख होगा. मैं यह जानता हूं कि, काल मेरे निकट आकर पहुँचा है. इससे अपयशका मरना भला नहीं अगर योंही मरना है तो बनमें जाइये जो ढूँढ़े मिले तो ले आइये नहीं तो वहीं मर जाइये. इतनी बातें अपने जीमें विचार ढाढ़स करके बैठा अपने दीवानको बुलाकर कहा कि किसी कारीगर बढ़ईको बुलादो कि, एक नाव हमे ऐसी तयार करके दे कि बगैर मल्लाह जिधरको चाहें ले जावें. कारीगर बढ़ईको बुलवा दीवानने हाजिर कर दिया. बढ़ईने कहा कि महाराज! कुछ मुझे खर्चेकी आज्ञा होवे तो मैं जल्दी बनालाऊं. मंत्रीनें दीवानको कहा कि यह जितने रुपये मांगे उतने इसे दो. उसने मुँहमांगे रुपये उसे दिये, वह घरको ले गया औरकितनेक दिनोंके बाद नाव तैयार करके खबरदी कि नाव तैयार हो चुकी. दीवाननेभी अपने स्वामीसे जाकर कहा कि,आपने जो

नाव बनवानेकी आज्ञा दी थी सो तैयार है. यह सुनतेही दीवान उठ नदीके किनारे आकर नावको देख प्रसन्न हो उस बढ़ईको घोड़ा जोड़ा दे पांचगांव वृत्ति कर दिये और दीवान अपना सामान नावपर रखवा आप कुटुंबसे बिदा हो हाथ जोड़कर कहने लगा कि, जो हम जीते फिरेंगे तो फिर तुमसे मिलेंगे और जो मरगये तो यही बिदा हमारी है. यह कहकर रुखसत हुआ. तमाम घरके लोग कूक मार रोने लगे. फिर यह भी जी भारी किये हुये इस नावपर बैठा पाल चढ़ा कि कीश्ती खोल जिस तरफसे वह फूल बहता हुआ आया उसी तरफको वह चला जाता था. और दोनों किनारेके वृक्षोंको देखता जाताथा. कितनेक दिनोंमें चला चला एक महाबनमें जा पहुँचा और खानेकी जिन्सभी तमाम हो गई तब उसने अपने जीमें बिचारा कि, अब नावपर बैठ रहना उचित नहीं जिस कामको आया हूं उस कामकी फिक्र किया चाहिये यह सोचकर किसी पालपर उड़ाये जाता था. कि एक पहाड़ दरमियान उस दरियाके नजर आया. और उसी पहाड़से पानी आता था. किश्ती वहीं लगा. आप उतर कर पहाड़पर जाकर क्या देखता है कि जहां तहां हाथी गैंड़े शेर अरने दौड़ रहे हैं सिवाय उनकी आवाजोंके और कोई बात कान नहीं पड़ती. सुन सुन अवाजें अपने जीमें सहमा जाता

था. इस परभी आगेही पांव धरता था. जब उस पहाड़को लांघ गया वहां जाकर देखे तो एक वैसाही फूल बहा हुआ चला आता है. उस फूलको देख जीमें ढ़ाढ़स हुई. और कहने लगा कि वैसा फूल दूसराभी देखा. भगवान् चाहे तो वृक्ष भी नजर आवेगा. ज्यों ज्यों आगे बढ़ा त्यों त्यों फूल और भी बहते देखे. वह अंदेशा करनेका कारण उसके जीमें कमती हुआ. और उसके मनमें कुछ करार आया. आगे देखता है कि एक बड़ा पहाड़ है और उसके नीचे एक मंदिर है उस मंदिरको देखकर अपने मनमें विचारा कि, ऐसा सुंदर मंदिर उस जगह बना हुआ है चाहिये कोई मनुष्यभी होय यह कहता हुआ उस मंदिरके पास जाकर पहुँचा. और वहां जाकर देखे तो एक तरुवरमें तपस्वी जंजीर पांओंमें बांधे हुए उलटा लटक रहा है, मांस, चाम सूखकर काठ हो गया है और उसमेंसे एक एक बूंद रक्तका उस नदीमें गिरता है. और वह फूल हो वहांसे चला जाता है. ऐसे अचरजको देख जीमें यों कहने लगा कि भगवान्की लीला कुछ बुद्धिमें नहीं आती. नीचे निगाह करके देखे तो बीस योगी वैसेही जटाधारी बैठे हैं और सूख के वेभी खड़ंग होरहे हैं और चारों दरफ उनके दंड कमंडलु पड़े हुए हैं और जिस ज्ञान ध्यानमें जैसे बैठे थे वैसेही बैठे हैं. यह दशा वहांकी देख प्रधान उलटा फिर अपनी

नावके पास आया. नावपर सवार हो कितनेक दिनोंमें अपने नगरमें आन पहुँचा. लोगोंने खबर उसके आनेकी पा पेशवाई लेनेको गये और इसे ले आये. जो कोई आताथा सो मिलकर क्षेम कुशल पूंछ कर बधाई देताथा. घरमें भी उसके नौबत बाजने लगी. मंगलाचार होने लगा. यह खबर राजाने सुनी. और एक प्रधानको भेज दीवानको बुलाया. वह आनकर लेगया. यह जाकर राजाके पांवपर गिर पड़ा. राजाने उठा छातीसे लगा क्षेम कुशल पूंछी और कहा कहां तलक तू गयाथा. और कहां ठिकाना उसका कर आया ? यह सुनतेही वे फूल जो लायेथे सो भेंट किये. और हाथ जोड़कर कहने लगा कि, महाराज ! एक अचंभेकी बात है जो मैं कहूंगा तो आप न पतियावेंगे. फिर राजाने कहा जो तूने अचंभा देखा है सो बयान कर । तब वह बोला महाराज ! मैं यहांसे चला हुआ एक जंगलमें पहुँचा और वहां जाकरएक पहाड़ देखा. उस पहाड़पर जब मैं चढ़ा तो और एक पहाड़ नजरआया. इस तरहके पहाड़ लांघ जब मैं आगे गया. तब एक पहाड़के तले एक सुंदर मंदिर देखा. जब मैं उसके पास गया तो एक पेड़पर तपस्वी पांओंमें जंजीर बाँधे हुए उलटा लटकता हुआ नजर पड़ा. मांस चाम सब उसका हाड़में सट रहा है और रक्त उसकी देहसे जो टपकता है सो फूल बनकर बहता है और उसके नीचे

देखा तो बीस तपस्वी आसन मारे जिस ध्यानमें बैठेथे योंके योंही रहगये हैं और जान एकमेंभी नहीं. यह सुनकर राजा हँसा और मंत्रीसे बोला कि, तू सुन मैं उसका बिचार तुझसे कहताहूं कि वह जो तूने तपस्वी सांकलमें लटकता हुआ देखा वह तो मेरी देह है. मैंने उस जन्ममें ऐसी कठिन तपस्या की थी कि उसका फल यह राज मुझे मिला है और जो वह बीस सिद्ध तूने देखे सो बीसों दास हैं कि, जो तूनें लादिये और उस तपस्याके तेजसे मेरे आगे कोई नहीं ठहर सकता. उसी बलसे मैंने शंखको मारा और यह पूर्बजन्मका खिला था इसमें मेरा कुछ दोष नहीं. जबतलक मैं इस पृथ्वीमें अखंड राज करूंगा तबतक तू मंत्री रहेगा. तू अपने जीमें चिंता मतकर. इसमें दोष तेराभी कुछ नहीं जैसा पूर्व जन्मका लिखा था सो हुआ और जैसी तब उन्होनें मेरे सेवा कीथी वैसाही अब उसके फलभोग करेंगे. तब उन्होंने मेरेसाथ जी दियाथा उस लिये मैं उन बीसोंको अपने निकट रक्खा है. यह अपना परिचय देखनेके लिये तुझसे निठुराई की थी.अब तेरा मन पतियाया. और तूने हमारा मर्म बूझा. क्योंकि सब लोग कहते हैं कि विक्रमने अपने बड़े भाईको मारा इसमें दोष मेरा कुछ नहीं और जो कर्मका लिखा है सो हो रहता है. आजसे मैंने तुझे अपना प्रधान किया. और जिसमें राजकाज अच्छा होवे वह कीजो. यह बात किसीके

आगे मत कहियो किसलिये कि, जो सुनेगा सो राजके लोभसे योग कमावेगा. इतनी बात करुणावती पुतली कहकर बोली कि, सुन राजा भोज ! जितना बीरविक्रमादित्यका राज था तिसका भार उसने दीवानको दे मुखत्यार करदिया. और राज पाट हवाले करदिया. जो इसके समान तू होगा तो इस सिंहासनपर बैठनेको नाम ले नहीं तो यह खयाल दिलसे दूर कर. वह साअत और वह दिनभी राजाका टलगया. दूसरे दिन सुबह आन फिर सिंहासनके पास खड़ा रहा तब चित्रकला–

चौवीसवीं पुतली–

बोली सुन राजा भोज ! मैं एक दिनकी हक़ीक़त राजा बीरविक्रमादित्यकी तेरे आगे कहतीहूं तू दिलमें अपने खूब तरह समझ. एक दिन राजा विक्रमादित्य नदीके किनारे दशहराको नहाने गया था. वहां जाकर देखे तो एक रंडी बनियेकी जवान खूबसूरत नदीके तीर खड़ी हुई बाल सुखाती है और सामने उसके साहूकारका बच्चा बैठा तिलक दे रहा है और आपसमें दोनोंकी सैन चल रहीथी. कभी तो वह स्त्री हाथ नचाय भौंहें मटकाय बाल सुलझाती है और कभी शिरका अँचला छातीसें सरका बदन दिखा फिर छिपाती है, कभी आरसी दिखा चूमकर छातीसे लगाती है इस तरहसे अनेक रीतिसे चेष्टा कर रही है और वहभी इसी तरह इशारे कर रहा है. उन दोनोंकी हालत देख राजाने

अपने जीमें बिचारा कि इनका तमाशा देखा चाहिये कि, ये क्या करते हैं. राजानें स्नान ध्यान अपनाभी सब किया. पर उनकी ओरभी देखता रहा. इतनेमें वह स्त्री स्नान कर चद्दर ओढ़ घूँघुट कर अपने घरको चली. और साहूकार बच्चाभी उसके पीछे चला, राजाने एक हलकारा उन दोनोंके पीछे लगाया. और उस हलकारेको कह दिया कि इन दोनोंका मकान देख सबसे वाकिफ हो और हमें जल्दी खबर दे. जब वह औरत अपनें घरमें गई तब उसनें फिरकर देखा और शिर खोलकर दिखाया. फिर छातीपर हाथ धर अपने मंदिरमें गई और सेठके बेटेनेभी अपनी छातीपर हाथ रख लिया. यह खबर हलकारेने आ राजाको दी तब राजाभी अपनी सभामें आकर बैठा और एक पंडितसे पूँछा कि कोई स्त्रीचरित्र हमें सुनाओ कि हमारा जी सुनना चाहता है. तब पंडितने उत्तर दिया कि, महाराज ! मेरी तो क्या सामर्थ्य है जो मैं स्त्रियोंका चरित्र और पुरुषका भाग कहूं. ब्रह्माभी नहीं जानता, अदमीकी तो क्या कुदरत है ? और यह देखतेही बन आवै जबानसे कहा नहीं जाता. यह बात पंडितसे सुन राजा चुप हो रहा. और अपने जीमें कहा यह चरित्र देखा चाहिये. इतनेमें शाम होगई राजा उठ महलमें गया. और कुछ खा तुरंत बाहर निकल आया और उस हलकारेको बुलाकर कहा कि तू इस बातका ब्यौरा कुछ

समझ गया है क्या ? तब उसने जबाब दिया कि महाराज ! कुछ मेरे जीमें आया है पर आपके आगे मुझे कहते शंका होती है. तब राजाने कहा कि तू जो समझा है सो निडर होकर बयान कर. वह बोला महाराज ! उसने जो शिर खोलकर छातीपर हाथ रक्खा सो उसने कहा कि जिस वख्त अँधेरी रात होगी तब मैं तुझसे मिलूंगी. और उसनेभी छातीपर हाथ रख जवाब दिया कि, अच्छा. दासकी समझमें यह कुछ आता है. राजाने कहा तू तो सच समझा है यही उनका मतलब है. मैंनेभी बड़ी देरतलक घाटपर बैठे उनका मुद्दा मालूम कियाथा. पर तू अब मेरे तई उसके घर लेचल. हलकारेने कहा अच्छा मैं हाजिर हूं महाराज ! चलिये तब राजा हलकारेको ले उसके मकानके पास आया ओर उसको बिदा किया. पिछवाड़े चौवारेके एक खिड़की थी उसमेंसे चिराककी ज्योति नजर आतीथी. और कभी २ जां झाँकती थी तो उसकी झलकभी मालूम होतीथी.जब दो पहर रात गुजरी और खूब अँधेरा होगया तब राजाने उधरसे एक कंकरी उस खिड़कीमें मारी. लगतेही वह झाँकी राजाको देख यह जाना कि, वही पुरुष यहां आन पहुँचा. तब उसने तमाम घरका जवाहिर और सब गहना एक डब्बेमें भरा और साथ लेकर निकल राजा के पास आई कहा कि, यह ले और मुझे लेकर चल. राजाने कहा यों तो मैं तुझे न ले जाऊंगा क्योंकि तेरा खाविंद जीता

है जो कभी खबर पायेगा तो राजाके दरबारमें फिरयादको जायगा. तब राजा तुझे और मुझे मार ड़ालेगा, इससे बेहतर यह है कि, पहले तू इसे मार फिर आवो निड़र हो हम तुम सुखसे भोग करें. उसनें विलंब कुछ न किया सुनतेही घरमें जा कठारी मारकर फिर राजाके पास चली आई और वह जवाहिरका डब्बा राजाके पास दिया. और दोनों इस तरहसे नगरके बाहर गये. फिर आगे आगे राजा और पीछे वह स्त्री. जब नदीके किनारे पहुँचे तब राजा वहांही खड़ा हुआ. और अपने जीमें बिचार करने लगा कि, जिसने अपने स्वामीको मारनेंमे विलंब न किया उससे दूसरेकी क्या भलाई होगी ? इस वास्ते अब इससे जुदा होइये और इसका चरित्र क्या क्या है सो देखिये कि, अब यह क्या करती है ? यह दिलमें बिचार कर राजानें कहा ऐ सुंदरी ! मैं देखूं पहले इस नदीमें जल कितना है ? जो मैं इस नदीकी थाह पाऊं तो इसी रस्ते तुझकोभी ले चलूंगा. यह कह राजा नदीमें पैठा. और पैरकर पारका रास्ता लिया. जब उस किनारे जा पहुँचा तब पुकारकर कहा कि मैं तो पार उतर आया. पर तुझे ला नहीं सक्ता. क्योंकि इसमें पानी तो अथाह है. यह कह राजाने आगेकी राहली तब उस औरतने अपने मनमें बिचारा कि, द्रव्य तो सब उसके हाथ लगा है इसके लोभसे वह मुझे छोंड़

गया. अभी रात कुछ बाकी है बेहतर कि, फिर घर चलिये. और स्वामीके साथ जलिये. यह दिलमें ठानकर अपने घरमें गई और खाविंदके पास जा कूक मार हाय हाय कर रोने लगी और पुकारा कि, दौड़ो. मेरे खाविंदको चोर मारके भागे जाते हैं और घरकी सब माया लिये जाते हैं. यह रोनेकी आवाज सुन बाहरके सब लोग दौड़ आये और पूंछने लगे कि, चोर किधर गये हैं ? उसने कहा अभी इसी रास्तेसे निकल गये. लोग तो ढूँढ़ने लगे. और यह शिर पटक पटक रो रो कहतीथी कि, मेरा सुहाग लूटकर मुझे अनाथ किये जाता है. सब लोग कुटुंबके समझने लगे कि, यह तो भगवान्की माया है इसमें किसीका वश नहीं चलता. जब मौत आती है तो कुछ बहाना लिये आती है. इसके दिन पूरे हो चुके और कौन किसीको यों मार सकता है और कौन किसीको जिला सकता है. तू अपने जीमें ढाढस बांध और इसकी गतिकर. तब वह बोली मैं भी इसके साथ सती हूंगी. क्योंकि मेरा जगत्में इस बख्त कोई नहीं कि, मेरा सहाय करे. लोगोंने बहुतेरा समझाया, पर उसनें न माना और खाविंदको ले नदीके किरारे गई और चिना बना उसको लेकर आपही जलनेको बैठी. उस बख्त तमाम नगरके लोग देखने आये. उसी बख्त राजाभी वहां आकर खड़ा हुआ और उसने खातिर जमासे आग अपने

हाथसे चितामें लगाई और सम्हल बैठी. जब कपड़े और बाल उसके जलकर बदनमें आंच लगी तब घबराकर उठी और सब लोग देखकर हँसे. वह चितामेंसें कूद नदीमें जा पड़ी. तब राजासे चुप न रहा गया. और कहा कि अय सुंदरी ! यह क्या है ? वह बोली सुनो राजा. इसका मर्म जाकर अपनें घरमें पूछो और मैं जो अपने कर्ममें लिखा लायीथी उसीका फल पाया. पर तूने अपने घरका भेद न पाया. हम सात सखियां इस नगरमें हैं उनमेंकी एक मैं हूं और छै तेरे घरमें हैं ? यह कह वह तो पानीमें डूबगई. राजा अपने मनमें दुःख पा महलमें आया. और छिप रहा. किसीको दिखाई न दिया. एक दिन और एक रात वहां लगा रहा. दूसरी रात जब हुई तब आधी रातके समय छहों रानियां हाथोंमें कंचनके थाल मिठाई पकवानसे भरभर लेकर महलके पिछवाड़ेकी बाड़ीमें गईं उसके आगे एक बन था उस बनमें एक मठी थी. उसमें एक योगी ध्यान लगाये बैठा था. ये छहों रानियां दंडवतें कर वहीं जा बैठीं. वहां राजाभी जो उसके पीछे पीछे आया था. यह अहवाल देखने लगा. जब सिद्ध अपने ध्यानसे निश्चिंत हुआ. और उनसे हँस हँस बातें करनें लगा. और जिसकदर ये मिठाई पक्वान्न लेगईथीं सो सब आगे रख दिया. उसने भोजन किया और पान खाकर एक योगविद्याकी एक देहकी छै देह

भई और उन छहों रानियोंसे भोग किया. फिर वें छहों रानियां बिदा हो अपनें मंदिरको चलीं आईं. राजा यह चरित्र देख अपनें मनमें विचार करनें लगा कि, इस सिद्धने क्या किया कि अपना योग भ्रष्ट किया और उनका धर्म खोया. यह बिचार कर राजा सिद्धके सोहीं जाकर खड़ा रहा. सिद्ध मनमें कुछ शंका लिये बोला कि हे नृपति ! कहांसे आये हो अपने मनका मुझसे भाव कहो तब राजानें कहा मुझे आपके दर्शनकी इच्छा थी. इस लिये मैं यहां आया हूं. तब वह योगी बोला कि राजा ! तू मुझसे जो कामना मांगे सो तेरी पूरी करूं फिर राजाने कहा कि स्वामी ! एक देहकी छ देह किस तरहसे बनें वह विद्या मै आपके पास माँगताहूं मुझे बताओ नहीं तो मैं तुझे जानसे मार ड़ालता हूं इसका विचार कर जवाब दो. इतनी बात कह पुतली कहने लगी कि. सुन राजा भोज जब विक्रमनें सिद्धसे ये बातें कहीं तब उसने ड़रके वह विद्या दी. और राजाने वहां परीक्षा करली. तिस पीछे योगीको तलवार मार उसके टुकड़े टुकड़े कर ड़ाल दिया. फिर वहांसे निकल महलमें आया और जहां छहों रानियां बैठीं थीं वहां आनकर राजाभी बैठ गया. तब राजाको देखकर छहों उठकर खिदमतमें हाजिर हुईं. किसीनें पंखा हिलाया, किसीने हाथ मुँह धुलाया, किसीने पान बना खिलाया. इसी तरह सब अपनी २ प्रीति राजासे प्रकाश करनें लगीं. और

ज्यों ज्यों वे प्यार करती थीं त्यों त्यों राजा मान करता था. फिर राजा बोला सुनो सुंदरियो ! मैं तुमसे हित करता हूं और तुम मुझसे अनहित कर औरका ध्यान धरो यह तुम्हें उचित नहीं. तब वे बोलीं कि महाराज ! हमारे तो प्राणरक्षक तुम हो, तुम्हें देखे बिना हम जीतीं नहीं. तुम्हारा ध्यान हम आठों पहर करती हैं जो कभी तुम कहीं बाहर जाते हौ तौ हम चकोरकी तरह तुम्हारे मुखचंद्रके देखनेको तरसती हैं. और जैसे जल बिना मीन तड़फे तैसे हम व्याकुल रहती हैं और क्षणभरके वियोगमें जलकमलकी तरह हम कुम्हला जाती हैं. यह सुन राजा क्रोधकर मुसकुराया और बोला, सच है सुंदरियो ! हमने जाना तुम्हारा दिल मुझे नहीं छोड़ता जैसे एक सिद्धके छह सिद्ध होगये और फिर वह एकही सिद्ध हो गया. यह सुन रानियां एकदम चुप होकर बोलीं कि, महाराज ! ऐसी अचरजकी बात तुम कहतेहो जो कभी न देखी न सुनी और किसीको इतिवारभी जिसका न आवे. क्यों कर एक देहकी छह देह होयँ और इस बातको कौन मानेगा ? तब राजानें कहा कि चलो हम तुम्हें दिखादें. तब छहोंको अपने साथ ले उसी वाड़ीमें जा उस गुफाका मुँह खोल दिया. देख कर वे शरमागईं और अपने मनमें जाना कि, राजानें हमारा सब चरित्र देखा फिर राजानें कहा कि, तुमनें जाना या नहीं ?

यह सुनकर उन्होंने नीचे गरदनें कर जवाब कुछ न दिया. तब राजानें छहोंका शिर काट उस गुंफामें डाला और उसका मुँह बंद कर चला २ मंदिरमें आया. और आतेही नगरमें ढँढ़ोरा फिरा दिया कि जितनें ब्राह्मण और ब्राह्मणियां और ब्राह्मणोंकी कन्या हैं वे सब यहां आनकर हाजिर होवें. यह सुनकर सब हाजिर हुईं. जितनें रानियोंके गहने और वस्त्र थे सब ब्राह्मणियोंको पहनाये. और एक एक ब्राह्मणको एक एक गांव वृत्ति करदिया. और जितनी कन्या थीं उनको दान दहेज दे ब्याह कर दिया. और आप राजकाज करने लगा. इतनी बात कह पुतली समझाने लगी कि, सुन राजा भोज ! तू बड़ा पंडित है पर इस आसनपर वह बैठेगा, जो विक्रमादित्यके समान होगा. तब वह साअत गुजर गई. राजाभी वहांसे उठकर अपने मकानको गया. रातको इसी सोचमें पड़ा रहा. दूसरे दिन सुबहको फिर सिंहासनके पास आकर चढ़नेको तैयार हुआ तब जयलक्ष्मी—

पचीसवीं पुतली--

बोली--सुन राजा भोज! एक दिनकी बात मैं तेरे आगे कहतीहूं एक भाट निपट दरिद्री खराब हाल था. सब पृथ्वीके राजाओंके पास फिर आयाथा और एक कौड़ीका किसीसे उसने फायदा न पाया था. जब अपने

बत्तीसवीं पुतली–

बोली–सुन राजा भोज ! एक कथा मेरी सुन और अंत कथा मैं तुझसे बुझाकर कहतीहूं सो तू अपना मन लगकर सुन कि, जब अंतसमय राजा बीरबिक्रमादित्यका आया तब आप विमानपर बैठ इंद्रलोकको गया. और अंबावती नगरीमें शोक हुआ. तीनों लोकोंमें हंगामा मचा कि, राजा बीर बिक्रमादित्यका काल होकर वह सदेह स्वर्गको गया. इसवक्त आगिया और कोयका ये दोनों वीरभी राजाहीके साथ लोप हो गये. न वह स्वामी रहा न वे दास रहे. संसारमेंसे धर्मकी ध्वजा उखड़ गई और सब रैयत राजाके राजकी कूक मार मार रोने लगी. ब्राह्मण, भाट, भिखारी, राँड़ दुःखी सब हाय मारकर रोने लगे. कि, हमारा आदर करनेवाला और मान रखनेहारा राजा आज जगत्मेंसे उठ गया. रानियां तो राजाके साथ सती हुईं. और जितने दास दासी थे सो सब अनाथ हो गये. और जितने लोग नौकर, चाकर, सिपाही, शागिर्द पेशः थे सो सब रोते थे. और कहते थे कि, हाय ! हममेंसे कोई काम न आया. इसी तरह महा खलबल राजाके राज भरमें हो रहीथी. तब मंत्रीने राजकुँवर जैतपालको राजतिलक दे गद्दीपर बिठाया. और तमाम मुल्कोंमें राजा जैतपालके नामका ढंढ़ोरा फेर दिया.

यह सुनकर उन्होंने नीचे गरदनें कर जवाब कुछ न दिया. तब राजानें छहोंका शिर काट उस गुंफामें डाला और उसका मुँह बंद कर चला २ मंदिरमें आया. और आतेही नगरमें ढँढ़ोरा फिरा दिया कि जितनें ब्राह्मण और ब्राह्मणियां और ब्राह्मणोंकी कन्या हैं वे सब यहां आनकर हाजिर होवें. यह सुनकर सब हाजिर हुईं. जितनें रानियोंके गहने और वस्त्र थे सब ब्राह्मणियोंको पहनाये. और एक एक ब्राह्मणको एक एक गांव वृत्ति करदिया. और जितनी कन्या थीं उनको दान दहेज दे ब्याह कर दिया. और आप राजकाज करने लगा. इतनी बात कह पुतली समझाने लगी कि, सुन राजा भोज ! तू बड़ा पंडित है पर इस आसनपर वह बैठेगा, जो विक्रमादित्यके समान होगा. तब वह साअत गुजर गई. राजाभी वहांसे उठकर अपने मकानको गया. रातको इसी सोचमें पड़ा रहा. दूसरे दिन सुबहको फिर सिंहासनके पास आकर चढ़नेको तैयार हुआ तब जयलक्ष्मी—

पचीसवीं पुतली--

बोली--सुन राजा भोज! एक दिनकी बात मैं तेरे आगे कहतीहूं एक भाट निपट दरिद्री खराब हाल था. सब पृथ्वीके राजाओंके पास फिर आयाथा और एक कौड़ीका किसीसे उसने फायदा न पाया था. जब अपने

घरमें आया तौ देखा कि बेटी जवान ब्याहनेके लायक हुई है यह अपने जीमें चिंता ही करताथा कि, उसकी भाटिन बोल उठी कि, तमाम देश तुम फिर आये पर जो कमाई कर लाये सो कहो. तब उसने जवाब दिया कि, मेरे प्रारब्धमें धन नहीं. मैं इस लिये कि, तमाम राजाओंके पास गया. और शिष्टाचार उन्होंने सब किया. पर एक दाम न हाथ आया. अब मेरे जीमें एक बात आती है, राजा बीरबिक्रमादित्य बाकी रहगया है उसके पासभी जाकर मांगूं जो मेरे जीका संदेह मिटे. फिर वह भाटिन बोली अब तुम कहीं मत जाओ और संतोषकर रहो. कर्मका लिखा फल यहीं बैठे पाओगे. फिर भाटनें कहा कि, राजा बीरबिक्रमादित्य सुनते हैं कि बड़ा दानी है, उसके पास अपनी कामना जो ले गया है वह खाली हाथ नहीं फिरा और अपने मकसदको पहुँचा है. ये बातें कर वह राजाके पास चला और गणेशको मनाय राजाके सन्मुख जा खड़ा रहा. तब राजानें दंडवत की और वह आशीश देकर बोला कि, हे राजा ! बहुत भूमि मैं फिर आया हूं और आपका यश मुझे यहां ले आया है. आप इस मर्त्यलोकमें इंद्रका अवतार हो. आपकी बराबर दानी इस संसारमें कोई नहीं. इस समयमें आप दान देनेमें राजा हरिश्चंद्र हो. और तमाम पृथ्वीमें आपकाही यश छाय रहा है. और स्वामी! मैं कालिकासुत हूं. भाटवंशमें आनकर अवतार लिया है. और

अब तुम्हें याचने आयाहूं. मेरा मनोरथ पूर्ण करदो. मैंने संसारमें फिरकर खूब देखा कि, सिवाय तुम्हारे मेरी आशाका पुजानेवाला और कोई नहीं. तब हँसकर राजानें कहा कि, तू अपना मतलब सब मेरे आगे प्रकाश करके कह तो मैं तेरी कामना पूरी करूं. भाटनें कहा यों मुझे अपने कर्मका भरोसा नहीं आप बचन दीजिये तो मैं खातिरजमासे कहूं. तब राजाने बचन दिया. भाट बोला महाराज! मुझे मुँहमांगा दान दीजिये. मेरी पुत्रीकी शादी करदो बारह बरसकी कन्या मेरे घरमें बैठी है. इस लिये मैं आपके पास याचने आया हूं. यह सुन राजाने हँसकर मंत्रीसे कहा कि जो यह मांगे वह इसे दो. फिर भाटने कहा महाराज! जो कुछ आपको देना है सो अपने सन्मुख मँगाकर दीजिये मुझे इस संसारमें अब किसीका इतबार नहीं. राजानें दश लाख रुपये रोक और हीरे, लाल, मोती, सोने, रूपेके गहने थाल भरकर दिये. और वह ले आशीश दे अपने घरमें गया. जो कुछ लाया था सो सब ब्याहमें लगाया. और राजाने उसके पीछे जासूस कर दियेथे कि तुम देखो कि, यह धनको लेजाकर क्या करता है? इसकी खबर ठीक मुझे लाकर दो. जब शादी कर चुका और उसके पास एक दिनके खानेको कुछ न रहा तब उन हलकारोंने जाकर राजाको खबर दी कि, महाराज! उस भाटने ऐसा ब्याह बेटीका किया कि इस कलियुगमें कोई और

करसकता नहीं. जो कुछ वो आपके पाससे धन दौलत लेगया सो सब क्षणभरमें बेटीको दे व्याह दिया. यह सुन राजाने और कई लाख रुपये उसके घर भेज दिये. और अपने चित्तमें बहुत प्रसन्न हुआ कि, धन्य भाग्य मेरा है जो मेरे राजमें ऐसे हिम्मतवाले लोग हैं. इतनी बात कह पुतली बोली कि, सुन राजा भोज! इतना धन देकरभी राजाने उसका खर्च सुन और दौलत भेज दी. ऐसा दानी तू हो तो इस सिंहासनपर बैठ और नहीं तो मनके लड्डू खानेसे कुछ हांसिल नही हैं. यह सुनकर राजा अपने महलमें आया. फिर सुबह हुआ तो स्नान पूजा कर वहीं आन पहुँचा. इतनेमें विद्यावती-

छब्बीसवीं पुतली–

कहने लगी कि, सुन राजा भोज! मैं तेरे आगे ज्ञानकी बात कहतीहूं और तू मन देकर कान रख. जब आदमी जन्मता है तो कुछ संग नहीं लाता और मरता है तो कुछ नहीं लेजाता. इस जीवितका फल यही है कि, संसारमें आकर कुछ करनी करे. और जैसी करनी करेगा वैसाही फल पावेगा. और संसारमें जीवन थोड़ा है इससे ऐसा यश करो कि, जाने परभी जगमें नाम ठहरा रहै. दोनों लोकोंमें सुख पावे. यह मनुष्यजन्म वारंवार नहीं पाता. जब पूर्व जन्ममें दान, व्रत, तपस्या बहुत कर आता है तो यह नरदेह पाता है. और लक्ष्मी दान कर कुछ सोच

मत कर. यही अपने जीमें सदा रख कि, दान हमेशा किया कीजिये. यह भयरूप जो संसारसागर है इसके तरनेको सिवाय दान, उपकार और हरिभजनके चौथा उपाय नहीं. मैंनें तुझे कहा कि, साथ कोई कुछ ले नहीं जाता मैं तेरे आगे सब कहतीहूं कि, राजा हरिश्चंद्र, राजा कर्ण, राजा बीरविक्रमादित्य क्या ले गये ? और जिन्होंने दान उपकार हरिभजन किया उनका जगमें नाम रहा और अंतसमय वैकुंठ पाया. ये बातें पुतलीकी सुन राजा भोज बोला कि, राजा विक्रमादित्यनें क्या किया है ? वह कह. तब विद्यावती पुतली बोली कि, एक दिन राजा बीरविक्रमादित्य राजसभामें बैठा था तब एक दासीने आकर अरज किया कि, महाराज ! उठिये पूजाका समय जाता है. यह सुनकर राजानें विचारा कि, इसने सच कहा मेरी उमर चली जाती है और मुझसे ज्ञान, धर्म, पूजा बन नहीं आई इससे उत्तम यही है कि, इस राजकाजकी माया भुलाय आप योग कमाइये जो कि और जन्ममें काम आवे. यह राजाने अपने जीमें बिचार और राजपाट, धन जन मिथ्या समझकर तपस्या करनेको एक बनको चला और यह बिचार करता जाताथा कि, इस संसारमें जीना सबेरेकी ओसकी समान है और जिसके भरोसेमें मैंनें अपना काम अकारण गवाँया यह बिचार करता हुआ राजा एक महाबनमें जा पहुँचा वहां जाकर देखे तो

एक मंडली तपस्वियोंकी बैठी हुई है, धुनी एक एकके आगे जाग रही है, आसन मारमार अपने अपने ध्यानमें लीन हो रहे हैं. कोई ऊर्ध्वबाहु, कोई कपाली आसन मार, कोई पंचाग्नि, इसरीतिसे अनेक अनेक प्रकारकी साधना कर रहे हैं और कोई कोई उनमें बैठ शरीरसे मांस काट काट होम कर रहा है इस तरहसे उनकी तपस्या देख राजाभी तपस्या करने लगा. आपभी तपस्या करताथा और कईएक दिनमें तपस्वियोंने अपना शरीर सब होम करदिया. उनकी देखादेखी राजाभी अपना शरीर होमने लगा. कई महीनोंमें राजाने एक दिन शिरभी अपना काट होम करदिया. वहां जो एक शिवका मंदिर था उसमेंसे एक शिवगण निकला और निकलकर सब तपस्वियोंकी धुनीमेंसे राख समेट कर जुदी जुदी ढेरी की और फिरजा शिवको खबर दी कि, महाराज ! आपने कहाथा सो मैंने किया तब शिवने आज्ञा दी कि, यह अमृत तू लेजा और उनके ऊपर छिड़क आ. यह आज्ञा पाय अमृत ला ज्यों ज्यों छिड़कताथा त्यों त्यों उनसे एक २ आदमी शिव शिव राम राम कहकर खड़ा रहताथा. सब पर तो उसने छिड़क दिया पर राजाकी धुनी भूल गया और सब तपस्वी मिलकर शिवकी स्तुति करने लगे कि, महाराज ! आपका भक्त राजाभी है आप अनाथके नाथ हो जिसने आपका स्मरण किया तिसको तभी तुमनें फल दिया और जहां जहां

सेवकोंको संकट हुआ है तहां तहां उसका सहाय किया है यह स्तुति करके उन तपस्वियोंने कहा कि, महाराज ! एक नृपतिभी हमारे साथ तपस्या करता था मालूम नहीं कि, उसको उठानेकी आपकी आज्ञा हुई कि नहीं. यह सुन माहादेवनें उस गणकी तरफ देखा. देखतेही उसने अमृत ले जाकर जो धुनी बाकी रहीथी उसपर छिड़का. राजाभी हरिहर कहता उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ स्तुति करने लगा कि, महाराज ! संसारके सब जीवोंकी आप सहाय करते हैं और पालते हैं आप विना इस संसारसागरसे कौन पार उतारे ? जिसने जगमें आपको नहीं पहँचाना उसने अपना जन्म निष्फल खोया. फिर जितने तपस्वी वहां थे उनको शिवजीने मुँह मांगा वर दिया. और सबको बिदा किया. सबके पीछे जब राजा अकेला रहगया तो उसे कहा कि, हे राजा बीरविक्रमादित्य ! अब जो तेरी इच्छामें आवे सोही वर मुझसे मांग. मैं तुझे दूंगा. यह सुन राजाने कहा महाराज ! आपकी दयासे सब कुछ है पर एक यह माँगताहूं कि संसारके जन्ममरणसे मेरा निबेड़ा करो. जैसे और भक्तोंका निबेड़ा किया तैसे मुझ परमपापी आधीन दीनहीनको तारो. यह राजाकी बिनती सुन दयाकर शिवजीने हँसकर कहा कि, तेरे समान कर्मी इस कलियुगमें कोई नहीं है. और तू ज्ञानी, योगी, दाता, साहसी, तपस्वी है. कलिके राजाओंका उद्धार कर-

नेवाला है. और मैं तुझसे कहताहूं कि, तू जाकर अपना राज कर. तेरा काल निकट आवेगा तब तू मेरेपास आइयो. मैनें तुझे बचन दिया है कि अंतसमयमें मैं तुझे मोक्षपद दूंगा. इससे तू अब जाकर मर्त्यलोकमें आनंदसे राजकर. फिर राजा करुणा· करके बोला कि, महाराज ! संसारमें तुम्हारे प्रपंच कुछ जाने नहीं जाते या तो मुझे इस समय तारो नहीं तो मैं अपना जी देताहूं तब हँसकर शंकरजीनें कहा कि, जो तू जी देगा तो मृत्युबिना यम तुझे हाथसेभी न छुएगा. और फिर आयुर्बलके दिन भरने पड़ेंगे इसवास्ते तू जा उठ मेरा बचन जीमें रख. इतना कह शिवजी तो कैलासको गये. और राजाके हाथमें कमलका फूल दे यह· कह-गये कि जब यह कमल मुर्झायगा तब तू जानियो कि अब छै महीनेमे मैं मरूंगा. फूल ले राजा अपने नगरको आया और अपने मनका बिचार किसीसे न कहा. कितनेएक बरस पीछे वह कमलका फूल मुर्झा गया. तब राजाने समझा कि, मैं अबसे छै महीनेमें मरूंगा. जितनी कुछ धन और दौलत थी सो सब ब्राह्म-णोंको संकल्प करदी. स्त्री और पुत्रके खानेको कुछ धन दिया बाकी सब पृथ्वी ब्राह्मणोंको दान करदी. इस तरह राजा दान पुण्यकर सदेह कैलासको चला गया. इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज ! बिक्रमादित्यने इतना काम किया और जीवन मरण दोनों चीन्हा. इससे मैं तुझसे कहतीहूं कि, जीनेका

कुछ भरोसा नहीं और मरण साथ लग रहा है. दुःख सुखभी मनुष्यके साथ है और पाप पुण्यभी साथ रहते हैं. निर्गुण और सगुण ज्ञानभी घटमें रहता है पर एक ब्रह्महो अलग है इस वास्ते मैं तुझसे कहतीहूं ऐ भूपाल! संसारमें जिसकी कीर्ति रह जाती है सोही अमर है. जो मैंने तुझे कहा कि, मन बचन कर्म कर तू सच जान. वह दिन तो यों गुजर गया. राजा नाउम्मेद होकर अपने मकानको फिर गया. सुबह होतेही हाथ, मुँह धो; स्नान, पूजाकर फिर वहीं आन मौजूद हुआ और जितने राजाके सभामें लोग थे वेभी सब हाजिर हुए. राजाने अपने लोगोंसे कहा कि पुतलियां तो बातें झूंठ झूंठ बना मेरे आगे कहती हैं अब मैं इनकी बातें न सुनूंगा. और इस सिंहासनपर बैठूंगा. यह अपने लोगोंसे बातें करताथा कि-- जगज्ज्योति नामवाली-

सताईसवीं पुतली–

बोली–सुन राजा भोज! एक दिन राजा बीरविक्रमादित्य अपनी सभामें बैठा था कि, उसमें प्रसंग निकला. उसमें कोई बोल उठा कि, आज राजा इंद्रके बराबर कोई राजा नहीं है, क्योंकि वह देवलोकका राज करता है? यह बात राजानें सुन किसीसे कुछ न कहा और बैतालोंको बुलाकर कहा कि, मुझे इंद्रपुरीको ले चलो. बैताल तुर्त ले उड़े और एक दममें ले जाकर इंद्रकी सभामें पहुँचा दिया. राजानें जातेही वहां इंद्रको दंड-

वत् की और हाथ जोड़ खड़ाहुआ. तब इंद्रनें बैठनेको आज्ञा दी. यह हुकुम पाकर बैठगया तब इंद्रनें कहा तुम कहांसे आये हो ? और तुम्हारा नाम क्या है ? देश तुम्हारा कौनसा है? किस अर्थको यहां आये हो? सो तुम कहो. तब राजा बोला कि, स्वामी! अंबावती नगरीका मैं राजा हूं. मेरा नाम बिक्रम है, और आपके पद पंकजके दर्शनके अर्थ आया हूं. तब प्रसन्न हो इंद्र बोला कि, हमनेभी तुम्हारा नाम सुनाथा. और मिलनेकी इच्छाथी सो तुमनें आके यहां उलटी रीत की. अब जो कुछ तुम्हारा मनोरथ हो सो हमसे कहो. और जो कुछ तुम्हें चाहिये सो मांगो हम तुम्हें देंगे. राजानें कहा. स्वामी! आपकी कृपा और धर्मसे सब कुछ है और जो कुछ न हो तो मैं आपसे माँगूं. आपका दिया हुया सब कुछ मेरेपास है. राजाकी ये बातें सुनकर इंद्रनें प्रसन्न हो अपना मुकुट और एक विमान दे यह आशीश दिया, कि, जो तेरे सिंहासनको बुरी दृष्टिसे देखेगा वह तुर्त अंधा होगा. राजा वहांसे बिदा हो फिर अपने नगरमें आया और बधाई बजने लगी. इतनी बात पुतलीसे सुनकर राजा भोज सिंहासनपर हाथ धरकर एक अपने पांवको ऊपर रख खड़ा होकर कहने लगा कि, आसन मार गद्दीपर जा बैठूं. इतनेमें आँखोंसे अंधा होगया और दिवानी दिवानी बातें करने लगा. चाहता था कि, हाथ उसपरसे उठावें पर जुदा न होता था. यह हालत देख

पुतलियां खिल २ हँसने लगीं. और सब सभा भौचक होगई. और अपने जीमें सब लोग कहने लगे कि, राजाने क्या यह अज्ञानपन किया कि, बिना बात सुन सिंहासनपर पांव धर दिया. यह अपनी दशा देख राजा भोज बहुत पछताकर लज्जित हुआ. तब पुतली बोली कि, ऐ मूर्ख ! तूने हमारी बात न सुनकर यह फल पाया. अब तू ऐसा ही रहा. यह सुन राजा निराश होकर बोला इसका उपाय बताओ. पुतली बोली राजा बिक्रमका नाम ले तब तू इस दुःखसे छूटेगा. जब बिक्रमका यश राजा भोजने बयान किया तब हाथ छूट गया और आँखसेभी सूझने लगा. फिर नीचे उतर खड़ा हुआ. यह देखकर सब लोग भयमान होगये और राजाभी अपने चित्तमें ड़रा. सभाके सब लोग बोले कि, राजा बिक्रमके समान होना इस कलियुगमें बड़ा कठिन है. फिर पुतली बोली कि, राजा ! इसीवास्ते मैंने कहा था. और तू मेरी बात झूंठ मत मान तू मूर्ख है. कुछभी तुझे ज्ञान नहीं जो तू विद्या पढ़ा है इससे कुछ होता नहीं ज्ञान है सो औरही चीज है अपने बराबर राजा बीरबीक्रमादित्यको मत समझ. वह देवताओंके समान था. और उसके बराबर ज्ञान ध्यान तेरा नहीं. अपने जीमें इस सिंहासनकी आश छोंड़. यह सिंहासन तुझे नहीं साजेगा. और संसारमें बहुत बाते हैं वे कर जिसमें तेरा राज

स्थिर होजाय. प्रताप बढ़ै, कीर्ति रहे, वह दिनभी गुजर गया. राजा फिर अपने महलमें गया. रात ज्यों त्यों बीती. सुबह होतेही फिर उसी मकानपर आन खड़ा होगया तब **मनमोहिनी** नामक–

अठाईसवीं पुतली--

बोली–सुन राजा भोज! राजा बीरबिक्रमादित्यके समान बली,साहसी और ज्ञानी कलिमें दूसरा कोई हुआ हो तो तू मुझे बतादे.और जो मैं कहतीहूं सो सचकर जान. एक दिन मैंने राजा बीरबिक्रमादित्यसे हँसकर कहा कि, स्वाभी! पातालमें राजा बलि बड़ा राजा है, जिसके दाससमानभी.तू नहीं हो सकता है और जो अपनाराज तू स्थिर किया चाहे तो एकबार राजा बलिके पास तू जाकर आ. यह बात सुनतेही बैतालोंको बुला आज्ञा दी कि, पातालमें राजा बलिके पास मुझे ले चलो. यह सुनतेही बैताल तुर्त ले उड़े और दमभरमें पातालमें पहुँचा दिया. राजा वह नगर देख भौचक हुआ. और अपने मनमें कहने लगा कि, ऐसा नगर मैंने आजतक कहीं नहीं देखा. आनंद कैलासके समान होरहा है. धन्य राजा बलिकी जो इस नगरका राज करता है. इस तरहसे नगर देखता हुआ राजाके सिंहपौरपर जा खड़ा हुआ और हाथ जोड़ बिनती कर द्वारपालोंसे कहा कि, अपने राजाको मेरे आनेका समाचार

कहो कि, मर्त्यलोकसे राजा बिक्रम आपके दर्शनके लिये आया है. सुनतेही डेवढ़ीदारोंने अपने राजाके पास जा बिक्रमकी खबर दी. सुनकर राजा बलिने कहा कि, नरको मैं अपना मुँह न दिखाऊंगा. यह सुनकर दरवाननें आ राजासे कहा कि, तुम्हें दर्शन नहीं होगा तब राजा बिक्रम बोला कि, जब तलक दर्शन न पाऊंगा तब तलक यहांसे मैं न हलूंगा. यह बात दरवानने जाकर राजा बलिसे कही. तब उसने कहा कि, बिक्रम तो कौन है ? जो राजा इंद्रभी आवे तो मैं अपना दर्शन दूंगा नहीं. फिर कोई मनमें बिचार न आया फिर एक दिन राजाने दुःख पाके अपना शिर काट ड़ाला और बलिकी तमाम सभामें रौला मचा कि, बड़ा अयुक्त काम इस प्राणीने किया. राजाने यह बात सुन हँसकर आज्ञा दी कि, अमृत लेजाकर उसे जिलाओ और कहा कि, तुझे राजाका दर्शन होगा तू अपने जीमें मत घबरा इस वख्त तूं जा और अपना राजकाज कर जब शिवरात्रि आवेगी तब आइयो. तुझे दर्शन मिलेगा. यह सुन एक दास राजाका अमृत ले गया. और राजा बीरबिक्रमादित्यपर छिड़ककर जिलाया. जब राजा सावधान होकर बैठा. तब उसनें राजा बलिका संदेशा सब कहा. यह सुनकर बिक्रम बोला कि, तुम यह बात कहकर मुझे क्यों बहँकाते हो मैं तुम्हारा कहा नहीं माननेका. इससे उत्तम

यह है कि, तुर्त महाराजाका दर्शन करूं. यह सुन लोगोंने राजाके पास जाकर कहा कि, महाराज ! वह नहीं मानता और जाताभी नहीं. जब इस जवाब सवाल कहनेको कुछ देर हुई तब फिर राजा बीरबिक्रमादित्यने अपना शिर काट डाला. द्वारपालने राजासे कहा कि, महाराज ! फिर इस मनुष्यने जी दिया. राजानें फिर अमृत भेज दिया और कहा कि, उसे जिला समझाकर उसके नगरको पठा दो. एक दूतने आकर राजापर अमृत छिड़क जिलाया. और कहा कि तू अपने जीमें धीरज रख अब तुझे दर्शन होगा. और जितने राजाकी सभाके लोग थे उन्होंने एक मताकर राजासे कहा कि, महाराज ! बिक्रमकी आशको निराश मत करो, क्योंकि उसने बड़ा साहस किया है. उनकी बातें सुन राजा बलि उठकर द्वारपर आया और बिक्रमने दर्शन पाया. तब दंडवत् कर हाथ जोड़ कहा कि, महाराज ! धन्य है भाग्य मेरा. जो मैंने आपका दर्शन पाया. और जन्म जन्मका दुःख गँवाया. फिर कहने लगा महाराज ! क्या मेरा अपराध था जो आप मुझे दर्शन न देतेथे ? क्या मैं साहसी नहीं हूं या मुझे लोकके लोग नहीं जानते ? वह कौनसा पाप था. जो मैं आपके द्वारेपर आनेसे आपने बुरा माना. सो मुझे कृपाकरके कहो. तब राजा बलि हँसकर बोला कि, सुन बिक्रम कुलनायक ! तेरे समान और कोई राजा नहीं अब कान देकर

सुन कि, मैं तेरे आगे इसका ब्यौरा कहता हूं. पहले राजा हरिश्चंद्र बड़ा दानी, साहसी, यशी हो गया है और एक राजा जगदेव बड़ा प्रतापी और दानी हो गया है. उन दोनोंनेभी बड़ा दान और साहस किया था. पर तेरासा उनका न था. और उन्होंनेभी मेरे दर्शनकी बहुत अभिलाषा की थी. पर मैंनें दर्शन किसीको न दिया. तू एक द्वीपका राजा किस गिनतीमें है? पर तपस्या बड़ी जोरावर है जो तुझे मेरा दर्शन मिला. तब राजा बिक्रम फिर हाथ जोड़कर कहने लगा कि, हे महाराज! जो आपने कहा सो सब सच है. और मैंने निश्चयकर अपने ज़ीमें माना कि, आपने मुझपर बड़ी कृपा कर दर्शन दिया. और दया कर इस भवसागरसे पार किया. फिर राजा बलिने कहा कि, राजा बिक्रम! तू अब यहांसे बिदा हो और जाकर अपना राजकर. बिदाका नाम विक्रमने सुनकर बड़ा खेद किया. इतनेमें राजा बलिने एक अच्छा लाल मँगवाकर राजा विक्रमको प्रसाद दिया. और उसका जो गुण था सो बताया कि, जो तू इससे मांगेगा वह सब यह देगा. विक्रमने हाथ जोड़ लिया. और राजा बलिको दंडवत कर वहांसे निकला. और बैतालोंको बुलाकर सवार हो अपने नगरको आया. जब नगरके निकट आन पहुँचा तब एक नदीके किनारे देखे तो एक स्त्रीका खाविंद मर गया है उसे जलाकर

खड़ीहुई वह ड़करा ड़करा रोती है और कहती है कि, अब इस संसारमें मेरा मालिक कोई नहीं है और न मेरेपास कुछ माया है अब किस तरहसे तेरा श्राद्ध करूंगी. और पंचोंको क्या दूंगी? इसका कूक मार मार रोनेका अवाज राजानें सुना और वहां जाकर देखा. तो इसका ऐसा हाल हो रहा है सो देखकर वह रत्न यानें लाल उस स्त्रीको दिया और कहा कि, जो तू इससे मांगेगी सो यह लाल तेरी आशा तुर्त ही पूरी करेगा. उसको ले वह नारी अपने धामको गई और राजा वीरबिक्रमादित्यभी अपने महलमें आ दाखिल हुवा. इतनी बात कह पुतली बोली कि, सुन राजा भोज! ये गुण बिक्रममें थे. वह ऐसा साहसी था. और प्रजाका हितकारी जो तू सात स्वर्ग फिर आवेगा तो भी उसके समान कोई न हो सकेगा. इससे अब तू अपनें मनके खयालसे बाज आ. और जो राजाने काम किये हैं सोही तुझसे कहूंगी. वहभी दिन उसी तरहसे टल गया. रात ज्यों त्यों बीत गई. दूसरे दिन सुबह होतेही राजा भोज अपने दीवानको साथ ले आया. और फिर सिंहा-सनके पास जाकर खड़ा हुआ. इतनेमें **वैदेहीनाम**–

उन्तीसवीं पुतली–

कहने लगी–कि, हे राजा भोज! तू किस बातपर भूला है? सब सखियोंनें तुझे राजा बिक्रमकी कथा सुनाई तब भी तू पत्थर न पसीजा. अभी पहले मुझसे बात सुनले और पीछेसे सिंहासनपर

पाँव दे. राजाने कहा कि, अच्छा कह मैं सुनूंगा. पुतली बोली एक दिन राजा बीरबिक्रमादित्य रातको अपने मंदिरमें सोताथा कि एक ख्वाब देखा. वह मैं तेरे आगे कहती हूं. क्या देखता है कि, एक सोनेका महल है. और उसमें अनेक अनेक प्रकारके रत्न जड़े हैं. और तरह तरहके पाक पकवान और सुगंधें भरीहुईं हैं. और एक तरफ एक अच्छी फूलोंकी सेज बिछी हुई है. एक तरफ फूलोंके गहने चगेरोंमें भरेहुए हैं. अतरदान, पानदान, गुलाबपाश भरे धरे हैं और मकानके चारों ओर फुलवारी खिली हुई. बाहर उस मकानकी भीतोंपर रंग रंगके चित्र बनेहुए, कि जिनके देखनेसे तुर्त आदमी मोहित हो. और उस मंदिरके भीतर खूबसूरत स्त्रियां अच्छे साज मिलाये मीठे मीठे मधुर मधुर स्वरोंसे बैठी गाती हैं. और एक तपस्वी बैठा हुआ राग सुनता है. यह देख राजाने अपने जीमें कहा कि, यह तपस्वी इन नारियोंके योग्य नहीं है. इतनेमें आंख खुल गई और सुबह हुआ तब राजा स्नान ध्यान कर बीरोंको बुलाकर बोला कि, मैनें जिस जगहको स्वप्नमें देखा है तुम मुझे वहां ले चलो. राजाकी यह बात सुनतेही बीर उठाकर ले उडे और पलक मारते वहां जाकर पहुँचे. राजाने वहांसे नीचे उतर बीरोंको रुखसत किया. और आप उस बगीचेमें जा उस मकानकी

तैयारी देखतेही मनमें भौचक हो अपने मनमें कहने लगा कि, यह मकान किसने बनाया है? आदमीका तो मखदूर नहीं चाहिये तो ब्रह्मानें अपने हाथसे चित्त देके रचा है. फिर उस मंदिरके अंदर जा राजा खड़ा हुआ इतनेमें वहां जो रंडियां बैठीं गाय रहींथीं सो राजाको देख अपने मनमें डर चुप हो रहीं और उस सिद्धका स्मरण किया. उसने तुर्त आके दर्शन दिया. और वह बिक्रमको देख क्रोध कर बोला कि, अभी मैं तुझे शाप देता हूं कि, तू जलकर भस्म होजाय. किस लिये मेरे स्थानपर आया है? सुखसे ये त्रियां बैठीं राग आलाप कर रहीथीं. इतनेमें तूने आकर उनका क्यों भंग किया. यह सुन-कर राजा हाथ जोड़ बिनती करके बोला कि, महाराज! मैं अनजान यहां आया हूं. तुम्हारे दर्शनकी इच्छा थी पर तुम्हारे क्रोधकी आँचको कौन सह सकता है? मै आपका दास हूं. चूक मेरी माफ कीजिये. यह सुन वह योगी बोला कि, सुन बिक्रम! तूने सच कहा. मुझे बड़ा क्रोध हुआ था. पर जो तू मेरे सन्मुख न होता तो मैं तुझे शाप देता और अब मैं तेरी बात सुन प्रसन्न हुआ तू मुझसे मांग जो चाहिये. राजाने कहा कि महाराज! मैं क्या मांगूं आपके प्रसादसे मेरे यहां सब कुछ है. अन्न, धन, हाथी, घोड़े किसी चीजकी कमताई नहीं. पर एक वस्तु मात्र मांगनेके लिये मैं आपके पास आया

हूं जो कृपाकर दीजिये तो मैं मांगूं. यह सुन योगीने कहा कि, राजा! जो तू मांगेगा सो मैं दूंगा. यह बात सुनतेही बिक्रमनें कहा महाराज! यह मंदिर मुझे दीजिये, योगीने सुन कुछ बिलंब न किया. तुर्त वह मंदिर राजाको दिया. और अपना योगरूप धर वहांसे तीर्थव्रत करनेको गया. राजानें जब वह महल पाया तब प्रसन्न हो गद्दीपर जाकर बैठा और वे सब रंडियां जैसे योगीके आगे गातीथीं वैसेही तहांसे राजाके पास गाने लगीं. राजाभी उस मंदिरमें खुशीसे रहने लगा. वहां अनेक अनेक प्रकारके संभोग करने लगा. इतनी बात कह वैदेही. नाम पुतली बोली कि, सुन राजा भोज! इस रीतिसे राजा बिक्रमादित्य तो वहां बैठकर आनंद करने लगा और योगी तीर्थ तीर्थ फिरकर रहता था. और जो कोई सिद्ध मिलता था उससे अपना दुःख कहता था. इस तरहसे किसी और तीर्थमें जाकर पहुँचा और वहां एक यतीसे अपने जीके दुःखका ब्यौरा सब कहने लगा. उसने उसको कहा कि तू अपने स्थानको जा और भेष धरके राजा बिक्रमसे जाकर सवाल कर वह तो बड़ा धर्मात्मा है. जभी तू वह मकान मांगेगा तभी तुझे हवाले कर देगा. तू आपके मनमें चिंता मत कर. यह योगी उसकी सीख मान एक अति बूढ़े ब्राह्मणका भेष धर उस मंदिरके निकट आन पहुँचा. और उसके द्वारपर जा ताली दी. तालीकी

आवाज सुनतेही राजा बाहर निकल आया और उसे कहा कि, तू क्योंकर यहां आया है ? इस वख्त जो तेरी इच्छा होय सो मुझसे मांग. यह बात राजाके मुँहसे सुन ब्राह्मणने कहा कि, महाराज ! मैं तमाम पृथ्वी फिर आया हूं पर अपनी इच्छाका स्थान नहीं पाया कि जहां मैं बैठकर आराम करूं. यह सुन राजा हँसकर बोला कि, यह ठांव तुम्हारे माफिक हो तो लो. यह सुन ब्राह्मणने आशीश दी. और राजा उसे उस जगहपर बिठा अपने घरको आया. इतनी बात कह पुतली बोली कि, सुन राजा भोज ! तू ऐसा धर्मात्मा नहीं इसवास्ते इस सिंहासनपर मत बैठ. तू अपने मनमें यह बिचारता तो बिना समझे ऐसा इरादा न करता. जो उसकी बराबर हो वह सिंहासनपर बैठेगा. वह रोजभी इस रीतिसे बीत गया. राजा अछता पछता अपने मंदिरमें गया. रात तो ज्यों त्यों कटगई सुबह होतेही स्नान पूजाकर फिर वहीं आकर मौजूद हुआ. और सिंहासनपर बैठनेको पांव बढ़ाया. इतनेमें रूपवती नाम-

तीसवीं पुतली–

बोली––सुन राजा ! बावले अज्ञानी ! ऐसा पुरुषार्थ तूने कब किया ? जो सिंहासनपर बैठनेको तैयार होकर आया ? अब एक दिनकी बात राजा बीर बिक्रमादित्यकी मैं तुझे कहती हूं सो निश्चिंत होके सुन. राजा अपने महलमें एक रातको

आरामसे सोता था इतनेमें राजाके जीमें कुछ आया कि, इकबारगी उठकर कांछा बांध, ढाल तलवार ले शहरके कूचेमें फिरने लगा. और आगे जाकर देखे तो चार चोर खड़े हुए बातें कर रहे हैं. अपने मतलबकी बातें कर रहे हैं कि, अब किधरको चोरी करने हम चलें. तब उनमेंसे एक कहने लगा. कि अच्छी साअतमें चलो तो कुछ माल हाथमें लगे. और बुरी साअत चलनेसे दुःख पाकर खाली हाथ फिर आवेंगे. इस तरहसे सब बातें उनकी राजानें सुनी और उन्होंनेभी राजाको देखा. तब उनमेंसे एक बोला कि, तू कौन है ? राजानें कहा कि, जो तुम हो सोही मैं हूं. यह सुनकर उन्होंने राजाकोभी अपने साथ लगा लिया. और चोरी करनेको चले. आगे जा एक जगह पहुँचकर एकसे एक पूंछने लगा कि अपना अपना मन कहो. तब एक उनमेंसे बोला कि, मैं ऐसा मुहूर्त जानता हूं कि, जिसमें यात्रा करनेसे कभी खाली फिर न आवे. दूसरा बोला कि, मैं सब जानवरोंकी बोलियां समझताहूं. तीसरा बोला कि, मैं जिस मंदिरमें जाऊं वहां मुझे कोई न देखे. और मैं अपना कामकर फिर आऊं. चौथा बोला कि, मेरे पास एक ऐसी चीज है कि, कोई बहुतेरा मुझे मारे पर मैं न मरूं. उन चोरोंनें ये बातें कर राजासे पूंछा कि तू क्या विद्या जानता है ? तब वह बोला कि, मैं यह विद्या जानताहूं कि जहां धन गड़ा है वह

जगह मैं बताऊं. तब उन चोरोंने राजासे कहा कि, चल तू आगे हम तेरे पीछे हैं. जहां दौलत गड़ी होय सो हमें बता दे. इस तरह बातें कर आगे राजा पीछे पीछे चोर चले हुए राजमहलके पीछे बगीचेमें आये. और जिस जगह दौलत राजाकी गड़ी हुई थी सो उन चोरोंको राजाने बतादी. और उन्होंने वहां खोदा तो एक तहखानेका दरवाजा निकला. उसे तोड़कर अंदर जो देखें तो करोडोंका जवाहिर और अशरफियां रुपये भरे हैं. तब वह ले पोढ़े बांध शिरपर धर चले. इतनेमें एक गीदड़ बोला. तब उनमें जो जानवरोंकी भाषा जानताथा वह सुनकर समझ गया. और औरोंसे बोला कि, भाई ! यह गीदड़ बोलता है कि इस धनके लेनेमें कुछ कुशल नहीं. उनमेंसे एक बोला कि अपना शकुन तू रहने दे. पाई हुई लक्ष्मी तो हम नहीं छोड़ते. छोडें तो हमारे धर्ममें बट्टा आवे. तब उनमेंसे दूसरा बोला कि, उठो भाई ! धन रत्न तो पाये पर वस्त्र नहीं मिले इससे कहीं चलकर वहांसे वस्त्र लीजिये. तो फिर चोरीका नामभी न लीजिये. फिर उनमेंसे एक बोला राजाका धोबी यहां रहता है उसके घरमें चलकर सेंध दें तौ वहां तरह तरहके अच्छे अच्छे कपड़े मिल जावेंगे. यह मनसुबाकर धोबीके पिछेवाड़े तो वे गठड़ियां रखदीं और जाकर उसके घरमें कुन्ह लगा दी. इतनेमें उसका गधा देखकर बोल उठा तब

धोबी जागा और खफाहो गधेको खूबसा पीटकर कहने लगा कि ऐ कमबख्त ! मेरे पीछे पड़ा है. दिनभर घाटपर मैं मेहनत कर थक जाताहूं और रातको सोते यह मुझे सतावे इतना कह धोबी फिर जाकर सो रहा. गधा उन चोरोंको देख फिर बोला. आखिर धोबीने उस गधेको चार पांच मर्तबा मार हारकर रस्सी खोल छोंड़ दिया. और आप आकर सो रहा. चोर तो चोरी करने लगे. उतनेमें राजानें अपने जीमें विचार किया कि, वह तो अपना धन था. उसका जो चाहा सो किया और अब इनके साथ रह कर अधर्मका भागी कौन होवेगा ? यह विचार करके राजा अपने महलमें चला आया. और चोर पोढ़े बांध अपने घरको चले गये. सबेरा होतेही शोर हुआ कि राजाके भंड़ारमें चोरी होगई इतनेमें कोतवाल वहां आया और कोतवालने जगह जगह हलकारे और जासूस भेज दिये. और घाट घाट सब बंद कर दिया. आखीरको चोरोंकी तलाश करके चारों चोरोंको बांधकर हलकारे कोतवालके पास आये. कोतवालने उनको ले जाकर दरबारमें राजाके सोहीं खड़े करदिये. तब वे राजाका मुँह देख देख अपने मनमें बिचार करने लगे कि, राजाहीकी सूरतका पांचवां चोर हमारे साथ आया था. और जब हम सब मिलकर धोबीके यहां चोरी करनेको गये. तब वह हमारेमेंसे जाता रहा. अब यह बड़ा अचंभा है

कि, वह अपना हिस्साभी नहीं ले गया. ये अपने जीमें विचारते थे तब राजाने मुसकुरायके कहा तुम क्या मुँह देख देख अपने जीमें मेरा सोचते हो ? खैर तुम्हारी इसीमें है कि, माल जहां तुमनें रक्खा है वहांसे जलदी लादो. तब चोर बोले महाराज ! बड़े अचंभेमें हम पड़गये हैं, कि एक चोर रातको हमारे साथ चोरी करनेमें शरीक था. और जबतक हमने चोरी की तबतक हमारे साथ वह था. और अपना भाग लेनेके वख्त हमारेमेंसे भाग गया. तब राजाने कहा, अच्छा उस चोरकोभी अभी बता दो. तब उनमेंसे एक चोर बोला कि, महाराज ! जी चाहे तो आप हमें मार डालो और चाहे तो छोड़ दो पर आपके रूबरू-हम सच कहते हैं कि इस वख्त तुम तो राजा हो और रातको हमारे साथ आपही थे क्योंकि हमने बहुतोंके साथ चोरियां तो की हैं पर ऐसा किसीको न देखा कि, जो अपना बांटा छोंड़ दे. इस लिये हम धर्मसे कहते हैं कि, हमारे साथ आपही थे यह सुन राजा हँसकर बोला कि, तुम अपने जीमें मत ड़रो हमने तो तुम्हारी जान बकशीश की. पर एक बात हम तुमसे कहते हैं सो आजसे तुमको करनी पड़ेगी. तुम अब चोरी करनेसे हाथ उठाओ और बल्कि और दौलत जो तुम्हें चाहिये सो मेरे खजानेसे तुम ले जाओ. यह सुनकर चोरोंनें राजाकी बात कबूल की. राजाने उन्हें और भी मुँह मांगी दौलत दी.

और बिदा किया. ये धन ले ले अपने घरको गये. इतनी बात कह पुतली बोली कि, सुन राजा भोज ! तू ऐसा साहस न कर सकेगा, इसवास्ते इस सिंहासनके योग्य न होगा. इससे जाकर अपना राज कर और यह मनका खयाल छोड़ दे. यह सुन राजा चुप होकर वहांसे उठ अपने मकानमें दाखिल हुआ. वह साअत और वह दिनभी टल गया. अब राजा भोज वहांसे अपने मंदिरमें जा रातको सोचमें काटा दूसरे दिन सुबह होतेही सिंहासनके पास आकर खड़ा हुआ. और अपने मनमे यों बिचार करने लगा कि, मैं इस सिंहासनपर बैठने न पाया. और बिना स्वार्थही जन्म गँवाया. सब देश देश यह खबर हो चुकी कि राजा भोज राजा बीरबिक्रमादित्यके सिंहासनपर बैठने लगा. सो बैठना मेरा न हुआ. यह बात सुनकर सब लोग हँसेंगे और गंधर्व गालियां देंगे और मेरे कुलको कलंक लगा. यह अपने जीमें सोचकर राजा नीची गरदन किये सिंहासनके पास जाकर खड़ा हुआ. फिर अपने जीमें बिचारताथा कि, एक मा वह थी कि, जिसका बिक्रम जैसा पुत्र था और एक मैं हूं जो कुलको कलंक लगाया. और अपने मनमें जो मनसूबा किया सो तो बन न आया. ऐसी ऐसी बातें राजा मनमें विचार विचार चिंता करता था. और कुछ जीमें तरंग आती थी. और कुछ क्रोध आताथा कि, इतनेमें झुँझलाकर

जल्दी कर चाहा कि, सिंहासनके ऊपर बैठें. इतनेमें कौशल्या नामक—

इकतीसवीं पुतली—

बोली--कि, सुन राजा भोज! तू बड़ा मूर्ख है कि, हमारा कहा नहीं मानता और साहसको तू सहजकर जानता है. कंचनकी बराबरी पीतल नहीं कर सकता और हीरेके बराबर सीसा नहीं होता. और चंदनके गुणको नीम नहीं पाता. इससे तू हजारबेर अपने जीमें मनसूबा किया कर लेकिन राजा बीर बिक्रमादित्यके बराबर तू नहीं हो सकता और इस सिंहासनपर बैठते हुए तुझे शर्म नहीं आती? इतनी बात उस पुतलीकी सुनतेही राजा भोज अपने जीमें बहुतसा लजाया. और राजाने अपना जीतब धिक्कार कर माना. फिर इतनी बात कह पुतलीनें कहा कि, सुन राजा भोज! मैं एक दिनकी बात राजा बीर बिक्रमादित्यकी तेरे आगे कहती हूं सो तू मन लगा कर सुन. हे राजा भोज! जब राजा बीर बिक्रमादित्यके मरनेके दिन बहुत नजदीक आ गये तब राजाको मालूम हुवा और मालूम करके नगरके बाईं ओर गंगातीरपर एक मंदिर बनवाया जब वह मंदिर बन चुका तब आपभी वहीं जा उसमें रहने लगा. और तमाम मुलकोंमें ढंढ़ोरा पिटवा दिया कि, जो कोई दान लिया चाहे सो यहां आकर ले जावे. और जितनें ब्राह्मण, पंडित, भाट, भिखारी,

राजाके पास आये तिन्होंनें मुँह मांगा दान राजा बीर बिक्रमादित्यसे पाया यह खबर देवताओंकोभी जा मालूम पड़ी तब बहुतसे देवता स्वरूप बदल दान लेनेका बहाना कर राजाका सत देखनेके लिये वहां आये. और आ आकर जो जो जिसके जीमें आया सो सो उनके पास मांगने लगे. और राजानेभी सबोंका मांग पदार्थ दिया. जब दान ले चुके तब राजाके सामने खड़े हो आशीश दे कहने लगे कि, धन्य है राजा विक्रम, तेरे तईं और धन्य है तेरे मातपिताको तूने . ऐसा शक बांधा कि तीनों लोकमें तेरी निशानी रहेगी. सत्य युगमें जैसा सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र, और त्रेतामें जैसा दानी राजा बलि हुवा. और द्वापरमें जैसा राजा युधिष्ठिर हुआ तैसा कलियुगमें तू राजा बीर बिक्रमादित्य है. जैसे चारों युगोंमें तुम धर्मात्मा राजा हुए तैसे और न हुए न होंगे. इस तरह राजासे कह देवता तो बिदा होगये. इतनी बात कह पुतली बोली कि, सुन राजा भोज ! देवता तो सब बिदा हो गये. और राजा जाकर झरोखेमें बैठा. इतनेमें एक राजाको किसी ऋषिने शाप दियाथा सो-वह सोनेका हिरन बनकर राजा बीर बिक्रमादित्यके सोहीं आया. राजाने देखतेही उसके मारनेको धनुष और तीर उठाया. कि राजाने चाहा बाण मारें. इतनेमें हिरन बोला कि, मैं अगले जन्मका ब्राह्मण हूं मारे भूखके दिन रात फिरता हूं. एक

सिद्धसे मैंने अपनी मौत मांगी थी. सो उसने मुझे शाप देकर हिरन किया. फिर मैंने उस सिद्धसे कहा कि, महाराज! तुमने मुझे हिरन तो बनाया है पर मेरी गति आगे किस तरहसे होगी. सो मुझे बता दो. तब उस ऋषिने मुझसे कहा कि, कलियुगमें राजा बीर बिक्रमादित्य बड़ा दाता और साहसी होगा. उसका जब तू जाकर दर्शन करेगा तब तेरी इस देहसे मुक्ति होगी. इस लिये मैं तेरे दर्शनको आया हूं. राजाने उस हिरनकी ऐसी बात सुनकर हँसा और उस हिरनने उसी समयही अपने शरीरका त्याग किया. राजाने उस हिरनको जलाकर गंगामें बहा दिया. और बहुतसे उसके नाम यज्ञ किये. इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज! तू उसके बराबर क्योंकर हो सकता है. और तू अपने जीसे यह बात दूरकर और इस सिंहासनको लेकर अभी तुर्त गड़वा दे जहांसे लाया है वहां पहुंचा दे. इतनी बात पुतलीकी सुन राजा भोज अपने जीमें सोचनें लगा. और जवाब कुछ बन न आया. और निपट निराश हो अपने मंदिरमें आया. वह दिन इस तरह गुजर गया. और राजा अपने मकानमें आ रात तो उसी चिंतामें बिताई. सबेरे हुए मनमें वैराग्य लिया. और सब काम तुच्छ मानकर फिर उस जगह जा उस सिंहासनके पास खड़ा हुआ और चढ़नेको पांव उठाया तब भानुमती–

बत्तीसवीं पुतली–

बोली–सुन राजा भोज ! एक कथा मेरी सुन और अंत कथा मैं तुझसे बुझाकर कहतीहूं सो तू अपना मन लगकर सुन कि, जब अंतसमय राजा बीरबिक्रमादित्यका आया तब आप विमानपर बैठ इंद्रलोकको गया. और अंबावती नगरीमें शोक हुआ. तीनों लोकोंमें हंगामा मचा कि, राजा बीर बिक्रमादित्यका काल होकर वह सदेह स्वर्गको गया. इसवक्त आगिया और कोयका ये दोनों वीरभी राजाहीके साथ लोप हो गये. न वह स्वामी रहा न वे दास रहे. संसारमेंसे धर्मकी ध्वजा उखड़ गई और सब रैयत राजाके राजकी कूक मार मार रोने लगी. ब्राह्मण, भाट, भिखारी, राँड़ दुःखी सब हाय मारकर रोने लगे. कि, हमारा आदर करनेवाला और मान रखनेहारा राजा आज जगत्मेंसे उठ गया. रानियां तो राजाके साथ सती हुईं. और जितने दास दासी थे सो सब अनाथ हो गये. और जितने लोग नौकर, चाकर, सिपाही, शागिर्द पेशः थे सो सब रोते थे. और कहते थे कि, हाय ! हममेंसे कोई काम न आया. इसी तरह महा खलबल राजाके राज भरमें हो रहीथी. तब मंत्रीने राजकुँवर जैतपालको राजतिलक दे गद्दीपर बिठाया. और तमाम मुल्कोंमें राजा जैतपालके नामका ढंढ़ोरा फेर दिया.

जब जैतपाल राजा हुआ तब वह एक दिन इस सिंहासनपर बैठा. इतनेमें मूर्छा आई और मूर्छा आतेही वह बेसुध हुआ और एकदम एक स्वप्न देखा. इस स्वप्नमें राजा बीर बिक्रमादित्यने उसे मना किया कि, इस सिंहासनपर मत बैठे. जो मेरा साहस और दान करे तो इस सिंहासनपर बैठना, इतनेमें राजा जैतपालकी आंख खुलगई और सावधान हो उस सिंहासनसे नीचे उतर बैठा और मंत्रीको बुला अपने स्वप्नका अहवाल कहा वह बोला कि, महाराज ! इस आसनपर बैठना तो आपको उचित नहीं. और एक बात मैं आपसे कहता हूं सो आप कीजिये. कि आज रातको पवित्र हो भूमिमें बिछौना बिछवा और राजाका ध्यान करके कहिये कि, महाराज ! जो जो मुझे आज्ञा हो उसी माफक मैं करूं. यह कामना करके रातको सोइये. इसमें जैसा जबाब कामनाका मिलेगा तैसाही कीजिये. जो दीवाननें कहा सोई राजाने किया. और जब राजा सो गया तब स्वप्नमें जैतपालको राजा बीरबिक्रमादित्यने कहा कि, उज्जैन नगरी और धारा नगरी छोंड़कर अंबावती नगरीमें तुम जाकर अपना राज करो. और इस सिंहासनको यहीं पृथ्वीको सौंपदो. सबेरा होतेही राजा जैतपाल उठा. उठतेही मजूरदारोंको बुला सिंहासनको वहीं गड़वा दिया. और आप अंबावती नगरीमें आकर राज करने लगा. धीरे २ धारा नगरी और उज्जैन नगरी उजड़ उजड़ अंबावती नगरी बसने लगी.

यह पुतलीकी बात सुन राजा भोज पछताय पछताय निराश हो शिर धुनकर उठा और दीवानको बुलाकर बोला कि, जहांसे यह सिंहासन निकालकर आया था वहीं इसे गड़वा दो. यह मंत्रीको आज्ञा दी और आप अपने जीसे राजकाज छोड़ बैठा और मंत्री राज करने लगा. और आप उदास हो एक तीर्थमें तपस्या करनेको गया. और यह खबर सब राजाओंको पहुँची कि राजा भोजने राज त्यागकर बैराग्य लिया. सच है कि, जिस योग्य न हो और उस कामको करे तो उसका कुछ फल नहीं पाता. बल्कि काम अपना बिगाड़े है. और जगत्में हँसी होती है. उन राजाओंकी तो वह रीति थी और अबके राजाओंकी यह चाल है कि, वे प्रजासे दंड लेते हैं. साधु लोगोंको दुःख देते और असाधु लोगोंको पालते हैं. थोड़ेसे राजमें अभिमानी हो जाते हैं. और रैयतसे बे खबर रहते हैं. सच बातको सुनी अनसुनी करते हैं. और झूंठ बातपर दिल लगाते हैं. इसके खातिर ऐसा दुःख पाते हैं. लेकिन् अबभी कोई २ साहब ऐसे हैं कि, जिनके अदल व इन्साफसे तमाम रैयत सुखी रहती है.

इति सिंहासनबत्तीसी समाप्ता.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
पं० हरिप्रसाद भगीरथजी,
कालकादेवीरोड—बंबई.